अध्याय 17

मुगल साम्राज्य का पतन और 18वीं शताब्दी का भारत

अठारहवीं शताब्दी के पूर्व में ही मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो गया था। औरंगजेब की मृत्यु 1707 ई. में हुई। इससे पूर्व अधिकांश भारत पर उसका शासन था। परन्तु 1730 ई. तक मुगलों का प्रभाव केवल दिल्ली शहर और उसके आस–पास तक रह गया था। इलाहाबाद में हुई संधि में मुगल शासक शाह आलम द्वितीय ने अंग्रेजों के प्रभुत्व को मान लिया। इस साम्राज्य का पतन इतने कम समय में होगा, यह एक विचारणीय प्रसंग है।

मुगल साम्राज्य के पतन को समझने के दौरान कई तरह के सवाल उठते हैं। क्या औरंगजेब के उत्तराधिकारी योग्य नहीं थे, जिसके कारण व्यवस्था नहीं चली? क्या मुगल शासन व्यवस्था में कमी थी? जिसके कारण यह साम्राज्य टूट गया?क्या मुगल साम्राज्य में रहने वाले लोगों ने ही मुगल शासन का अंदर से विरोध करके उसे खोखला बना दिया था? क्या ईस्ट इंडिया कंपनी इतनी शक्तिशाली बन चुकी थी, उसकी सेना इतनी सुसज्जित एवं अनुशासित थी कि उन्होंने मुगलों को हरा दिया।

वैसे मुगल साम्राज्य का विघटन इसके पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। औरंगजेब की धार्मिक, राजपूत, मराठा आदि नीतियों ने साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। उसकी मृत्यु के उपरांत पतन की गति तीव्र हो गई। मुगल साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे–

पतन के मुख्य कारण

औरंगजेब की धार्मिक नीति

औरंगजेब की हिन्दू, सिख, शिया मुसलमानों आदि के प्रति अनुदार नीति के परिणाम बहुत घातक सिद्व हुए। इस नीति ने मुगल साम्राज्य को प्राप्त होने वाली हिन्दू शासकों की सहायता को कम कर दिया, जिसके बल पर पूर्व में मुगलों ने अपना साम्राज्य विस्तार किया था। इस नीति के कारण जाट, सतनामियों तथा सिखों ने भी मुगलों का विरोध किया तथा मराठों ने स्थानीय शक्तियों को संगठित कर विशाल साम्राज्य को स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। शिवाजी ने मराठों में राष्ट्रीय भावना इस प्रकार भरी थी कि औरंगजेब अपनी समस्त शक्ति लगा देने पर भी उन्हे दबा नहीं सका। मराठों से प्रेरणा लेकर उत्तर भारत के शासकों ने भी मुगलों का प्रतिरोध किया। पेशवाओं के समय में तो मराठों की शक्ति इतनी बढ गई थी कि उन्होने दिल्ली के मुगल बादशाह को अपने हाथ की कठपुतली बना दिया। मराठों की शक्ति के उद्भव को मुगलों के पतन का प्रमुख कारण माना जाता है। साथ ही आगरा तथा भरतपुर के इलाकों में जाटों ने मुगल सरकार को मानने से इंकार कर दिया। पंजाब में बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया। बंदा बहादुर ने तो अलग से सिक्का भी चलाया था। मुगल शासकों का इतना प्रभाव नहीं था कि इन विद्रोही शासकों को स्वतंत्र होने से रोक पाये।

मुगल शासकों की अयोग्यता

औरंगजेब के बाद के समस्त मुगल शासक निकम्मे और विलासी थे। उनकी अय्याशियों ने उन्हें अकर्मण्य बना दिया। इसी से उनकी वीरता एवं साहस में कमी आई। यह नैतिक पतन उनकी पराजय का कारण बना।

अमीरों (सरदारों) का पतन

शाही परिवार के सदस्यों के साथ–साथ उनके अमीरों का भी पतन हो गया था। वे विलासी जीवन व्यतीत करने लगे थे, और अपने स्वार्थ के लिए आपस में गुटबाजी कर लड़ने लगे थे। अमीर अयोग्य और चरित्रहीन हो गये थे । उन्हें अपने राज्य की किसी भी प्रकार की चिंता नहीं थी।

आर्थिक पतन

शाहजहाँ ने अपनी शान शौकत युक्त तथा खर्चीली इमारतों का निर्माण किया तथा औरंगजेब लम्बे समय तक युद्ध करता रहा, जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई थी। बाद के शासकों के विलासी होने तथा अहमदशाह अब्दाली एवं नादिर शाह की लूटों से मुगलों के खजाने खाली हो गए थे। साथ ही इस लूट के सामान के साथ बहुमूल्य हीरा कोहिनूर एवं तख्ते–ताऊस (मुगलों का मयूर सिंहासन) भी साथ लेकर गया। मुगल साम्राज्य की आर्थिक स्थिति ऐसी बिगड़ गई थी कि एक अवसर ऐसा आया कि मुगलों के शाही भोजन शाला में तीन दिनों तक चूल्हों में आग तक नहीं जली। जब शहजादियाँ भूख सहन न कर सकी तो उन्होंने पर्दा फेंककर बगावत कर दी। बड़ी कठिनाई से उन्हें अपने रनिवास में लौटने के लिये मनाना पड़ा। यह घटना 1755 ई. की हैं। मुगल साम्राज्य में व्याप्त अशांति एवं असुरक्षा के कारण व्यापार में गिरावट आई। इससे राजकीय आय पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। दस्तक प्रणाली से आय में कमी ने राज्य की आर्थिक दशा को और अधिक विकृत कर दिया। इसका ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों ने अनुचित ढंग से उपयोग शुरू किया, जिसने मुगल साम्राज्य को पतन की ओर धकेल दिया।

उत्तराधिकारी नियमों का अभाव

मुगल साम्राज्य में उत्तराधिकार के लिये नियमों का अभाव था। यहां कोई निश्चित नियम नहीं था कि शासक की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र ही शासक बनेगा (गद्दी पर बैठेगा)। इसका निर्णय तलवार के बल पर होता था, इससे राज्य को बहुत हानि पहुँचती थी।

बाह्य आक्रमण

दुर्बल मुगल साम्राज्य के कारण विदेशी आक्रमणकारियों ने स्थिति का लाभ उठाया। अहमदशाह अब्दाली एवं नादिरशाह के आक्रमणों ने साम्राज्य को बहुत हानि पहुँचाई थी। इससे मुगलों की सैनिक शक्ति क्षीण हो गई थी। अवसर का लाभ उठाकर अनेक सूबों के सूबेदार स्वतंत्र हो गये थे।

राष्ट्रीयता का अभाव

मुगल काल में अधिकतर शासक राष्ट्रीय दृष्टिकोण के शासक नहीं हुए। उन्होंने विभिन्न पंथो को मानने वाले लोगों में एकता की भावना का संचार नहीं किया। औरंगजेब हिन्दुओं तथा शिया मुसलमानों से नफरत करता था। यह शासक अपनी प्रजा एवं सूबों के पदाधिकारियों में राष्ट्रीयता की भावना नहीं भर सका।

यूरोपीय जातियों का आगमन

मुगल काल में पुर्तगाली, अंग्रेज, फ्रांसीसी एवं डच समुद्र के मार्ग से भारत में व्यापार करने के लिए आए थे। उन्होंने धीरे–धीरे मुगल साम्राज्य की कमजोरियों का लाभ उठाना आरंभ किया। कुछ समय बाद अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों में, राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के लिए संघर्ष हुआ। जिसमें अपनी सामुद्रिक

शक्ति के बल पर अंग्रेजों ने विजय प्राप्त की। अर्थात् मुगलों के पतन का अंतिम कारण अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी थी, जो भारत में व्यापार के लिए बनी थी। लेकिन अवसर पाकर उसने अपना साम्राज्य स्थापित किया।

गतिविधि–

परिचर्चा करें–मुगल साम्राज्य का पतन किन–किन कारणों से हुआ ?

18वीं सदी का भारत

दक्षिणी भारत में मराठा तथा उत्तरी भारत में सिख एवं जाट शक्ति से हुए संघर्ष ने मुगल साम्राज्य को कमजोर एवं विखण्डित कर दिया। 18 वीं सदी में भारत के विभिन्न भागों में प्रमुख राजनीतिक शक्तियाँ निम्नानुसार थी–

मराठा–मराठा साम्राज्य की स्थापना महाराष्ट्र में शिवाजी ने की थी। शिवाजी एवं उनके उत्तराधिकारियों ने औरंगजेब के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष किया। 18 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में मराठा साम्राज्य में छत्रपति के स्थान पर पेशवा अधिक शक्तिशाली हो गए। पेशवा बाजीराव ने मराठा शक्ति का प्रसार भारत के अन्य प्रान्तों यथा मालवा, गुजरात, बुन्देलखण्ड आदि में कर दिया। बालाजी बाजीराव के समय में मराठों ने भारत के अधिकांश भागों पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। 1752 ई. तक आते–आते मुगल सम्राट व वजीर भी मराठों के नियंत्रण में आ गए। 1761 ई. में पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठा शक्ति को आघात लगा, इसके बावजूद उस समय भारत की सबसे प्रबल शक्ति मराठा ही थे। अंग्रेजों ने मराठों के साथ तीन बार युद्ध करके उनको अपने अधीन कर लिया ।

जाट–मथुरा में जाटों ने गोकुल के नेतृत्व में औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के विरोध में विद्रोह कर दिया। कालान्तर में बदन सिंह के नेतृत्व में जाट साम्राज्य की स्थापना हुई थी। जाटों की शक्ति का विकास महाराजा सूरजमल के नेतृत्व में हुआ। उन्होंने भरतपुर को अपनी राजधानी बनाया। जाटों ने मथुरा, अलीगढ़, दोआब क्षेत्र पर भी अधिकार कर लिया। भरतपुर के शासक रणजीत सिंह ने अंग्रेजों के विरूद्ध मराठा यशवंतराव होल्कर की सहायता की थी। बाद में भरतपुर के शासकों ने अंग्रेजों से संधि कर ली।

हैदराबाद–18 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में मुगलों के मनसबदार निज़ाम चिनकिलिच खाँ ने दक्षिण के छह मुगल सूबों को मिलाकर हैदराबाद राज्य की स्थापना की। निज़ाम पर मुगल सत्ता का प्रभाव नाम मात्र का था। अब वह एक स्वतंत्र शासक बन गया था। उसके साम्राज्य विस्तार की योजना को मराठा पेशवा ने तोड़ दिया। मराठों ने उसे पालखेद के युद्ध में पराजित किया। पराजित होने के बावजूद भी हैदराबाद का निज़ाम शक्तिशाली था। बाद में हैदराबाद के निज़ाम ने अंग्रेजों से सहायक संधि कर ली थी।

अवध–अवध में मुगल सूबेदार सआदत खाँ ने स्वतन्त्र व्यवहार आरम्भ कर दिया। इसने नादिरशाह के आक्रमण के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कालान्तर में अवध का शासक शुजाउद्दौला बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों से हार गया तथा अवध पर भी अंग्रेजों का नियन्त्रण हो गया।

बंगाल–बंगाल राज्य की स्थापना मुर्शीद कुली खाँ ने की थी और बंगाल, बिहार व उड़ीसा के क्षेत्र

पर अपना अधिकार कायम कर लिया। उसके उत्तराधिकारियों के शासन काल में मराठों ने बंगाल से उड़ीसा को छीन लिया। 1757 ई. में हुए प्लासी के युद्ध में अंग्रेज सेनापति क्लाइव ने सिराजुद्दौला को पराजित कर बंगाल में अंग्रेजी साम्राज्य की नींव डाली।

मैसूर—मैसूर पर वाडियार वंश के राजाओं का राज्य था। 18वीं सदी के मध्य काल में उसके सेनापति हैदरअली ने उस पर अधिकार कर लिया। हैदरअली और उसके पुत्र टीपू सुल्तान का अंग्रेजों से निरन्तर संघर्ष हुआ। चार युद्धों के पश्चात् 18 वीं सदी के अन्तिम दशक में अंग्रेजों ने मैसूर पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

18वीं सदी में राजस्थान के राजपूत राज्य

उत्तरकालीन मुगल साम्राज्य की कमजोरी का लाभ उठाकर राजपूत शासकों ने भी अपना प्रभाव बढ़ाना आरम्भ किया किन्तु ये राज्य गृह युद्ध में उलझ गये एवं मराठों की विस्तारवादी नीति ने स्थिति को और बिगाड़ दिया।

आमेर (जयपुर)—18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में जयपुर के सवाई जयसिंह ने मालवा की सूबेदारी प्राप्त की थी। सवाई जयसिंह के द्वारा बून्दी के उत्तराधिकार युद्ध में हस्तक्षेप करने के कारण मराठों का राजस्थान में प्रवेश हुआ। मराठों के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए सवाई जयसिंह एवं अन्य शासकों ने 1734 ई. में राजपूत राजाओं का हुरडा नामक स्थान पर एक सम्मेलन बुलाया। उन्होंने हुरडा सम्मेलन के द्वारा राजपूतों की एकता का प्रयास किया था। जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ईश्वर सिंह व माधोसिंह में संघर्ष हुआ। बाद के सभी शासकों को मराठों के आक्रमण भी झेलने पड़े। जयपुर राज्य की अन्तिम प्रमुख सफलता सवाई प्रतापसिंह द्वारा तुंगा के युद्ध में मराठों को पराजित करना था।

जोधपुर—जोधपुर के अजीत सिंह ने जोधपुर को मुगलों से छीन लिया और उस पर अपना अधिकार कर लिया। बाद में मुगल दरबार में अपना प्रभाव बढाया व गुजरात का सूबेदार बना। मुगल सम्राट फर्रुखसियर को गद्दी से हटाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसके पश्चात् उत्तरवर्ती शासकों में राजगद्दी को लेकर गृह युद्ध हुए।

मेवाड़—मेवाड़ के शासक अमरसिंह द्वितीय ने जयसिंह को आमेर व अजीत सिंह को जोधपुर प्राप्त कराने में मदद की । कालान्तर में यह राज्य भी आपसी गृहयुद्ध में उलझ गया।

इस प्रकार 18वीं सदी में भारत में राजनीतिक अव्यवस्था व्याप्त हो गई। मुगल साम्राज्य कमजोर हो गया था। उसके स्थान को भरने की क्षमता मराठा शासकों में थी, किन्तु उन्होंने मात्र चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल करने पर ही अपना ध्यान दिया। उन्होंने उत्तरी भारत के राजपूत राज्यों से अच्छे सम्बन्ध विकसित नहीं किए। परिणामस्वरूप पानीपत के तृतीय युद्ध में उन्हें अहमदशाह अब्दाली के विरूद्ध राजपूतों तथा अन्य भारतीयों की शक्तियों का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। जिससे मराठों को इस युद्ध में पराजित होना पड़ा। राजपूत शासक भी अपने गृहयुद्धों के कारण अपनी शक्ति का विस्तार नहीं कर पाए। भारतीय शासकों की इस कमजोरी का लाभ अंग्रेजों ने उठाया और उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

18वीं सदी में समाज व संस्कृति

भारतीय समाज में हिन्दू व मुस्लिम निवास करते थे। इनमें समान रीति रिवाज प्रचलित थे। जातियाँ

व्यवसाय पर आधारित थी तथा समाज में दो वर्ग थे। अमीर वर्ग और जनसाधारण। भारतीय व्यवसाय उन्नत अवस्था में था। बंगाल एवं दक्षिण भारत के वस्त्र सम्पूर्ण दुनिया में प्रसिद्ध थे। भारतीय माल की माँग विदेशी बाजारों में भी बहुत अधिक थी, किन्तु 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजी नीतियों ने भारतीय व्यापार को प्रभावित किया।

मुगल साम्राज्य के कमजोर होने से कलाकारों ने क्षेत्रीय राज्यों की ओर रुख किया । परिणामस्वरूप देश के विभिन्न हिस्सों में कला का विस्तार तीव्र गति से हुआ। कांगडा व राजपूत चित्रकला शैलियों में नई विशेषताएँ आईं। राजस्थान में इसी काल में जाट शासकों ने डीग के महल बनवाए। सवाई जयसिंह ने जयपुर शहर बसाया एवं भारत में पाँच स्थानों पर वेधशालाएँ (जन्तर–मन्तर) बनवाई। सवाई प्रतापसिंह ने जयपुर में हवामहल का निर्माण करवाया। प्रताप सिंह के दरबार में ही राधा–गोविन्द संगीत सार जैसा ग्रन्थ लिखा गया। इसके दरबार में 'गन्धर्व बाईसी' जैसे विद्वान् रहते थे। इसी काल में पंजाब में हीर–राँझा लिखा गया। भारत की अन्य भाषाओं में भी कई ग्रन्थों का निर्माण हुआ।

शब्दावली

दस्तक	–	आज्ञापत्र
चौथ	–	मराठों द्वारा अन्य शासकों से लिया जाने वाला सुरक्षा कर
सरदेशमुखी	–	मराठा क्षेत्र के शासकों से लिया जाने वाला कर

अभ्यास प्रश्न

1. मराठों में सर्वप्रथम राष्ट्रीय भावना को किस शासक ने भरा था?
2. यशवंतराव होल्कर की सहायता राजस्थान के किस शासक ने की थी?
3. गन्धर्व बाईसी किसके दरबार में रहते थे?
4. मुगलों में उत्तराधिकार किस प्रकार प्राप्त होता था?
5. 18 वीं सदी में मराठों की दशा का वर्णन कीजिए।
6. सवाई जयसिंह की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।
7. किन–किन मुगल सूबेदारों ने स्वतंत्र राज्यों की नींव डाली? किन्हीं तीन के नाम लिखिए।
8. हुरडा सम्मेलन कब आयोजित हुआ था एवं इसके उद्देश्य क्या थे?
9. मुगल साम्राज्य के पतन के किन्हीं चार कारणों का वर्णन कीजिए।
10. 18 वीं सदी में किन्हीं तीन राजपूत रियासतों की राजनैतिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

गतिविधियाँ–

1. 18 वीं सदी के प्रमुख नायकों के चित्रों का संकलन कीजिए।
2. भारत के मानचित्र में 18 वीं सदी के प्रमुख राज्यों को दर्शाइए।
3. विद्यार्थियों को राजा, सामन्त, सेनापति आदि बनाकर किसी प्रेरणादायी नाटक का मंचन करें।

अध्याय 18

1857 का स्वतंत्रता संग्राम

1757 ई. में प्लासी के युद्ध में विजय प्राप्त करके अंग्रेजों ने बंगाल में अपने साम्राज्य की नींव डाली। धीरे–धीरे अंग्रेजों ने सम्पूर्ण भारत पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया। भारत पर अधिकार करने के लिए अंग्रेजों ने छल–कपट का प्रयोग किया। भारतीयों की आपसी फूट का फायदा भी उठाया। इस दौरान अंग्रेजों के अत्याचारों और विश्वासघात से पीड़ित होकर भारतीयों ने कई स्थानों पर उनके विरूद्ध संघर्ष किया। जैसे बंगाल में सन्यासियों ने विद्रोह किया, महाराष्ट्र में रामोसी जाति ने तथा पूरे देश में विभिन्न जनजातियों और अंग्रेज सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों ने भी समय–समय पर संघर्ष किया। किन्तु ये सारे प्रयास स्थानीय स्तर पर हुए और अलग–अलग समय पर हुए । अतः यह व्यापक रूप धारण नहीं कर पाए व असफल रहे। अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध सबसे बड़ी और देशव्यापी क्रांति 1857 ई. में हुई थी । इस क्रान्ति को जनता का भी समर्थन प्राप्त था। अतः इसे देश का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता हैं। 1857 ई. में हुई यह क्रांति किसी एक घटना या कारण का परिणाम नहीं थी बल्कि विगत सौ वर्षों में अंग्रेजों ने भारत के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन में जो अनुचित हस्तक्षेप किए थे उनके विरूद्ध भारतीय जनमानस की प्रतिक्रिया थी। इस स्वतंत्रता संग्राम के होने के निम्नांकित कारण रहे :–

संग्राम के कारण

राजनीतिक कारण

क्लाइव ने अपनी कूटनीति से ईस्ट इण्डिया कंपनी को, जो एक व्यापारिक संस्था थी, राजनीतिक संस्था बना दिया। वेलेजली और हेस्टिंग्स ने अंग्रेजी राज्य में अनुचित ढंग से राज्य वृद्धि के प्रयास किए। कालांतर में डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार के लिए एक नयी नीति बनाई। जिन देशी राजाओं के कोई अपनी संतान नहीं थी, उनके राज्यों को अंग्रेजी राज्य में मिलाना शुरु कर दिया। हिन्दुओं में गोद लेने की प्रथा रही

है। पुत्र नहीं होने की स्थिति में राजा लोग अपनी रिश्तेदारी या बिरादरी में से किसी लड़के को अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए गोद लेते थे। राजा के मरने के बाद वही लड़का राज्य का स्वामी होता था। डलहौजी ने इस प्रथा को अमान्य कर दिया। उसकी यह नीति 'गोद–निषेध' नीति कहलाई। इस नीति का प्रभाव अनेक राज्यों पर पड़ा, जिनमें सम्बलपुर, जेतपुर,सतारा, नागपुर, बिठूर और झांसी मुख्य थे।

सैद्धांतिक रूप से मुगल सम्राट अब भी भारत का बादशाह था, परन्तु उसका अपमान किया गया। सिक्कों पर उसके नाम के बजाय इंग्लैंड के राजा का नाम उत्कीर्ण करवाया गया। इसी प्रकार पूर्व में मराठा पेशवा से उसका साम्राज्य छीनकर उसे पेंशन दे दी गई। कालांतर में उसके पुत्र व नवीन पेशवा नानासाहब की पेंशन भी बंद कर दी गई। इससे भारतीय जनमानस में रोष व्याप्त हो गया।

अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति से भारत के शासक चिंतित हो गए थे। अंग्रेजों ने साम्राज्य विस्तार के दौरान भारतीय शासकों से संधियाँ की व उनसे वादा किया था कि अंग्रेज उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। किन्तु अंग्रेजों ने पॉलिटिकल एजेंटों के माध्यम से देशी शासकों के राज्यों में निरंतर हस्तक्षेप किए तथा बाद में प्रशासनिक अव्यवस्था के नाम पर कुछ क्षेत्रों को हड़प लिया, जैसे अवध का राज्य।

शासकों के अतिरिक्त सामंत वर्ग भी अंग्रेजों से नाराज था। यहाँ का सामंत वर्ग अपनी जनता से कर वसूल करता था तथा राजा को देता था। युद्ध के समय राजा को सैनिक शक्ति प्रदान करता था। अतः दरबार में सामन्तों का सम्मान था। किन्तु सहायक संधियों के बाद शासकों की सामंतों पर से निर्भरता खत्म हो चुकी थी व राजाओं ने सामन्तों के अधिकारों में कटौती कर दी। सामन्त इस का कारण अंग्रेजी शासन को मानते थे, जैसे मेवाड़ के सामन्त विशेषतया रावत केसरी सिंह (सलूम्बर) महाराणा के दुर्व्यवहार को अंग्रेजों की शह मानते थे। जोधपुर में ठाकुर अजीत सिंह (आलणियावास) पॉलिटिकल एजेण्ट से अत्यन्त नाखुश था। जयपुर में दीवान झूँथाराम ने अंग्रेजी समर्थन के बल पर जागीरदारों को उनके पैतृक अधिकारों से वंचित कर देने पर बाध्य किया। जोधपुर में आहुवा, आसोप, गुलर, आलणियावास के सामन्त शासक से नाराज थे और अपनी शक्तिहीनता का कारण अंग्रेजों को मानते थे। शासकों और सामंतों की निर्णय लेने की स्वतन्त्रता भी कंपनी शासन में खत्म हो गई थी।

सामाजिक व धार्मिक कारण

सामाजिक सुधार के नाम पर भारतीयों के जीवन में अंग्रेजों ने हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था। इसकी भारतीयों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। इसके अतिरिक्त अंग्रेज, भारतीय नागरिकों के साथ अपमानजनक व्यवहार करते थे। एक सामान्य अंग्रेज भी बड़े से बड़े भारतीय का अपमान कर देता था। भारतीय रीति रिवाजों का मजाक उड़ाया गया। भारतीयों को उच्च पदों पर नियुक्त नहीं किया जाता था। इससे भारतीय समाज में नाराजगी थी। धार्मिक क्षेत्र में सरकार ने ईसाई धर्म के प्रचार की छूट दे दी, जिससे ईसाई मिशनरियों ने समाज के कमजोर वर्ग को धर्म परिवर्तन करवाने का कार्य आरम्भ कर दिया। भारतीय देवी–देवताओं व पूजा विधियों की खिल्लियाँ उड़ाई जाने लगी। जेल में कैदियों को ईसाई धर्म स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाता था। ईसाई धर्म स्वीकार करने पर उनकी सजा में कमी कर दी जाती तथा अन्य कैदियों की तुलना में ज्यादा सुविधाएँ दी जाती थी। ईसाई बनने वालों को सरकारी नौकरी में ऊँचे पदों पर बिठाया जाता था। इस नीति ने भारतीय समाज के मन में अंग्रेजों के विरूद्ध घोर विद्रोह पैदा कर दिया।

आर्थिक कारण

कम्पनी के शासन के पूर्व भारत एक कृषि एवं उद्योग प्रधान देश था। इसकी आर्थिक सम्पन्नता के कारण इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था तथा यह विश्व के व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। अंग्रेजों ने सत्ता प्राप्ति के बाद इसका बेरहमी से शोषण किया।

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व बंगाल एक समृद्ध प्रांत था। किन्तु अंग्रेजों ने उसे इस कदर लूटा कि वहाँ भूखमरी व्याप्त हो गई। लाखों लोग अकाल में मारे गए। बंगाल के मैदानों में भारतीय किसानों व दस्तकारों की हड्डियों के ढ़ेर लग गए। अंग्रेजों ने किसानों से इतना अधिक भू–राजस्व वसूला कि किसान खेती छोड़ने को बाध्य हो गए व कई पुराने जमींदार लगान न दे पाने के कारण जमींदारी खो बैठे।

अंग्रेजों ने इंग्लैण्ड में बने माल को भारत में खपाने के लिए भारतीय वस्त्रों पर भारी कर लगाया और दस्तकारों पर अत्याचार किया, जिससे उन्होंने अपना पुश्तैनी कार्य त्याग दिया।

राजस्थान में भी अंग्रेजों ने शासकों से भारी मात्रा में खराज वसूल करना शुरू कर दिया व आर्थिक संसाधनों पर भी अंग्रेज नियन्त्रण करने लगे। अंग्रेजों ने अफीम व नमक के व्यापार पर अधिकार जमा लिया। उन्होंने बकाया खराज के नाम पर जयपुर व जोधपुर से उनके नमक उत्पादन के स्रोत छीन लिए। समस्त रियासतों से समझौता कर नमक पर चुंगी लागू कर दी, जिससे जनता में भारी रोष फैला, जिसकी अभिव्यक्ति तत्कालीन प्रचलित लोकगीत में देखी जा सकती है–

म्हारो राजा तो भोलो भालो, सांभर तो दे दीनी इंगरेज ने।
पण म्हारा टाबर तो भूखा, रोटी मांगे तीखे लूण री।।

ठीक इसी प्रकार हाड़ौती (दक्षिणी राजपूताना) में अफीम की पैदावार पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए बंगाली अफीम के मुकाबले यहाँ अफीम को नियंत्रित करने हेतु भारी कर लगाए, जिससे यहाँ के किसानों एवं व्यापारियों को भारी नुकसान हुआ। इससे यहाँ भारी मात्रा में तस्करी बढ़ी व खाद्यान्न संकट पैदा हो गया। सम्पूर्ण राजपूताने में नमक से अंग्रेजों ने भारी मुनाफा कमाया। राजपूताने के अन्य सम्बन्धित उद्योग धंधे नष्ट हो गए।

सैनिक कारण

अंग्रेजों की सेना में अधिकांश अवध के सैनिक थे। अवध को अंग्रेजी राज्य में मिलाने के बाद इन सैनिकों के मनोबल को बड़ा धक्का लगा। उनके मन में विद्रोह के अंकुर प्रस्फुटित होने लगे। कई सैनिक अपनी परम्पराओं के अनुसार रहन–सहन व खान–पान रखना चाहते थे। वे बाल–दाढ़ी रखते व पगड़ी या साफा बांधते थे। अंग्रेजों ने इस पर पाबंदी लगा दी, जिसे सैनिकों ने अपना घोर अपमान समझा। भारतीय सैनिकों को मान्य परम्पराओं के विरुद्ध बाह्य देशों में भेजा जाने लगा। इससे अंग्रेजों के प्रति उनकी नाराजगी बढ़ गई। भारतीय सैनिकों को वेतन भी कम मिलता था। उन्हें वर्दी के पैसे भी स्वयं को देने पड़ते थे। डाक द्वारा उनका निःशुल्क पत्र व्यवहार भी बंद कर दिया गया। सैनिकों में असंतोष का सबसे जबरदस्त कारण कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी का होना था, जिन्हें काम लेने से पहले दांतों से काटना पड़ता था। इन सभी कारणों से सेना में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह करने की भावना पैदा हो गई।

जन कवियों एवं साहित्यकारों की भूमिका

अंग्रेजों के हाथों अपनी सत्ता गंवाना सभी को खल रहा था। राजपूताना का जनमानस स्वाभिमानी एवं स्वतंत्रता प्रेमी था। यहाँ के साहित्यकार और कवि भी समाज एवं शासकों को स्वातंत्र्य प्रेम तथा बलिदान करने के लिये बढ़ चढ़कर प्रेरित करते रहे।

अंग्रेजों से संधियों के बाद राजपूताने में अंग्रेजों की उपस्थिति मात्र से साहित्यकार उद्वेलित एवं व्यथित थे। जोधपुर के बाँकीदास, बून्दी के सूरजमल मिसण, आढ़ा जवानजी, बारहठ दुर्गादत्त, आढ़ा जादूराम, आसिया बुधजी, गोपालदान दधिवाड़िया आदि न जाने कितने ही साहित्यकार थे, जिन्होंने अंग्रेजों की घोर निन्दा की। अपनी जनता एवं शासकों को उनके विरूद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित किया। राजा से लेकर रंक तक ने अंग्रेजों के खिलाफ संग्राम के बीज बोने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

जैसा कि कवि बांकीदास ने लिखा–

आयो इंगरेज मुलक रे ऊपर, आहंस लीधा खेंचि उरा।
धणियां मरे न दीधी धरती, धाणियां ऊभां गई धरा।

अर्थात् अंग्रेज भारत में आये और उन्होंने हमारी सांसो तक पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया अर्थात प्रत्येक क्षेत्र में अधिकार कर लिया। पहले स्वामी मर जाते थे परन्तु मातृभूमि को पराधीन नहीं होने देते थे, किन्तु खेद है कि अब स्वामियों के जीवित होते हुए भी मातृभूमि पराधीन हो गई है।

गतिविधि :–

राजस्थानी लोक कवियों द्वारा 1857 पर लिखी गई कुछ अन्य रचनाओं का संकलन कीजिए।

सूरजमल मिसण ने पीपल्या के ठाकुर फूलसिंह को वि.सं. 1914 को पत्र लिखते हुए राजाओं को लताड़ा– ''ये राजा लोग देश पात जमीं का ठाकर छे, जे सारा ही हिमालय का गलयाई नीसरया। सो चालीस से लैर साठ सत्तर बरस तांई पांछा पटक्या छै तो भी गुलामी करै छै। पर यो म्हारो वचन राज याद राखोगा। क जे अब के अंगरेज रह्यो तो इंको ही पूरौ कर सी। जमीं को ठाकुर कोई भी न रहसी। सब ईसाई हो जा सी। तीसो दूरन्देशी फायदो कोई कै भी नहीं..... ।''

अंग्रेजों की छावणियाँ लूटने वाले डूँगजी एवं जवाहर जी की प्रशंसा में लोक गीत रचे गए। बीकानेर के शासक की तारीफ कवियों ने की, क्योंकि उन्होंने जवाहर जी को अंग्रेजों को सौंपने से मना कर दिया। जोधपुर के शासक पर व्यंग्य इसलिये करते, क्योंकि उन्होंने डूँगजी को अंग्रेजों को दे दिया था।

उपरोक्त विवरणों से ज्ञात होता है कि राजपूताने के साहित्यकारों ने शासकों, सामन्तों एवं जनता को प्रेरित कर 1857 के संग्राम के लिए बारूद तैयार किया। इस संग्राम की लहर पूरे देश में फैल गई। जगह–जगह भारतीय सैनिकों, सामंतों व शासकों के साथ जनता ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था। तो फिर राजपूताना पीछे क्यों रहने वाला था ?

क्रांति का विस्फोट और उसका प्रसार

रानी लक्ष्मीबाई

तांत्या टोपे

मंगल पाण्डे

क्रांति की योजना नानासाहब पेशवा और उनके सहयोगी अजीमुल्ला तथा रंगोजी बापू ने मुख्य रूप से तैयार की थी। मुगल बादशाह बहादुरशाह के नेतृत्व में 31 मई 1857 ई. के दिन समूचे भारत में एक साथ क्रांति शुरू करनी थी। इसके लिए लाल किले में गुप्त बैठकें हुईं। क्रांति के संदेशवाहकों ने विभिन्न रूपों में देश के विभिन्न भागों में क्रांति के प्रतीक चिह्न 'कमल का फूल' और 'चपाती' (रोटी) को घुमाया। 31 मई को सभी जगह एक साथ क्रांति का श्रीगणेश करना था। परन्तु चर्बी वाले कारतूसों से उत्पन्न आक्रोश ने सारी योजना छिन्न–भिन्न कर दी। क्रांति 31 मई से पूर्व ही अधूरी तैयारी में आरंभ हो गई। 29 मार्च को बैरकपुर की छावनी में सैनिकों को चर्बी चढ़े कारतूस वितरित किए गए। उन्होंने उसे दाँतों से काटने से मना कर दिया। अंग्रेज अधिकारियों ने उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयास किया। तब तक मंगल पाण्डे नामक एक सैनिक ने अपनी बंदूक तानकर वहाँ उपस्थित दोनों अधिकारियों को ढेर कर दिया। पाण्डे पकड़ा गया और उसे 8 अप्रेल को फाँसी दे दी गई। मेरठ में एक भारतीय पलटन को चर्बी वाले कारतूस दिए गए। सैनिकों ने उनका उपयोग करने से मना कर दिया। उन सबको गिरफ्तार कर लिया गया। इससे सैनिकों में असंतोष फैल गया। यह घटना 9 मई को घटित हुई थी। क्रांति के नेताओं ने क्रुद्ध सैनिकों को समझा बुझाकर 31 मई तक प्रतीक्षा करने को कहा मगर अगले दिन ही सैनिकों ने विद्रोह कर अपने गिरफ्तार साथियों को रिहा करवा दिया। कई अंग्रेज अधिकारी मार डाले गए। सैनिकों ने दिल्ली की ओर कूच किया। 11 मई को दिल्ली पर अधिकार जमाकर बहादुरशाह को सम्राट घोषित कर दिया।

इसी के साथ धीरे–धीरे क्रांति की ज्वाला भारत के अन्य हिस्सों में फैल गई। कानपुर में नानासाहब व तांत्या टोपे ने क्रांति का नेतृत्व किया। उन्होंने कानपुर पर अधिकार कर लिया। अवध में बेगम हजरत महल के नेतृत्व में अवध की जनता ने संघर्ष आरंभ कर दिया। इसी प्रकार झांसी में रानी लक्ष्मीबाई, बिहार में बाबू कुँवर सिंह, असम में दीवान मणिराम व कंदर्पेश्वर सिंह, उड़ीसा में सुरेन्द्र शाही व उज्ज्वल शाही ने क्रांति का नेतृत्व किया।

उस समय भारत का गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग था। उसने मद्रास, बंबई, बर्मा व लंका से सेनाओं को बुला लिया। पंजाब की सिख सेना व नेपाल की गोरखा सेना ने भी अंग्रेजों का साथ दिया। सेनापति जनरल नील ने बनारस और इलाहाबाद को क्रांतिकारियों से मुक्त करवाया। नाना साहब की सेना भी कानपुर में पराजित हो गई। अंग्रेजों ने दिल्ली पर अधिकार कर बहादुरशाह को कैद कर लिया। उसके दो बेटे गोलियों से भून दिए गए तथा बादशाह को कैद कर रंगून की जेल में भेज दिया। लेकिन तांत्या टोपे और लक्ष्मीबाई ने जमकर अंग्रेजों से लोहा लिया। कुछ विश्वासघातकों ने झांसी के किले के फाटक खोल दिए किन्तु रानी वहाँ से दुश्मनों की सेना को चीरती हुई बच निकली और कालपी पहुँची। वहाँ तात्या टोपे भी आ

पहुँचा। दोनों ने ग्वालियर पर आक्रमण किया। ग्वालियर को अंग्रेजी सेना ने घेर लिया। रानी वहाँ से बच निकली पर एक स्थान पर शत्रु सेना द्वारा घेर ली गई। अब बच निकलने का कोई उपाय न देखकर वह शत्रु सेना में प्रलय मचाती हुई अंत में वीरगति को प्राप्त हुई। तांत्या टोपे अब अकेला रह गया लेकिन वह शत्रुओं की निगाहों से बचता हुआ जगह–जगह अंग्रेजों की नींद हराम करता रहा। अंत में विश्वासघातकों के कारण वह भी पकड़ा गया और अंग्रेजों ने उसे फांसी दे दी। इस तरह मंगल पांडे, तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई आदि भारत माँ के सपूत स्वतन्त्रता संग्राम की पहली लड़ाई में शहादत को प्राप्त हुए।

राजस्थान का 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान

भारतीय क्रांति का प्रभाव राजस्थान पर भी पड़ा। राजस्थान में उस समय नसीराबाद, ब्यावर, खेरवाड़ा, देवली, एरिनपुरा और नीमच में अंग्रेजों की सैनिक छावनियाँ थी तथा अजमेर में अंग्रेजों का ए.जी.जी. बैठता था जो राजस्थान के शासकों पर नियन्त्रण रखता था।

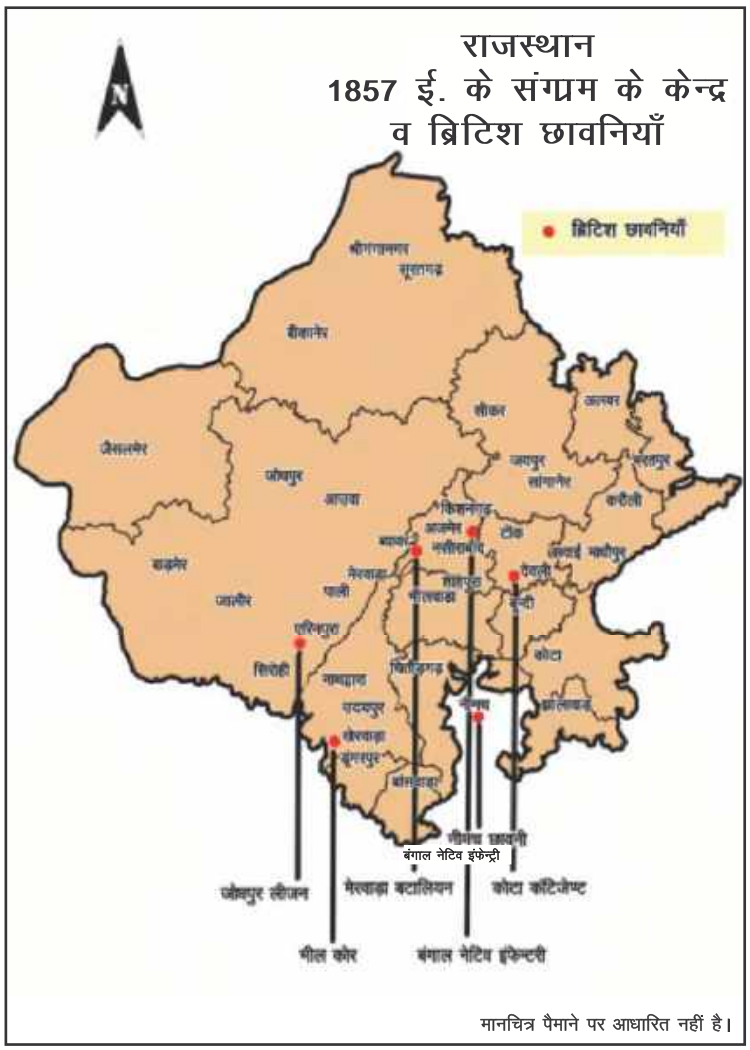

राजस्थान में क्रांति की शुरूआत नसीराबाद से हुई। 28 मई को नसीराबाद में तैनात पन्द्रहवीं नेटिव बंगाल इनफैंट्री के सैनिकों ने अपने अधिकारियों पर हमला कर दिया। सैनिक दिल्ली की ओर रवाना हो गए जहाँ वे क्रांतिकारियों का साथ देना चाहते थे।

नीमच में मोहम्मद अली बेग नामक सैनिक ने कर्नल अबॉर्ट को चुनौती दी व 3 जून को नीमच में भी क्रांति हो गई । अंग्रेजों ने भाग कर उदयपुर में शरण ली। कप्तान शॉवर्स मेवाड़ की सेना लेकर नीमच आया। तब तक क्रांतिकारी वहाँ से दिल्ली के लिए रवाना हो चुके थे। इन क्रांतिकारी सैनिकों के शाहपुरा पहुंचने पर वहां के शासक ने स्वागत किया तथा उसने पीछा करने वाले अंग्रेजों के लिए अपने किले के दरवाजे नहीं खोले। वहां से नीमच के सैनिक भी दिल्ली की ओर रवाना हो गए।

21 अगस्त 1857 को एरिनपुरा छावनी में तैनात एक टुकड़ी ने आबू में अंग्रजों का विरोध कर दिया एवं वहाँ अंग्रेज अधिकारियों पर हमले किए। एरिनपुरा आकर सैनिकों ने छावनी को लूटा। ''चलो दिल्ली मारो फिरंगी'' का नारा लगाते हुए वे दिल्ली की ओर बढ़े।

एरिनपुरा के सैनिकों की भेंट 'खेरवा' नामक स्थान पर आउवा (पाली) के ठाकुर कुशालसिंह से हुई।

कुशालसिंह जोधपुर महाराजा व अंग्रेजों से असंतुष्ट थे। उसने सैनिकों का नेतृत्व संभाल लिया। कुशालसिंह के आह्वान पर आसोप, आलनियावास व गुलर के सामन्त अपनी सेनाओं सहित आउवा आ पहुँचे। खेजड़ला (मारवाड़) तथा मेवाड़ के सलूम्बर, रूपनगर, लहसानी आदि के सामन्तों ने भी अपने सेनाएँ उनकी सहायता हेतु भेज दी। जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह ने सैनिक विरोध के समाचार मिलते ही अपनी राजकीय सेना क्रान्तिकारी सैनिको के विरूद्ध आउवा भेजी। कुशालसिंह की सेना ने 8 सितम्बर 1857 को 'बिथोड़ा' नामक स्थान पर जोधपुर राज्य की सेना को बुरी तरह परास्त किया। इस पराजय की खबर सुनकर ए.जी.जी. जार्ज लोरेन्स स्वयं सेना लेकर आउवा पहुँचा, किन्तु 18 सितम्बर 1857 को वह भी पराजित हुआ। जोधपुर का पॉलीटिकल एजेन्ट मेकमोंसन क्रांतिकारियों द्वारा मारा गया। उसका सिर आउवा के किले के द्वार पर लटका दिया गया। लोरेन्स पुनः अजमेर लौट गया। इधर अक्टूबर 1857 में जोधपुर लिजियन के क्रांतिकारी सैनिक भी दिल्ली की ओर बढ़े।

कुशालसिंह

जनवरी 1858 में होम्स के नेतृत्व में एक सेना ने आउवा पर आक्रमण कर दिया। ठाकुर कुशालसिंह ने सलूम्बर के सामन्त के यहाँ शरण ली। अंग्रेजों ने आउवा के किलेदार को रिश्वत देकर किले के द्वार खुलवा

आउवा के किले का द्वार जहां मेक मोंसन का सिर काटकर लटका दिया गया

दिए एवं किले पर अधिकार कर लिया। आउवा के निवासियों पर अमानवीय अत्याचार किए गए। 1860 में नीमच में कुशालसिंह ने अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उस पर मुकदमा चलाया गया, जिसमें बाद में उसे बरी कर दिया गया।

राजस्थान में क्रांति के प्रमुख केन्द्रों में आउवा के अतिरिक्त कोटा भी था।कोटा का महाराव रामसिंह अंग्रेजों का समर्थक था, किन्तु वह व्याप्त जन असंतोष के कारण सैनिकों पर कोई कार्यवाही न कर सका। मेजर बर्टन ने महाराव को सैनिकों पर कार्यवाही के लिए दबाव डाला। इस पर 15 अक्टूबर 1857 को कोटा की सेना में नाराजगी भड़क उठी। नाराज सैनिकों ने रेजीडेन्सी पर आक्रमण कर मेजर बर्टन का सिर काटकर पूरे कोटा शहर में घुमाया। राज्य के समस्त प्रशासन पर सैनिकों का नियंत्रण हो गया।

कोटा महाराव की स्थिति अपने ही महल में कैदी के तुल्य हो गई। जयदयाल एवं मेहराब खाँ के नेतृत्व में क्रांतिकारियों का लगभग 6 माह तक कोटा के प्रशासन पर नियंत्रण रहा। मार्च 1858 में जनरल राबर्ट्स के नेतृत्व वाली सेना ने कोटा शहर को क्रांतिकारियों से मुक्त कराया। जयदयाल एवं मेहराब खाँ व अन्य को सरे आम फाँसी दी गई।

इसके अतिरिक्त धौलपुर राज्य की सेना व भरतपुर की जनता में भी विरोधी तेवर देखे गए, यद्यपि वहां के शासकों ने ब्रिटिश भक्ति दर्शाई।

राजपूताने में कुछ सामन्तों ने आउवा के ठाकुर कुशालसिंह के नेतृत्व को स्वीकार करके ब्रिटिश विरोध की नीति अपनाई। क्रांतिकारियों को प्रायः प्रत्येक स्थान पर स्थानीय कृषकों, जनसामान्य, हिन्दू–मुस्लिम दोनों समुदायों का पर्याप्त समर्थन मिला, किन्तु देशी रियासती शासकों ने अंग्रेजों का भरपूर समर्थन किया। वे अंग्रेजों के वफादार रहे। उन्होंने अंग्रेजों को शरण एवं सैनिक सहायता प्रदान की। बीकानेर का शासक तो स्वयं अपनी सेना के साथ अंग्रेजों की सहायतार्थ राज्य के बाहर भी गया। राजाओं के सहयोग के बारे में तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग ने कहा ''इन्होंने तूफान में तरंग अवरोध का कार्य नहीं किया होता तो, हमारी कश्ती बह जाती।''

1857 के स्वतंत्रता के संग्राम के पूर्व सीकर क्षेत्र में डूँगजी व जवाहर जी नामक काका–भतीजा प्रसिद्ध सेनानी रहे। इन्होंने अंग्रेजों की बीकानेर व जोधपुर की सेना से संघर्ष किया।

डूँगजी व जवाहर जी

सुगाली माता

अपने बलिदान के कारण ये लोग गीतों में अमर हो गए। राजपूताने का ही निवासी व्यापारी अमरचन्द बांठिया अपने त्याग व बलिदान के लिए दूसरे भामाशाह के रूप में प्रसिद्ध है। इसने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति तांत्या टोपे को देने का प्रस्ताव रखा, ताकि अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष चलाया जा सके।

राजस्थान व भारत में क्रान्ति के दौरान एक बात यह रही कि क्रांतिकारी सैनिक अपनी छावनियों में विद्रोह करने के बाद दिल्ली की ओर बढ़े। दिल्ली पहुँचने पर वे लक्ष्यविहीन हो गए। उनकी एकता भी खंडित हो गई। इसके विपरीत जैसे–जैसे नाराज सैनिक दिल्ली की ओर बढ़े अंग्रेजों ने उनकी अनुपस्थिति में वहाँ पर पुनः अपना नियंत्रण कायम कर लिया। फलतः क्रांतिकारियों को स्थायी सफलता नहीं मिल पाई। देशी रियासती शासकों की ब्रिटिश स्वामी भक्ति के कारण अंग्रेजों ने अत्यन्त कड़ाई से क्रांति को दबा लिया। जून 1858 तक अंग्रेजों का अधिकांश स्थानों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया।

आउवा की कुलदेवी सुगाली माता पूरे मारवाड़ क्षेत्र में आराध्य देवी रही है। इस देवी प्रतिमा के दस सिर और चौवन हाथ है। यह देवी प्रतिमा 1857 के स्वंतत्रता संग्राम में सेनानियों की प्रेरणा स्रोत रही है। कहा जाता है कि स्वाधीनता सेनानी अपनी गतिविधियाँ इस देवी के दर्शन कर प्रारंभ करते थे।

1857 के क्रांति के परिणाम एवं इसके विश्वव्यापी प्रभाव

यद्यपि 1857 का स्वतंत्रता संग्राम असफल रहा, पर इसके परिणाम दूरगामी रहे। रियासती शासकों ने क्रांति के समय स्वामिभक्ति निभाते हुए अंग्रेजों का तन–मन–धन से सहयोग किया था। इसके लिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें पुरस्कृत किया। गोद–निषेध का सिद्धान्त समाप्त कर राजाओं को गोद लेने की अनुमति दी गई। भारत कम्पनी के शासन के स्थान पर ब्रिटिश क्राउन के सीधे नियंत्रण में आ गया। रानी विक्टोरिया ने अपने घोषणा पत्र (1858 ई.) में आश्वासन दिया कि सभी देशी राजाओं का अस्तित्व बना रहेगा।

जागीदार वर्ग ने विद्रोह के दौरान अंग्रेज विरोधी भूमिका निभाई थी । अतः अंग्रेजों ने सामन्त वर्ग की शक्ति समाप्त करने की नीति अपनाई। सामन्तों से सैनिक सेवा के बदले अब नकद राशि ली जाने लगी। सामन्तों की सेनाएँ भंग की गई। उनके न्यायिक अधिकार छीन लिए। जागीर क्षेत्रों में सामन्तों की प्रतिष्ठा कम करने के प्रयास किए गए। उनके विशेषाधिकार भी छीन लिए गए। प्रशासन में सामन्तों की भूमिका समाप्त करने हेतु नौकरशाही में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त अनुभवी व स्वामिभक्त व्यक्तियों को नियुक्ति देना प्रारम्भ हुआ। इसके फलस्वरूप राजभक्त अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग का विकास हुआ।

अंग्रेजों ने अपने सैनिक व व्यापारिक हितों को ध्यान में रखते हुए रेलवे व सड़क व्यवस्था का विस्तार किया। शासकों के लिए भी अंग्रेजी शिक्षा का प्रबन्ध किया गया ताकि वे ब्रिटिश तौर–तरीकों को अपनाएँ तथा उनकी निष्ठा ब्रिटिश ताज व पाश्चात्य सभ्यता के प्रति बनी रहे।

इस क्रांति ने भारत में आगामी ब्रिटिश नीतियों को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया। बाद के सभी गवर्नर जनरलों ने जो निर्णय लिए उन पर इस क्रांति का प्रभाव नजर आता है। लॉर्ड डफरिन ने अपने कार्यकाल में कांग्रेस की स्थापना को जो अनुमति प्रदान की उसके पीछे उद्देश्य यह था कि भारतीयों को अपनी बात कहने का कोई मंच मिल जाए ताकि पुनः1857 ई. जैसी क्रांति न हों। बाद के काल में स्वतंत्रता सेनानियों, विशेषकर क्रांतिकारियों ने 1857 की क्रांति से प्रेरणा ग्रहण की।

इस क्रांति के परिणाम जो भी रहे हो, किन्तु यह सत्य है कि इसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद एवं औपनिवेशिक शासन की जड़ों को हिला दिया था। 1857 ई. की क्रांति ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था। यह क्रांति विश्व में पहली बार यूरोपीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध विशालतम एवं महान् चुनौती थी। इससे बड़ा

संघर्ष किसी भी देश की क्रांतियों में नहीं हुआ था। इस घटना का वर्णन तत्कालीन समय के सभी वैश्विक समाचार पत्रों में मिलता है। हालांकि अंग्रेजों ने स्वतंत्रता संग्राम के स्थान पर इसे सैनिक विद्रोह कहकर इसके प्रभाव को सीमित करना चाहा, किन्तु सर्वप्रथम वीर सावरकर ने अपने अकाट्य तर्कों द्वारा साबित कर दिया कि यह भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था।

असफल होने पर भी इस क्रान्ति ने देशवासियों में स्वतत्रंता की भावना को जाग्रत किया। आने वाले समय में स्वतंत्रता आन्दोलनों को यह क्रान्ति प्रेरणा देती रही। भारतीयों की दृष्टि में यह क्रान्ति संघर्ष का अन्त नहीं बल्कि स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रथम अध्याय थी, जिसकी इतिश्री 1947 ई. में देश की स्वतन्त्रता के रूप में हुई ।

शब्दावली

अकाट्य	–	तथ्य जिसे काटा ना जा सके अथवा तथ्य पूर्ण बात
पॉलिटिकल एजेंट	–	देसी रियासतों में ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि
ए.जी.जी.	–	गवर्नर जनरल का प्रतिनिधि
खराज	–	एक प्रकार का कर या टेक्स

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखें –

1. 1857 क्रांति का श्रीगणेश करने की तिथि क्या तय की गई थी ?
   (अ) 8 अप्रेल (ब) 29 मार्च (स) 31 मई (द) 9 मई ( )
2. कोटा में क्रांति का नेतृत्व किसने किया ?
   (अ) जयदयाल (ब) लक्ष्मीबाई (स) कुशालसिंह (द) कुँअर सिंह ( )
3. 1857 की क्रांति राजस्थान में कहाँ से शुरू हुई ?
4. कोटा में किस अंग्रेज अधिकारी की हत्या की गई ?
5. 1857 की क्रांति में गीत रचने वाले कवि कौन–कौन थे ?
6. 1857 की क्रांति में शहीद होने वाले प्रथम क्रांतिकारी कौन था ?
7. आउवा में हुई प्रमुख क्रांति की घटनाओं पर टिप्पणी लिखो ?
8. डूंगजी–जवाहर जी का संक्षिप्त परिचय दीजिये ।
9. 1857 की क्रांति के कारणों का वर्णन कीजिये ।
10. 1857 की क्रांति की मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिये ।
11. 1857 की क्रांति के परिणाम लिखिये ।

गतिविधि–

1. क्रांतिकारियों के चित्र संकलित कीजिये।
2. क्रान्ति से सम्बन्धित लोकगीतों का संकलन करें। अपने शिक्षक एवं अभिभावक का सहयोग प्राप्त करें ।

अध्याय 19

आधुनिक भारत में होने वाले वैचारिक परिवर्तन और समाज सुधार

भारतीय समाज को प्राचीनकाल से ही बहुत उन्नत संस्कृति विरासत में प्राप्त हुई है। यद्यपि इसको बनाए रखने के निरन्तर प्रयास होते रहे हैं, फिर भी कतिपय कारणों से समाज में रूढ़ियों ने स्थान बना लिया और उनमें दोष पैदा हो गये। किन्तु उनके समाधान के लिए भी समाज जाग्रत रहा व समय समय पर उसमें व्याप्त रुढ़ियों को दूर करने के प्रयास भी होते रहे। यथा लगभग 2500 वर्ष पहले गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने तात्कालिक समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए प्रयास किये तो बाद में भक्तिकालीन संतो ने मध्य काल में प्रचलित कर्म काण्डों के विरूद्ध समाज में अलख जगाई ।

गतिविधि–

गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी के कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिये।

उन्नीसवीं सदी में भारत में अंग्रेजों का साम्राज्य स्थापित हो चुका था तथा पाश्चात्य शिक्षा व दर्शन का प्रचार हो रहा था। उस समय के भारतीय समाज में सतीप्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा, कन्या वध जैसी कुरीतियाँ प्रचलित थी । अंग्रेजों ने इन कुरीतियों के बहाने सम्पूर्ण भारतीय सभ्यता व संस्कृति की आलोचना प्रारम्भ कर दी। अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति और रीति रिवाजों की अच्छाईयाँ देखने की जगह मात्र बुराइयों को उजागर करने पर जोर दिया । कुछ भारतीय पढ़े लिखे नवयुवक भी इनकी देखा देखी समाज में बुराइयाँ देखने लगे। जिससे भारतीय समाज मे चिंता व्याप्त हो गई।

ऐसे समय में भारतीय प्रबुद्ध वर्ग ने समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। इन लोगों ने प्राचीन वैदिक साहित्य का अध्ययन करके समाज को यह बताया कि उनकी सभ्यता व संस्कृति श्रेष्ठ है तथा जिन कुरीतियों के कारण समाज व धर्म की आलोचना हो रही है, उन कुरीतियों का प्राचीन धर्म व साहित्य में कहीं कोई आधार व अस्तित्व नहीं है। ये कुरीतियाँ कालान्तर में कभी अज्ञानतावश व कभी परिस्थितिवश प्रचलित हो गई थी तथा इन्हें दूर किया जाना आवश्यक था।

इन समाज सुधारकों में से कुछ ने सरकार को प्रेरित किया कि वह कानूनों का निर्माण कर लोगों को इन कुरीतियों का पालन करने से रोके। वहीं कुछ अन्य समाज सुधारकों का मानना था कि लोगों को समझाकर ही इन कुरीतियों को दूर किया जा सकता है। इस तरह आधुनिक भारत में अनेक महापुरूषों ने समाज सुधार के प्रयास किये। इनमें से कुछ महापुरूषों एवं उनके योगदान का अध्ययन हम इस अध्याय में करेंगे।

प्रमुख समाज सुधारक

राजा राममोहन राय

बंगाल में उन्नीसवीं सदी में जो समाज सुधार की लहर उठी उसे 'पुनर्जागरण' का नाम दिया गया। उन्नीसवीं सदी के शुरूआती समय में बंगाल में एक बड़ी भीषण प्रथा का प्रचलन था। बंगाल के लोग इसे सती प्रथा कह कर प्रतिष्ठित करने लगे।

राजा राम मोहन राय

सती प्रथा की चर्चा प्राचीनकाल में भी यदा कदा होती थी। मध्यकाल में इसका प्रचलन कुछ ज्यादा बढ़ गया था। पर उन्नीसवीं सदी के बंगाल में तो इसने एक वीभत्स रूप ले लिया था। कुलीन परिवारों में जोर–जबरदस्ती से, सती के नाम पर, नई विधवा की आहुति दे दी जाती थी। यह बड़ी विकराल परिस्थिति थी, जिसका लोग 'प्रथा' की आड़ में पालन किया करते थे।

गतिविधि–

प्रथा किसे कहते हैं? अपने आसपास के समाज द्वारा पालन की जाने वाली कुछ प्रथाओं की सूची बनाओ। कुछ प्रथाएँ अच्छी भी होती हैं। ऐसी कुछ अच्छी प्रथाओं के नाम बताएँ । कुछ प्रथाएँ बुरी मानी जाती हैं। ऐसी प्रथाएँ कौन–कौन सी हैं ?

इस कुरीति के खिलाफ कलकत्ता के राजा राम मोहन राय ने एक मुहिम छेड़ी। राम मोहन राय का जन्म बंगाल के राधानगर में एक जमींदार ब्राह्मण परिवार में हुआ। इन्होने कई भाषाओं व वैदिक ग्रंथों का अध्ययन किया तथा वैदिक ग्रंथों का साधारण भाषा में अनुवाद किया।

राजाराम मोहन राय ने भारत के धर्म ग्रंथों का विश्लेषण करके यह बताया कि कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि स्त्री को अपने पति की मौत पर अपने आप को आग में झोंक देना चाहिए।

राम मोहन राय ने अपनी बातों के आधार पर अंग्रेजी शासन को भी सहमत होने पर बाध्य किया। सन् 1828 में उन्होंने अपने साथियों के साथ मिल कर 'ब्रह्म सभा' का गठन किया। अगले साल इसका नाम बदल कर 'ब्रह्म समाज' रखा गया। ब्रह्म समाज के दबाव में आकर अंत में सरकार ने 1829 ई. में एक कानून बनाया, जिसमें सतीप्रथा का समर्थन करने वाले को सज़ा देने का प्रावधान रखा गया। जो लोग स्त्री को सती करने में मदद करते थे अब उन्हें सख्त सजा दी जाने लगी। बड़ी तेजी से यह कुरीति समाज से खत्म होने लगी।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

बंगाल के दूसरे महान् समाज सुधारक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर थे। गरीब परिवार में जन्मे विद्यासागर ने अपनी योग्यता के बल पर उच्च शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने नारी शिक्षा के क्षेत्र में काफी कार्य किया। इन्होंने बालिकाओं की शिक्षा के लिए कई बालिका विद्यालय खुलवाए थे। साथ ही ये विधवा विवाह के प्रबल समर्थक थे। इनके प्रयासों से उस समय विधवा विवाह प्रारम्भ हुए व इन्होंने स्वयं ने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने पुत्र का विवाह एक विधवा से करवाया। इनके प्रयासों से 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम द्वारा विधवा विवाह को मान्यता मिली।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

ज्योतिबा–फुले

बंगाल के अलावा भारत के अन्य प्रान्तों में भी समाज सुधार के प्रयास हुए। महाराष्ट्र के पुणे शहर में धर्म पर चर्चा करने के लिए 'प्रार्थना समाज' का गठन किया गया। पुणे में ही 'ज्योतिबा फुले' की अगुवाई में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना हुई। ज्योतिबा फुले ने जाति व्यवस्था के विरूद्ध निरन्तर संघर्ष किया तथा 'गुलामगिरी'नामक पुस्तक लिखी।

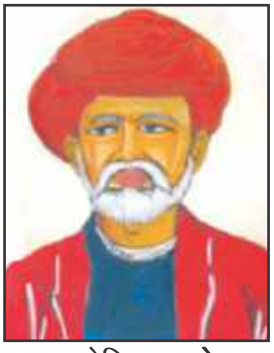

ज्योतिबा–फुले

ज्योतिबा फुले ने लड़कियों को शिक्षित करने के लिए स्कूल खोला। स्कूल में पढ़ाने के लिए कोई योग्य महिला नहीं मिली तो ज्योतिबा ने अपनी पत्नी सावित्री बाई को इसके योग्य बनाया और स्कूल चलाया। विधवा विवाह में भी उनका बहुत योगदान रहा।

तात्कालिक समय में स्त्री शिक्षा की मुश्किलें एवं प्रयास

"स्त्री शिक्षा के बारे में पूर्वाग्रह खत्म होने में बहुत समय लगा। मेरे पिता ने लड़कियों के लिए एक स्कूल शुरू किया था, लेकिन पढ़ाने वाली एक स्त्री थी और कक्षाएँ हमारे घर की चारदिवारी में लगती थी.....मेरी भावी पत्नी के परिवार में हालात बिल्कुल भिन्न थे। मेरी भावी पत्नी की माँ ने चोरी से उसे एक अध्यापिका के पास भेजा था। उसके दादा को जब इस का पता चला, तो उन्होंने धमकी दी कि अगर वह देहरी के बाहर कदम रखने का साहस भी करेगी तो वे उसके पैर काट देंगे.....इस सामाजिक पृष्ठभूमि में यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि जालंधर में कन्या महाविद्यालय नामक एक स्त्री शिक्षा की संस्था खुलने से क्या खलबली मची होगी।"

(पत्रकार दुर्गादास की पुस्तक "भारत कर्जन से नेहरू और उनके पश्चात्" (पृष्ठ–31) के प्रसंग से।) इस आधार पर विचार कीजिए कि ईश्वर चन्द्र विद्यासागर व ज्योतिबा फुले को स्त्री शिक्षा हेतु उस समय कितना संघर्ष करना पड़ा होगा।

सैयद अहमद खां

सैयद अहमद खां

सैयद अहमद खां का जन्म दिल्ली में 1817 ई. में हुआ था। अपने पिता की मृत्यु के बाद आर्थिक कठिनाइयों के कारण आजीविका हेतु इन्होंने ईस्ट इंडिया कम्पनी में नौकरी कर ली। मुस्लिम समाज के पिछड़ेपन को देखकर अहमद खां ने अपने समाज को आधुनिक तरीके से शिक्षित करने तथा आगे बढ़ाने की मुहिम चलाई। ये चाहते थे कि मुसलमान अपनी सदियों पुरानी रूढ़िवादिता और मानसिकता को त्याग कर नई शिक्षा प्रणाली के तहत आधुनिक शिक्षा प्राप्त करें। इसी उद्देश्य से पहले उन्होंने दिल्ली में एक स्कूल खोला। फिर 1875 में दिल्ली के पास, अलीगढ़ में 'मोहम्डन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज' की स्थापना की। यह कॉलेज बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया। मुसलमानों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने का श्रेय सैयद अहमद खां को जाता है । सैयद अहमद खां ने प्रारम्भ में कौमी एकता पर बल देते हुए कहा था कि हिन्दु और मुसलमान भारत माँ की दो आँखें हैं। इन्होंने 'साइंटिफिक सोसायटी' की भी स्थापना की। इनका देहान्त 1898 ई. में अलीगढ़ में हुआ।

स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में हुआ, इनके बचपन का नाम मूलशंकर था । चौदह वर्ष की आयु में इन्होंने गृह त्याग कर दिया व मथुरा में स्वामी वृजानंद से ज्ञान प्राप्त किया । स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को सही तरह से समझने की बात उठायी। उनका और उनके अनुयायियों का मानना था कि यदि वेदों का सार सही तरह से समझ में आ जाए तो हिन्दुस्तान की समस्याओं का हल मिल जाएगा।

दयानन्द सरस्वती कहा करते थे कि–

- सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए तत्पर रहना चाहिए।
- सबसे प्रेमपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।
- अविद्या का नाश और विद्या का विकास करना चाहिए।

स्वामी दयानंद सरस्वती

वे विदेशी दासता को अभिशाप मानते थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वधर्म, स्वदेश व स्वभाषा शब्दों का प्रयोग किया। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने इन विचारों को आगे बढ़ाने के लिए अनेक यत्न किये। आर्य समाज की महत्वपूर्ण उपलब्धियां स्त्रियों व दलितों को वेद अध्ययन का अधिकार दिलाना, बाल विवाह का विरोध करना तथा शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना आदि था। इनके आर्य गुरुकुल एवं डी.ए.वी. स्कूल आज भी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन में भी आर्य समाज के सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

स्वामी विवेकानन्द

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में बंगाल में विवेकानंद का नाम बहुत जाना जाने लगा। विवेकानंद का जन्म बंगाल के कलकत्ता में 12 जनवरी, 1863 ई. को हुआ। इनके बचपन का नाम नरेन्द्र दत्त था। इन्होंने अंग्रेजी कॉलेज से बी.ए. किया। ये पाश्चात्य बुद्धिवाद से प्रभावित थे, किन्तु इनको आध्यात्मिक शान्ति नहीं मिली। तत्पश्चात् इन्होंने रामकृष्ण परमहंस को गुरू बनाया और उनसे वेदान्त का ज्ञान प्राप्त किया। रामकृष्ण परमहंस ने इन्हें 'विविदिशानन्द' नाम दिया, बाद में राजस्थान के खेतड़ी के महाराजा के कहने पर इन्होंने 'विवेकानन्द' नाम अपना लिया। विवेकानन्द ने अमेरिका के शिकागो शहर में हो रहे सर्व धर्म सम्मेलन में हिस्सा लिया। यह सितम्बर 1893 ई. की बात है। विवेकानन्द ने दुनिया भर के धार्मिक विद्वानों की इस सभा को दो दिनों तक हिंदू धर्म के बारे में बताया। सभी लोग उनकी बातों से बहुत प्रभावित हुए। मूलरूप से विवेकानंद ने हिन्दू धर्म की व्यापकता एवं विशालता का सारी दुनिया को संदेश दिया। विवेकानन्द भारत की गरीबी और दरिद्रता से दुखी थे। उनका मानना था कि दीन–दुखियों की सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है। विवेकानन्द समाज से गरीबी व छुआछूत को समाप्त करना चाहते थे। इन्होंने कहा था धर्म मनुष्य के भीतर निहित देवत्व का विकास हैं, धर्म न तो पुस्तकों में हैं न धार्मिक सिद्धान्तों में। विवेकानन्द ने अपने संदेश के माध्यम से जनता में राष्ट्रीयता की भावना का निर्माण किया ।

स्वामी विवेकानन्द

रामकृष्ण मिशन का प्रतीक चिह्न

विवेकानन्द ने अपने गुरू के नाम पर रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन आज भी देश भर में समाज की सेवा कर रहा है।

गतिविधि–

रामकृष्ण मिशन के प्रतीक चिह्न का चित्र बनाकर रंग भरिये।

ऐनीबीसेंट

कुछ विदेशी संस्थाओं ने भी भारत की संस्कृति से प्रभावित होकर यहाँ समाज सेवा के कार्य किये हैं। इसमें थियोसोफिकल सोसायटी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । भारत में इस संस्था का विकास श्रीमती ऐनीबीसेंट ने किया। यह आयरिश मूल की महिला थी। उन्होंनें हिन्दु धर्म व संस्कृति का अध्ययन किया व इससे प्रभावित होकर अपने वस्त्र, भोजन व तौर–तरीके सब भारतीय अपना लिये। श्रीमती ऐनीबीसेंट ने हिन्दू तीर्थों की यात्रा की तथा बनारस में रहकर समाज सुधार के कार्य किये।

ऐनीबीसेंट

इन्होंने बनारस में एक सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो कालान्तर में 'बनारस विश्वविद्यालय' में बदल गया। ऐनीबीसेंट ने भारत के स्वाधीनता संग्राम में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

(वेलेन्टाइन शिरोल का कथन, श्रीमती ऐनीबीसेंट के बारे में)

जब अतिश्रेष्ठ बौद्धिक शक्तियों तथा अद्‌भुत वाक् शक्ति से सुसज्जित यूरोपीय, भारत जाकर भारतीयों से यह कहें कि उच्चतम ज्ञान की कुंजी यूरोप वालों के पास नहीं बल्कि तुम्हारे पास है तथा तुम्हारे देवता, तुम्हारा दर्शन तथा तुम्हारी नैतिकता की छाया भी यूरोप वाले नहीं छू सकते, तब यदि भारतवासी हमारी (यूरोपीय) सभ्यता से मुँह मोड़ लें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात हैं?

राजस्थान में समाज सुधार

राजस्थान में भी उस समय में वैचारिक परिवर्तनों की शुरूआत हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राजस्थान के करौली, अजमेर, चित्तौडगढ, उदयपुर, जोधपुर आदि स्थानों की यात्रा की तथा विवेकानन्द ने अलवर में प्रवास किया व खेतड़ी महाराजा से उनके अच्छे संबंध थे। इन महापुरूषों के विचारों का प्रभाव राजस्थान में भी पड़ा। स्वयं स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1883 ई. में उदयपुर में परोपकारिणी सभा की स्थापना कराई। आर्य समाज से प्रभावित होकर यहाँ कई समाज सुधार के कार्य हुए।

गोविन्द गुरु

उन दिनों राजस्थान में भी कई इलाकों में सामाजिक परिवर्तन की बात उठ रही थी। बंजारा परिवार में बाँसियां गाँव (डूंगरपुर) में जन्मे गोविन्द गुरु ने जनजाति वर्ग के लोगों में समाज सुधार किया। वे इस वर्ग को संगठित करना चाहते थे। गोविन्द गुरु ने 1883 ई. में 'सम्प सभा' की स्थापना की। वे अंधविश्वासों को दूर कर उनमें आत्म विश्वास व आत्म निर्भरता को बढ़ावा देना चाहते थे। जनजातियों को शराब पीने से रोकना, चोरी, लूटपाट जैसे कार्यों से दूर रखना एवं विद्यालय खोलने जैसे कार्य उनकी प्राथमिकता में थे।

गोविन्द गुरू

आर्थिक सुधार कार्य के क्षेत्र में उन्होंने स्थानीय वस्तुओं का अधिक प्रयोग व बेगार न करना आदि बातों पर जोर दिया। इन कार्यों से अंग्रेजों और उनके समर्थकों ने गोविन्द गुरू का विरोध शुरू कर दिया। 1913 ई. में अंग्रेजी सेना ने मानगढ़ पहाड़ी पर चल रही सभा पर आक्रमण किया, जिसमें लगभग 1500 व्यक्ति मारे गये। गोविन्द गुरू को गिरफ्तार कर लिया गया।

राजस्थान के अन्य समाज सुधारक व समाज सुधार के प्रयास–

गोविन्द गुरू के अतिरिक्त लसोड़िया गाँव में खराड़ी परिवार में जन्मे सुर्जी भगत (सुरमल दास) ने भी जनजाति वर्ग के लोगों में समाज सुधार किया। गोविन्द गुरू और सुर्जी भगत समाज सुधार के साथ ही साथ आदिवासियों का विकास भी चाहते थे। इसी तरह से राजस्थान में और भी समाज सुधार के लिए यत्न हुए।

विभिन्न शासकों ने अपने राज्यों में प्रचलित कुरीतियों को समाप्त करने के लिए कानून बनाये। जैसे 1822 ई. में बून्दी ने सती प्रथा पर, कोटा ने 1834 ई. में कन्या वध पर, जोधपुर ने 1841 ई. में त्याग प्रथा पर, जयपुर ने 1847 ई. में मानव व्यापार पर, उदयपुर ने 1853 ई. में डाकन प्रथा पर सर्वप्रथम रोक लगाई।

1889 में अजमेर में ''राजपूत हितकारिणी सभा'' बनी, जिसने बहु–विवाह और दहेज प्रथा को नियंत्रित करने की कोशिश की।

इसी प्रकार अजमेर के हरविलास शारदा के प्रयासों से बाल विवाह पर रोक हेतु 1929 ई. में सरकार ने एक्ट बनाया। चांदकरण शारदा व उनकी पत्नी सुखदा देवी ने दलितोद्धार के क्षेत्र में कार्य किए। ऐसे ही प्रयास अलवर में पण्डित हरिनारायण शर्मा ने किए इन्होंने अपने घर के मंदिर के दरवाजे हरिजनों के लिए खोल दिए व जातिगत भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया। इनके समाज सेवा के कार्यों से प्रभावित हो कर अलवर के महाराजा जयसिंह ने इन्हें अपना सलाहकार नियुक्त किया। राजस्थान के अन्य भागों में ठक्कर बापा, कुँवर मदनसिंह, मामा बालेश्वर दयाल आदि ने समाज सुधार के कार्य किए।

शब्दावली

कुरीतियाँ	–	समाज में व्याप्त बुराइयाँ
कुलीन परिवार	–	उच्च वर्गीय परिवार
अगुवाई	–	नेतृत्व
त्याग प्रथा	–	विवाह एवं शुभ अवसरों पर शासकों द्वारा चारणों को दी जाने वाली राशि

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखे–

1. भारत में थियोसोफिकल सभा का विकास किसने किया ?

(अ) सुर्जी भगत (ब) स्वामी विवेकानंद

(स) सैयद अहमद खाँ (द) ऐनीबीसेन्ट ( )

2. 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना किसने की ?

(अ) ज्योतिबा फुले (ब) स्वामी दयानंद

(स) राजा राममोहन राय (द) गोविन्द गुरु ( )

3. 'ब्रह्म समाज' की स्थापना किसने की ?

4. सर सैयद अहमद खाँ के योगदान के बारे में बताइए ।

5. मानगढ़ हत्याकांड की घटना का संक्षिप्त विवरण दीजिये ।

6. स्वामी विवेकानन्द के जीवन से युवाओं को क्या प्रेरणा लेनी चाहिए ?

7. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के योगदान को समझाइये ।

8. राजा राममोहन राय एवं स्वामी विवेकानन्द के समाज सुधार के प्रयासों का वर्णन कीजिये ।

9. आर्य समाज के योगदान का वर्णन कीजिये ।

गतिविधि–

1. भारत के प्रमुख समाज सुधारकों के चित्रों का संकलन कीजिये ।
2. भारत के प्रमुख समाज सुधारकों के कार्यों की जानकारी का संकलन कीजिए।
3. आज भी हमारे समाज में कई बुराइयाँ व्याप्त है । कक्षा में इसकी चर्चा करें एवं इसे दूर करने के लिये क्या करना चाहिये ? सुझाव प्राप्त करें ।

अध्याय 20

भारत की अर्थव्यवस्था पर अंग्रेजी शासन का प्रभाव

इस अध्याय में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि हिन्दुस्तान की अर्थव्यवस्था पर अंग्रेजों के आगमन का क्या प्रभाव पड़ा ? अपना देश जब अंग्रेजों का उपनिवेश बन गया तो सारे देश की आर्थिक हालत काफी खराब हो गई थी। पूर्व में हमारे व्यापारिक सम्बन्ध दुनिया के कई देशों के साथ थे किन्तु अंग्रेजों का उपनिवेश बनने के बाद देश के आर्थिक हालात खराब होने लगे।

भारत का बाहरी दुनिया के साथ व्यापारिक सम्बन्ध

कक्षा 6 में हमने पढा था कि हमारे व्यापारिक सम्बन्ध दक्षिणी, पश्चिमी व पूर्वी एशिया तथा रोम के साथ थे। हिन्दुस्तान से कपड़ा, अनाज, धातु का सामान आदि दुनिया को भेजा जाता था। बदले में बाहर से सोना चाँदी हिन्दुस्तान में आता था। ऐसा प्रतीत होता है कि विदेशों में बने हुए किसी भी सामान के लिये भारत में माँग नहीं थी। यदि ऐसा होता तो वहाँ बनी चीजों का भारत आयात भी करता। हालात ऐसे थे कि भारत में सोना केवल आता था, यहाँ से बाहर नहीं जाता था। सम्भवतया इसी कारण भारत को सोने की चिड़िया कहते थे। व्यापार का यह सिलसिला कुछ फेर–बदल के साथ कई सदियों तक चलता रहा।

उपनिवेश क्या होता है ?

आधुनिक इतिहास में यह शब्द आम तौर पर एक देश का दूसरे देश पर सैन्य अधिकार की स्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में जब कोई शक्तिशाली देश अन्य किसी देश पर आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से अधिकार कर लेता है तो वह देश जिस पर अधिकार कर लिया जाता है, उपनिवेश कहलाता है।

तात्कालिक भारत की आर्थिक स्थिति

पन्द्रहवीं–सोलहवीं सदी में स्पेन के लोगों ने अमेरिका की खोज के बाद अमेरिका में लूट–पाट का एक भयानक ताण्डव रचा। अमेरिका से काफी मात्रा में सोना–चाँदी लूटकर स्वयं के देश में लाया गया। इससे यूरोप में हिन्दुस्तान के सामान को खरीदने लायक सम्पन्नता आ गई।

पन्द्रहवीं सदी के मध्य तक आते–आते पुर्तगाल के एक नाविक ने जिसका नाम 'वास्कोडिगामा' था, समुद्री रास्ते से भारत आने का मार्ग ढूँढ निकाला। फिर तो यूरोप के व्यापारी ज्यादा से ज्यादा तादाद में हिन्दुस्तान आने लगे।

इस समय यूरोप के व्यापारी कम्पनियाँ बना कर दूर–दराज के इलाकों में व्यापार करने लगे थे। पुर्तगालियों ने अरब सागर के समुद्री रास्ते पर नाके स्थापित कर रखे थे। वहाँ से आने–जाने वाले प्रत्येक जहाज से वे चूंगी वसूल करते थे। जो चूंगी न देता उस पर हमला किया जाता। यह तब तक चलता रहा, जब तक अंग्रेज कम्पनी के जहाजों ने तोपों के दम पर समुद्र पर अपना सामरिक वर्चस्व कायम नहीं कर लिया।

अठारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक अंग्रेज कम्पनी हिन्दुस्तान के साथ व्यापार करने वाली सबसे बड़ी यूरोपीय कम्पनी बन गई। सूरत बन्दरगाह से बीच–बीच में मुगल साम्राज्य के साथ कम्पनी की लड़ाई भी हुई। लड़ाई में कई बार मुगल सेनाओं ने कम्पनी को हराया तथा कम्पनी के अधिकारियों द्वारा माफी मांगने पर उन्हें छोड़ा भी गया।

गतिविधि–

1. यूरोप के देशों में भारतीय सामान खरीदने लायक सम्पन्नता आ गई। कैसे ?
2. यूरोप से समुद्री रास्ते से होकर भारत आने का मार्ग एक पुर्तगाली नाविक ने खोज निकाला। उस नाविक का नाम क्या था ?
3. नाके किसे कहते हैं ?

1717 ई. में मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने अंग्रेज कम्पनी को एक फरमान दिया। इसमें यह कहा गया कि कम्पनी अब मुगल सम्राट को सालाना 3000 रुपये देगी और इसके एवज में कम्पनी सारे देश में बगैर चूंगी दिए व्यापार कर सकती है। इस तरह कम्पनी को हिन्दुस्तान में अपना व्यापार बढाने का मौका मिल गया। आने वाले समय में अंग्रेज कम्पनी ने लगभग सारी यूरोपीय कम्पनियों को बन्दूक के दम पर देश से मार भगाया तथा यहां के सारे व्यापार पर वर्चस्व स्थापित कर लिया। इस तरह कम्पनी को बन्दूक के बल पर व्यापार करने का चस्का लग गया था। बन्दूक के दम पर उसने भारत के मुगल सम्राट एवं बंगाल के नवाब को भी दबा दिया। बंगाल में कम्पनी के व्यापारी अपना कारोबार जोर–जबरदस्ती से करने लगे।

भारत के उद्योगों पर कम्पनी का प्रभाव

प्लासी की लड़ाई (1757) में विजय के बाद कम्पनी के लिये यह सम्भव हो गया कि वह बंगाल में दहशत का राज फैला सके। अपनी नई प्राप्त शक्ति के बल पर यहाँ के कारीगरों को कच्चा माल बढे दामों पर देते थे और उनसे बना हुआ सामान एक चौथाई से भी कम दामों पर खरीदते। परिणाम यह रहा कि आने वाले बीस वर्षों में तो कारीगर अपना काम छोड़कर भाग गए या फिर उनकी कमाई इतनी कम हो गई कि वे अब भुखमरी के कगार पर पहुंच गए। कहाँ तो बंगाल से कोई 90 किस्म का कपड़ा बनकर यूरोप के बाजारों में जाता था और कहाँ अठारहवीं सदी के अन्त तक बंगाल का लगभग सारा का सारा कपड़ा उद्योग ही नष्ट हो गया। लोग यहाँ तक मानने लगे थे कि अंग्रेज कम्पनी ने ढाका में मलमल की साड़ी बनाने वाले कारीगरों के अंगूठे काट डाले। इन कारीगरों के सम्बन्ध में यह मशहूर था कि इनकी बनाई साड़ी इतनी महीन होती थी कि उसे अंगूठी में से निकाली जा सकती थी। किन्तु अंग्रेजों ने इनका भारी शोषण किया इसमें सन्देह नहीं कि इस समय कम्पनी के हाथों गरीब जुलाहों को कष्ट और उत्पीड़न मिला।

अंग्रेजों द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था का शोषण

भारत में अंग्रेजों के आने से पहले यह देश उस समय के यूरोप की तुलना में उन्नत और समृद्ध था। लेकिन अंग्रेजों के शासन के काल में अंग्रेजों ने इस देश का जिस तरह शोषण किया गया उससे यहाँ की समृद्ध अर्थव्यवस्था टूट गई और देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़ गया। शोषण के लिए अंग्रेजों द्वारा भिन्न–भिन्न तरीके अपनाए गए, उनमें से कुछ तरीकों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है।

अंग्रेजों का दमन चक्र

1. **प्रत्यक्ष लूट–मार–** व्यापार के नाम पर अंग्रेज प्रत्यक्षरूप

से लूटमार करते थे। कम्पनी के एजेन्ट किसानों, व्यापारियों आदि को जबरदस्ती एक चौथाई कीमत देकर उनके माल और उत्पादन को हड़प लेते थे तथा किसानों आदि के साथ मारपीट कर वे अपनी एक रुपये की चीज को पाँच रुपये में बेचते थे। जो कम्पनी की अनुचित माँगों को नामंजूर करते, उन्हें कोड़ा मारा जाता अथवा कैद में रखा जाता। मीर कासिम ने कम्पनी गर्वनर को 1762 ई. में इस आशय का पत्र लिखकर विरोध भी किया था।

2. **मालगुजारी–** शोषण का दूसरा स्वरुप मालगुजारी था। कम्पनी द्वारा वसूल की जाने वाली मालगुजारी किसानों को लूटने का सीधा तरीका था। इसमें कम्पनी के अधिकारी मनमाने ढंग से किसानों से मालगुजारी वसूल करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि किसानों ने खेती करनी बन्द कर दी। इससे किसानों के खेत उजड़ गए। एक अंग्रेज अधिकारी ने कहा था–''बीते दिनों में बंगाल के गाँव विभिन्न जातियों के लोगों से भरे पड़े थे और पूर्व में वाणिज्य, धनसम्पदा व उद्योग के भण्डार थे, लेकिन हमारे कुशासन ने 20 वर्षों में ही इन गाँवों के बहुत सारे हिस्सों को बंजर बना दिया है। खेतों में अब खेती नहीं की जाती। किसान लुट चुके हैं। औद्योगिक निर्माताओं का दमन किया जा चुका है।''

गतिविधि–

आओ चर्चा करें

1. मालगुजारी का क्या आशय है ?
2. मालगुजारी द्वारा शोषण किस प्रकार होता था ?

3. **एक तरफा मुक्त व्यापार नीति–** इंग्लैण्ड अपने कारखानों में बनी वस्तुओं को भारतीय बाजार में बेचना चाहता था। लेकिन यह भारतीय वस्तुओं की तुलना में घटिया होने के कारण सम्भव नहीं था। इसलिए भारतीय उद्योगों को जानबूझ कर नष्ट किया गया। इस काल में मुक्त व्यापार की एक तरफा नीति अपनाई गई, जिसके अन्तर्गत इंग्लैण्ड में भारत के बने सूती वस्त्रों के आयात पर भारी शुल्क लगाया गया, जबकि भारत द्वारा इंग्लैण्ड से आयात पर किसी तरह का कोई शुल्क नहीं था।

यह भी जानें

भारत के साथ व्यापार करने के लिए अंग्रेजों द्वारा उस समय बहुत बड़े जहाजों का इस्तेमाल किया जाता था। इन जहाजों को ईस्ट इण्डियन मैन कहा जाता था।

4. **सम्पत्ति का निकास–** कराधान के द्वारा एकत्रित राशि तथा मुनाफे के रुप में एकत्रित सम्पति को अंग्रेज अपने देश में ले जाते रहे एवं उसका इस्तेमाल अपने देश में करते रहे। इससे अपने देश की सम्पति का निकास इंग्लैण्ड के लिए होता रहा, जिससे भारत में अपनी ही सम्पति का लाभ अपने देशवासियों को

दादा भाई नौरोजी, जिसने ब्रिटिश शासन के आर्थिक परिणामों की बहुत तीखी आलोचना की तथा सम्पति के निकास का सबसे पहले विरोध किया।

दादा भाई नौरोजी

नहीं मिला। इसे सम्पति का निकास कहते हैं। इतिहासकारों का मत है कि यदि ऐसा न हुआ होता तो आज यूरोप और अमेरिका इतने विकसित नहीं होते। इसका तात्पर्य यह है कि भारत के विकसित अर्थतंत्र के पतन का मुख्य कारण भी यही है।

5. **कानून बनाकर–** सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में बड़ी मात्रा में सस्ते और बढिया कपड़े का इंग्लैण्ड में आयात हुआ। ये कपड़े लोगों को इतने पसन्द आए कि कपड़ों के इंग्लैण्ड के उत्पादक गम्भीर रुप से डर गए। अतः सन् 1700 व 1712 में पार्लियामेण्ट में कुछ खास कपड़ों को छोड़कर बाकी के इस्तेमाल पर पूरी तरह रोक लगा दी गई।

गतिविधि–

आओ चर्चा करें

1. ईस्ट इण्डियन मैन किसे कहा जाता था ?
2. सम्पति के निकास का सबसे पहले विरोध करने वाले भारतीय व्यक्ति कौन थे ?
3. इंग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट ने भारतीय कपड़ों के इस्तेमाल पर पाबन्दी क्यों लगाई ?

6. **औद्योगिकरण विरुद्ध नीति–** अंग्रेज पूंजीपति भारत में औद्योगिकरण के विरोधी थे। इसलिए उन्होंने वहाँ केवल वही उद्योग स्थापित किए, जिसकी स्थापना करना वहाँ पर भौगोलिक रुप से मजबूरी थी यथा जूट उद्योग। शेष सारे उद्योग अपने देश में स्थापित किए तथा कच्चा माल यहाँ से इंग्लैण्ड ले जाया गया और निर्मित माल हिन्दुस्तान की बाजारों में बेचा गया। इससे भारत के उद्योगपति उनकी प्रतियोगिता में ठहर नहीं सके तथा वे बरबाद हो गए।

इसी दृष्टि से बंगाल में जूट उद्योग की स्थापना की गई। बागान उद्योगों में चाय, कहवा व नील उद्योगों का विकास किया। जिन क्षेत्रों में खनिज सम्पति बड़ी मात्रा में थी, वहाँ पर भी उद्योगों की स्थापना नहीं की गई बल्कि वहाँ से खनिज वस्तुओं को स्वदेश ले जाया गया। यह कार्य सुविधा से हो,इसलिये देश के भीतरी हिस्सों एवं बन्दरगाहों को सड़क और रेलों द्वारा जोड़ा गया।

उन्नीसवीं सदी में यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति का भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

उन्नीसवीं सदी में यूरोप में विशेषकर इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। अब वहाँ मशीनों से सामान बनाया जाने लगा। मशीनी सामान की गुणवता हाथ से बनी वस्तु से श्रेष्ठ होती थी। साथ ही उसके दाम भी कम होते थे। ऐसी स्थिति में हाथ से बनी वस्तुओं की मांग बाजार में कम होने लगी।

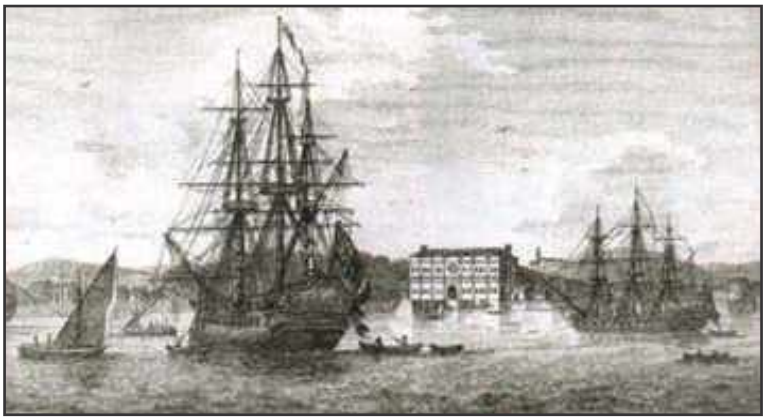

बॉम्बे हार्बर अठारहवीं सदी के आखिर का चित्र

परिणाम यह हुआ कि हाथ से काम करने वाले कारीगर, हस्तशिल्पी आदि बेरोजगार हो गए। इस तरह बंगाल

एवं भारत के अन्य क्षेत्रों के अनेक हस्तशिल्प भी खत्म हो गए। इस प्रक्रिया को इतिहासकारों ने विऔद्योगीकरण कहा अर्थात् भारतीय परम्परागत उद्योगों के नष्ट होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई।

बम्बई और कलकता 1780 के दशक से व्यापारिक बन्दरगाहों के रुप में विकसित होने लगे थे। यह पुरानी व्यापारिक व्यवस्था के पतन और औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के विकास का समय था।

मछलीपट्टनम का एक दृश्य, 1672

मछलीपट्टनम सत्रहवीं शताब्दी में एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह के रुप में विकसित हुआ। अठारहवीं सदी के आखिर में जब व्यापार बम्बई, मद्रास और कलकता के नए ब्रिटिश बन्दरगाहों पर केन्द्रित होने लगा तो उसका महत्व घटता गया।

गतिविधि–

कक्षा में चर्चा करें–

(1) अंग्रेजों ने भारत में केवल वही उद्योग स्थापित किए, जिनकी स्थापना करना उनकी मजबूरी थी। शेष सारे उद्योग उन्होंने इंग्लैण्ड में स्थापित किए।

शब्दावली

उत्पाद	–	उत्पादित वस्तुएँ
औद्योगिक क्रान्ति	–	हाथों के बजाए मशीनों से उत्पादन करना।
नाके	–	चूँगी वसूल करने वाले स्थान

अभ्यास प्रश्न

1. प्रश्न संख्या एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखिए–

(1) अंग्रेजों द्वारा किसानों को लूटने का सीधा तरीका था –

(अ) प्रत्यक्ष लूटमार द्वारा (ब) माल गुजारी द्वारा

(स) कानून बनाकर (द) मुक्त व्यापार नीति द्वारा ( )

(2) सम्पति के निकास का सबसे पहले विरोध किया था–

(अ) मोतीलाल नेहरु ने (ब) महात्मा गॉधी ने

(स) दादा भाई नौरोजी ने (द) सरदार पटेल ने ( )

2. भाग 'अ' को भाग 'ब' से सुमेलित कीजिए :–

भाग 'अ'	भाग 'ब'
1. प्लासी की लड़ाई सन् में हुई	1717 ई.
2. मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने अंग्रेज कम्पनी को बिना चूँगी दिए सम्पूर्ण भारत में व्यापार करने का फरमान दिया	1762 ई.
3. मीर कासिम ने कम्पनी गर्वनर को भारतीय किसानों पर अत्याचार न करने के लिए पत्र लिखा	1700 ई.
4. इंग्लैंड की पार्लियामेंट ने कुछ खास कपड़ों को छोड़कर बाकी के इस्तेमाल पर पूरी तरह रोक लगा दी।	1757 ई.

3. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

1. विऔद्योगीकरण क्या होता है ?
2. एक तरफा मुक्त व्यापार नीति क्या है ? इससे भारत के विदेशी व्यापार को किस प्रकार हानि हुई ?
3. उन्नीसवीं सदी में यूरोप का औद्योगिक क्रान्ति का भारत की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा ?
4. मच्छलीपट्टनम् बन्दरगाह का महत्व कम होने के कारण बताइए।

गतिविधि–

1. विश्व का नक्शा लेकर उसमें उन स्थानों को चिह्नित करें जहाँ से भारत का अन्य देशों के साथ विदेशी व्यापार होता था ?
2. ऐसी वस्तुओं की सूची बनाइए जिनकी प्राचीन काल में विदेशों में माँग थी ।
3. एक निबंध लिखें जिसमें भारत की प्राचीन काल एवं औपनिवेशिक काल की अर्थव्यवस्था का तुलनात्मक विवरण हों ।

अध्याय 21

ब्रिटिश कालीन भारतीय शासन व्यवस्था

अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ–साथ भारत प्रशासनिक दृष्टि से दो भागों में विभाजित हो गया था–पहला ब्रिटिश भारत और दूसरा रियासती भारत।

ब्रिटिश कालीन भारत केन्द्रशासित प्रदेशों एवं 11 प्रान्तों में बँटा हुआ था। सभी प्रान्तों के अलग–अलग गर्वनर थे जो कि भारत के गर्वनर जनरल के प्रति उत्तरदायी थे।

सन् 1857 ई. की क्रान्ति के पश्चात् ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन समाप्त हो गया और उसके स्थान पर भारत में प्रशासन का सीधा नियन्त्रण इंग्लैण्ड के ताज एवं संसद के नियन्त्रण में आ गया। अब कैनिंग को गर्वनर जनरल के साथ–साथ भारत का प्रथम वायसराय नियुक्त किया गया। भारत में एक व्यवस्थित शासन प्रणाली स्थापित हो सके इसके लिए भारत सरकार अधिनियम 1858 पारित हुआ जिसके द्वारा एक नवीन व्यवस्था प्रारंभ हो गई। ब्रिटिश सरकार द्वारा सेना के पुनर्गठन के लिए स्थापित पील कमीशन की रिपोर्ट पर सेना में भारतीय सैनिकों की तुलना में यूरोपियनों का अनुपात बढ़ा दिया गया साथ ही 'फूट डालो राज करो' की नीति का अनुसरण करते हुए सेना के रेजिमेंटों को जाति, समुदाय और धर्म के आधार पर विभाजित कर दिया गया। सरकार की नीतियों के कारण पुलिस, अदालत और पदाधिकारी केवल भूस्वामियों एवं साहुकारों का पक्ष लेते थे। अंग्रेज सरकार द्वारा पारित कुछ अधिनियम इस प्रकार से हैं :–

1861 का भारत परिषद् अधिनियम

ब्रिटिश संसद ने एक इंडियन कौंसिल्स एक्ट 1861 पारित किया। इस एक्ट को पारित करने का उद्देश्य शासन में नरम दल को संतुष्ट करने का एक प्रयास था । इसके कुछ नियम इस प्रकार से हैं –

इस अधिनियम द्वारा गर्वनर की कार्यकारिणी परिषद् के साधारण सदस्यों की संख्या 4 से बढाकर 5 कर दी गई । गर्वनर जनरल को कार्यपालिका को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियम तथा आदेश बनाने के अधिकार दिए गए। विधान परिषद् को अब सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत के लिए कानून और नियम बनाने की शक्ति प्रदान की गई। किसी भी बिल को कानून बनाने के लिए गर्वनर जनरल की स्वीकृति लेनी आवश्यक थी। विधान परिषद् द्वारा पारित कोई विधेयक सपरिषद् भारत सचिव से विचार विमर्श करने पर इंग्लैण्ड का ताज इसे रद्द कर सकता था। गर्वनर जनरल को विशेषाधिकार दिया गया। गर्वनर को किसी प्रान्तीय सरकार द्वारा बनाए गए कानून को संशोधित या रद्द करने का अधिकार दिया गया।

1892 का भारत परिषद् अधिनियम

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद संवैधानिक सुधारों की माँग की गई जिसके फलस्वरूप ब्रिटिश संसद ने 1892 का भारत परिषद् अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम का सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान चुनाव पद्धति की शुरूआत करनी थी। निर्वाचन की पद्धति पूर्णतया अप्रत्यक्ष थी तथा निर्वाचित सदस्यों को मनोनीत सदस्य का दर्जा दिया जाता था। इस अधिनियम द्वारा केन्द्रीय तथा प्रान्तीय विधान परिषदों की सदस्य संख्या में वृद्धि की गई।

1909 का भारत परिषद् अधिनियम

यह भारत के संवैधानिक विकास की दिशा में अगला कदम था। इसके जन्मदाता भारत सचिव मार्ले तथा गर्वनर जनरल लार्ड मिन्टो थे। इस अधिनियम को मार्ले–मिन्टो सुधार के नाम से जाना जाता है। जिसके तहत् भारतीय परिषद् अधिनियम 1909, मार्ले–मिन्टो सुधार के नाम से पारित किया गया। इस अधिनियम द्वारा मुसलमानों के लिए पृथक मताधिकार तथा पृथक निर्वाचन क्षेत्रों की स्थापना की गई। इसी कारण मार्ले और मिन्टो को साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति का जन्मदाता कहा जाता है। भारत में शासन करने हेतु अंग्रेजों ने 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाई।

मार्ले

मिन्टो

1919 का भारत सरकार अधिनियम

इस अधिनियम द्वारा प्रान्तों में लागू की गई शासन व्यवस्था को द्वैध या दोहरा शासन कहते हैं। अब प्रान्तों में आंशिक उत्तरदायी सरकार की स्थापना हो गई।

इस अधिनियम को लागू कर ब्रिटिश सरकार यह चाहती थी कि भारत के एक प्रभावशाली वर्ग को अपना समर्थक बना लिया जाए। भारत सचिव को भारत सरकार से जो वेतन मिलता था, इस अधिनियम द्वारा अब वह अंग्रेजी कोष से मिलना तय किया गया। विषयों को निम्नांकित रूप से केन्द्र तथा प्रान्तों में बाँट दिया गया।

केन्द्रीय सूची के मुख्य विषय :– विदेशी मामले, रक्षा, डाक, तार, सार्वजनिक ऋण आदि।

प्रान्तीय सूची के मुख्य विषय :– स्थानीय स्वशासन, शिक्षा, चिकित्सा, भूमिकर, अकाल सहायता, कृषि व्यवस्था आदि। इस अधिनियम को माण्टेग्यू चैम्स फोर्ड सुधार के नाम से जाना जाता है।

1935 का भारत शासन अधिनियम

इस अधिनियम द्वारा भारत में सर्वप्रथम संघात्मक सरकार की स्थापना की गई। प्रान्तों में लागू द्वैध शासन को समाप्त कर दिया गया साथ ही केन्द्र में द्वैध शासन को लागू कर दिया गया। इस अधिनियम के द्वारा एक संघीय न्यायालय की स्थापना की गई। इस अधिनियम के तहत् बर्मा को भारत से पृथक कर दिया गया। केन्द्रीय सरकार की कार्यकारिणी पर गर्वनर जनरल का नियन्त्रण था। केन्द्रीय विधान मण्डल में दो सदन थे–

1. **राज्य सभा–** इसे उच्च सदन कहा गया, यह एक स्थाई संस्था थी। राज्य सभा में कुल 260 सदस्यों का प्रावधान था। इनमें से 104 सदस्य देशी रियासतों से तथा शेष 156 प्रतिनिधि ब्रिटिश प्रान्तों के थे। जिनमें से 1/3 सदस्य प्रति तीन वर्ष बाद अवकाश ग्रहण कर लेते थे और उनकी जगह नए सदस्य चुन लिए जाते थे।
2. **संघीय सभा–** इसे निम्न सदन कहा गया, इस सभा का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता था। इसे समय पूर्व ही भंग किया जा सकता था। इसकी सदस्य संख्या 375 निर्धारित की गई । इनमें 125 स्थान देशी रियासतों को दिए गए थे शेष 250 स्थानों में से 246 स्थान साम्प्रदायिक व अन्य वर्गों और

चार स्थान अप्रान्तीय थे जो व्यापार उद्योग तथा श्रम को दिए गए थे। इस अधिनियम में विषयों को तीन श्रेणियों में बांटा गया– संघ सूची, प्रान्तीय सूची तथा समवर्ती सूची।

संघ सूची में 59 विषय, प्रान्तीय सूची में 54 विषय और समवर्ती सूची में 36 विषय रखे गए। उदाहरण स्वरूप जैसे –

1. **संघ सूची–** इसमें सेना, विदेश विभाग, डाक, तार, रेल, संघ लोकसेवा, संचार, बीमा आदि।
2. **प्रान्तीय सूची–** शिक्षा, भू–राजस्व, स्थानीय स्वशासन, कानून और व्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य, कृषि, सिंचाई, नहरें, जंगल, खानें, व्यापार, उद्योग धन्धे, न्याय, सड़क, प्रान्तीय लोक सेवाएँ, आदि।
3. **समवर्ती सूची–** दीवानी तथा फौजदारी, विधि, विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, दत्तक ग्रहण, ट्रस्ट, कारखाने तथा श्रम कल्याण आदि।

शिक्षा एवं सामाजिक व्यवस्था में बदलाव

अंग्रेजी शिक्षा लागू करने का उद्देश्य प्रारम्भ में कम्पनी को कम वेतन पर भारतीय कर्मचारियों की व्यवस्था करना, इसाई धर्म का प्रचार करना तथा प्रशासनिक कार्यों की मदद के लिए भारतीयों का सहयोग प्राप्त करना था। परन्तु इसका प्रभाव यह भी हुआ कि अंग्रेजी पढकर लोग पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति और राजनीति को समझने लगे तथा उनको ग्रहण करने लगे। अंग्रेजों द्वारा भारतीय धर्मों और रीति–रिवाजों की आलोचना किए जाने पर शिक्षित वर्ग ने तर्कपूर्ण विरोध किया।

1854 के चार्ल्स वुड के डिस्सपैच को भारतीय शिक्षा का 'मैग्नाकार्टा' कहा गया। इसके अन्तर्गत उच्चशिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रखा गया एवं देशी भाषाओं को भी प्रोत्साहित किया गया। भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार सर जॉन सर्जेन्ट की ओर से जो योजना पेश की उसके तहत देश में प्रारम्भिक विद्यालय, उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थापित करनें एवं 6 से 11 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं के लिए व्यापक निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था के प्रावधान थे।

ब्रिटिशकालीन शासन का भारतीय समाचार पत्रों पर प्रभाव

समाचार पत्रों को प्रतिबंधित करने के लिए सरकार ने कई कानून बनाए, उनमें से एक '1878 का वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट' लागू किया। इस एक्ट द्वारा जिला मजिस्ट्रेट को यह अधिकार मिला था कि वह किसी भारतीय भाषा के समाचार पत्र से बॉण्ड पेपर पर हस्ताक्षर करवा ले कि वह कोई भी ऐसी सामग्री नहीं छापेगा जो सरकार विरोधी हो। यह इतना अधिक खतरनाक था कि, इसने देशी भाषा के समाचार पत्रों की स्वाधीनता पर प्रतिबंध लगा दिया।

इल्बर्ट बिल संबंधी विवाद

लार्ड रिपन के काल में प्रस्तुत इस विधेयक में कहा गया कि सभी न्यायाधीशों को, चाहे वे भारतीय हो या अंग्रेज उन्हें समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। इसके अनुसार भारतीय न्यायाधीश भी अंग्रेजों को दण्डित कर सकते थे। अंग्रेजों ने इसका पुरजोर विरोध किया।

राजस्थान की रियासतों में ब्रिटिश काल में आने वाले कुछ प्रमुख प्रशासनिक परिवर्तन

देश की आजादी के पूर्व राजस्थान में केन्द्र शासित प्रदेश अजमेर के अतिरिक्त 19 देशी रियासतें थी। इन रियासतों में रहने वाले **'अंग्रेज रेजिडेंट'** की निगरानी में ही इनका शासन चलता था। धीरे–धीरे

अनेक रियासतों ने अंग्रेजी न्यायिक व्यवस्था के कुछ अंश अपनाने शुरू कर दिए। 1839 में जब जयपुर की राजमाता को 'अभिभावक' पद से हटा दिया गया तब ब्रिटिश एजेंट की देखरेख में एक शासन परिषद् का गठन किया गया। इसी अवसर पर राज्य में दीवानी व फौजदारी अदालतों की स्थापना की गई। ब्रिटिश एजेंट थर्सबी ने न्याय विभाग को शासन विभाग से पृथक कर दिया। जयपुर राज्य में यह व्यवस्था 1852 ई. तक चलती रही। कालांतर में 4 सदस्यों की अपील–अदालतों की स्थापना की गई। इसके दो न्यायाधीश अपील सुनते थे और दो न्यायाधीश फौजदारी मुकदमों की सुनवाई करते थे। कुछ समय पश्चात् यह परिषद् दो भागों में विभक्त हो गई। पहली इजलास व दूसरी महकमा खास। महकमा खास ही राज्य का सर्वोच्च न्यायालय होता था।

1858 ई. के उपरान्त ब्रिटिश सरकार के अधीनस्थ राजा, महाराजा, महाराणा एवं महारावल नाममात्र के शासक रह गए। ये शासक वास्तव में कम्पनी सरकार के सेवक बनकर रह गए। शासक पड़ोसी राजा के साथ भी स्वतन्त्र रूप से व्यवहार नहीं कर सकते थे। उन्हें विदेशी यात्रा पर ब्रिटिश सरकार जाने के लिए बाध्य कर सकती थी। जिस प्रकार अलवर नरेश को इंग्लैण्ड जाने को बाध्य किया गया। यहाँ तक कि नरेशों को वैवाहिक सम्बन्धों में भी ब्रिटिश सरकार की अनुमति लेनी पड़ती थी। नाबालिग कुमार के राजा बनने पर ब्रिटिश सरकार द्वारा पॉलिटिकल एजेंट की अध्यक्षता में 'अभिभावक परिषद्'का गठन किया गया। इसके माध्यम से रियासत का शासन प्रबन्ध अंग्रेज सरकार के नियन्त्रण मे आ गया। उदयपुर में ऐसा करने का अवसर ब्रिटिश सरकार को 1861 ई. में मिला। जयपुर राज्य के उपरान्त उदयपुर, जोधपुर, कोटा व बीकानेर राज्यों में अंग्रेजी कानून लागू किए गए। बीकानेर रियासत में 'शक्ति पृथक्करण सिद्धान्त' के आधार पर न्याय व्यवस्था लागू की गई। यहीं पर 1922 ई. में उच्च न्यायालय के अनुरूप मुख्य न्यायालय स्थापित किया गया।

1930 ई. तक राजस्थान की सभी रियासतों में ब्रिटिश न्याय व्यवस्था के अनुरूप न्याय व्यवस्था लागू की गई। यह घोषणा की गई कि न्याय के समक्ष सभी व्यक्ति समान समझे जाएँगे । जाति, धर्म, वंश, पद और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के आधार पर न्याय करते समय भेदभाव नहीं किया जायेगा। न्याय व्यवस्था के सभी कार्य अब लिखित रूप से किए जाने लगे।

ग्राम पंचायतों की व्यवस्था में अंग्रेजों ने कोई परिवर्तन नहीं किए। परन्तु ग्राम पंचायतों से उपर की इकाई परगनों को जिलों में बदल दिया गया और जिलाधीशों द्वारा वे शासित होने लगे। अब जिलाधीश अपने जिले का पूर्ण रूप से मालिक हो गया। उसके अधीन नाज़ीम, तहसीलदार, न्यायिक तहसीलदार, गिरदावर, पटवारी, आदि कार्य करने लगे। इनका सम्बन्ध मूलतः लगान वसूली व किसानों की भूमि सम्बन्धी समस्याओं का निपटारा करना होता था। न्याय का कार्य जिला मजिस्ट्रेट एवं शान्ति व्यवस्था का कार्य पुलिस अधिकारी करने लगे। राजस्थान में अंग्रेजी शिक्षा का आरंभ अजमेर क्षेत्र से हुआ। अजमेर में राजकुमारों को शिक्षित करने के लिए मेयो कॉलेज की स्थापना की गई।

शक्ति पृथक्करण सिद्धान्त : सरकार की शक्तियों को अलग–अलग संस्थाओं में बाँट देना, ताकि कोई एक संस्था हावी होकर विधि विरूद्ध काम नहीं करने लगे।

शब्दावली

परगना – ग्राम पंचायत के उपर की प्रशासनिक इकाई

समवर्ती सूची – ऐसे विषयों की सूची जिन पर केन्द्र व राज्य दोनों कानून बना सकते हैं।

शक्ति पृथक्करण – शक्तियों का विभाजन करना

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक का सही उत्तर कोष्ठक में लिखें–

1 भारत के प्रथम वायसराय थे :–

(अ) लॉर्ड कैनिंग (ब) लॉर्ड डलहौजी

(स) सर जॉन लॉरेन्स (द) लॉर्ड मेयो ( )

2 संघीय न्यायालय की स्थापना किस अधिनियम के तहत की गई ?

3 कृषि का वाणिज्यीकरण किसे कहा जाता है ?

4 लॉर्ड मिन्टो को साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति का जन्मदाता क्यों कहा जाता है ?

5 द्वैध शासन से आपका क्या तात्पर्य है ?

6 शिक्षा एवं समाज सुधार के जरिए अंग्रेजों द्वारा समाज को अपने पक्ष में ढालने का उद्देश्य क्या था?

7 वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट पर टिप्पणी लिखिए।

8 पील कमीशन की रिपोर्ट पर सेना विभाग में क्या परिवर्तन किए गए?

9 ब्रिटिश सरकार द्वारा राजस्थान की रियासतों में 'अभिभावक परिषद्' का गठन क्यों किया गया?

गतिविधि–

ब्रिटिशकालीन भारतीय शासन के समय ऐसे कौनसे परिवर्तन किये गए, जो आज भी चल रहे हैं। पता कीजिए।

अध्याय 22

राष्ट्रीय आंदोलन

भारत हमेशा आजादी का हिमायती रहा है। यही कारण है कि भारत ने दुनिया में अपनी संस्कृति का तो विस्तार किया किन्तु राजनीतिक उपनिवेश स्थापित नहीं किए। कतिपय विदेशी लोग यहाँ की धन सम्पत्ति को लूटने के लिए हिन्दुस्तान आए तो कुछ लोग व्यापारी बनकर व्यापार करने आए। धीरे –धीरे उन्होनें यहाँ पर राज्य स्थापित करने की कोशिश की। किन्तु जैसे ही यहाँ के लोगों को लगा कि हमें गुलाम बनाने की कोशिश की जा रही है तो तुरन्त उनके खिलाफ संघर्ष प्रारम्भ हो गया। यह संघर्ष अनवरत चलता रहा। इस तरह इस देश में विदेशियों के खिलाफ राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रक्रिया सतत् रूप से चल रही थी। भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन ऐसी ही एक प्रक्रिया थी, जिसमें हिन्दुस्तान के लोगों को यह आभास हुआ कि अंग्रेजी शासन और भारतवासियों के बीच एक मूलभूत विरोधाभास है, जिसके फलस्वरूप हिन्दुस्तान और उसके निवासियों को केवल नुकसान ही होता था। उस विरोधाभास का निराकरण तभी संभव था, जब अंग्रेज हिन्दुस्तान छोड़ कर चले जाएँ और यहाँ का शासन यहीं के लोगों के हाथों में हो। भारत में अंग्रेज जब से आए, तभी से हिन्दुस्तान के लोगों ने उनका अलग–अलग तरीके से विरोध किया।

यह जरूर था कि कभी लोग अंग्रेजों का विरोध करते तो कभी उनके साथ मिलकर काम करते। अधिकांश लोगों का तो जिन्दगी में कभी भी अंग्रेजों या उनकी सरकार से कोई सीधा वास्ता तक नहीं पड़ा। परन्तु यह भी सच है कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अंग्रेजी शासन से प्रभावित हो रहा था और वह चाहता था कि यह देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो।

गतिविधि :–
हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के बाद दुनिया के किन देशों से अंग्रेजों का राज्य समाप्त हो गया ? एक सूची बनाइए। अपने अध्यापक की मदद लीजिये ।

किस दिन या किस वर्ष में स्वतंत्रता आन्दोलन शुरू हुआ है ? इस तरह के सवाल का कोई जवाब नहीं है, क्योंकि इस तरह के आन्दोलन कई प्रकार की सरकार विरोधी गतिविधियों की समग्रता का नतीजा होते हैं।

कई इतिहासकारों ने यह माना कि आधुनिक तरीके से दल बना कर जो राजनीतिक आंदोलन उन्नीसवीं सदी में चला, वही स्वतंत्रता आन्दोलन है। परन्तु सही अर्थों में 1857 ई. की लड़ाई से ही स्वतन्त्रता की लड़ाई की शुरूआत हो गई थी। इसलिए कई इतिहासकारों ने उसे 'स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम' कहा है । वहीं पर उसके बाद के जो राजनीतिक आंदोलन आया उसे 'स्वतंत्रता आन्दोलन' कहा गया।

उन्नीसवीं सदी के उतरार्द्ध में राष्ट्रीय आन्दोलन

उन्नीसवीं सदी में हिन्दुस्तानियों ने बहुत सारे संघ बना रखे थे। कोई संघ बंगाल के जमींदारों का था तो कोई अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों का और कोई दक्षिण के या पश्चिम के व्यापारियों का। ये सभी संघ सरकार को चिट्ठी–पत्री लिख कर शिकायत करते। माँग होती थी कि 'कर' कम कर दिया जाए, सरकारी नौकरी में

हिन्दुस्तानियों को भी बड़े पदों पर चुने जाने का मौका मिले, स्कूल खोले जाएँ, कानून व्यवस्था में हिन्दुस्तानियों को बराबर का दर्जा दिया जाए, विधान परिषदों में हिन्दुस्तानियों के लिए ज्यादा सीटें हों और उनके मतानुसार ही कार्यकारिणी काम करें आदि।

दिसम्बर 1885 ई. के आखिरी हफ्तें में एक अंग्रेज एलन आक्टेवियन ह्यूम के पहल करने पर इस तरह के संघो का एक सम्मेलन बुलाया गया।

> 1885 ई. की पहली कांग्रेस बैठक बम्बई के गोवालिया तालाब इलाके के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में हुई।

अंग्रेज विरोधी अंसतोष को वैधानिक रूप देने के लिए ए.ओ.ह्यूम ने नई संस्था का नाम 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' रखा गया। इस तरह 28 दिसम्बर 1885 ई. को बंबई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। इसके पहले अध्यक्ष बंगाल के व्योमेश चन्द्र बनर्जी को बनाया गया तथा इसके जनरल सेक्रेटरी अंग्रेज अधिकारी ए.ओ.ह्यूम बने।

अंग्रेजों का उपेक्षापूर्ण रवैया

आने वाले वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रस्तावों को लेकर एक बात साफ हो गई कि अंग्रेज सरकार इन पर कोई ध्यान नहीं देती थी। ध्यान देना तो दूर लोगों को यह लगा कि सरकार वास्तव में उन्हें तंग करने के कई नए तरीके ढूँढ़ रही थी। यह शक तब और मजबूत हुआ जब 1890 के दशक में मध्य भारत में अकाल फैला। अकाल के बावजूद सरकार ने बड़ी सख्ती से किसानों से लगान वसूल किया। एक तरफ किसानों की दुर्दशा हो रही थी, दूसरी तरफ सरकार गेहूँ निर्यात कर रही थी। यह विचार कि सरकार हिन्दुस्तानियों की कोई चिंता नहीं करती थी और भी अधिक प्रबल तब हुआ जब मध्य और पश्चिमी भारत में प्लेग का प्रकोप फैला। सरकार की अकर्मण्यता से असंतोष बढ़ने लगा। रही–सही कसर हैजा ने पूरी कर दी।

19वीं व 20वीं सदी में राष्ट्रीय आन्दोलन की घटनाएँ

कई हिन्दुस्तानियों ने सरकार द्वारा की जा रही जोर जबरदस्ती के खिलाफ आवाज उठाई। महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक ने अपने अखबारों में इसके खिलाफ लेख लिखे जिनके नाम 'मराठा' और 'केसरी' थे।

ये अखबार उनके अन्याय के विरूद्ध लोहा लेने का प्रमाण रहे हैं। राजनीतिक आन्दोलन का तिलक ने एक मार्ग दिखाया, इसलिये उन्हें उग्रवाद का जनक कहा जाता है। उनका स्पष्ट मत था– "भारत में अंग्रेजी नौकरशाही से अनुनय–विनय करके हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं ।" शिवाजी और गणपति उत्सवों के माध्यम से तिलक ने देश में नई जागृति पैदा की। उन्होंने जनता में स्वराज्य का मंत्र फूंका, किन्तु इससे वे ब्रिटिश सरकार की आँखों की किरकिरी बन गये। चापेकर बन्धुओं द्वारा प्लेग कमिश्नर की हत्या की गई । इस हत्या पर अपने समाचार पत्र में की गई टिप्पणी को लेकर सरकार ने तिलक के विरूद्ध हिंसा व राजद्रोह का आरोप लगाकर उनको 18 मास की कठोर करावास की सजा दे दी। उनकी गिरफ्तारी पर जनता की रोषपूर्ण प्रतिक्रिया ने उन्हें 'लोकमान्य' बना दिया । जेल से छूटने पर उन्होंने जनशक्ति को स्वराज्य के लिये तैयार करने का कार्य किया तथा 'होमरूल' आन्दोलन का संचालन किया। तिलक के प्रयासों से 1916 का 'लखनऊ समझौता' सम्पन्न हो सका। 1920 में उनका देहांत हो गया ।

साथ ही साथ बीसवीं सदी के शुरू में सरकार ने नगर निकायों और विश्वविद्यालयों पर से हिन्दुस्तानियों का नियंत्रण कम करने के लिए कानून भी बना डाले। कांग्रेस ने सरकार के इन कार्यकलापों के खिलाफ कई प्रस्ताव पारित किए परंतु इनका सरकार पर कोई असर नहीं हुआ।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में राष्ट्रीय आन्दोलन

अति तो तब हुई जब प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने के नाम पर बंगाल का विभाजन (1905 ई. बंग–भंग) भी कर दिया गया। बंग विभाजन को लेकर सारे देश में रोष की लहर दौड़ गई । यहीं से देश में स्वदेशी आन्दोलन का शुभारम्भ माना जाता है। देश भर में सरकार की हरकतों के खिलाफ लोगों ने गुस्से भरे ज्ञापन सरकार को भेजे। 1907 ई. में कांग्रेस के सूरत सम्मेलन में लोगों के बीच इस विषय पर गर्मा–गर्म बहस हो गई।

पढ़ें और बतायें–

बंगाल विभाजन (1905 ई.) का सूरत अधिवेशन (1907 ई.) पर क्या असर दिखाई दिया ?

अब कांग्रेस में दो धड़े हो गए। एक पक्ष का कहना था कि लिखा पढ़ी के अलावा भी कुछ करना चाहिए, जैसे कि हड़ताल और अंग्रेजों का आर्थिक बहिष्कार आदि। ये लोग 'गरम दल' के लोग कहलाए। गरम दल में प्रमुख थे– पंजाब से लाला लाजपत राय, बंगाल से विपिनचन्द्र पाल और महाराष्ट्र से बाल गंगाधर तिलक। इन्हें लाल, बाल, पाल के नाम से भी जाना जाता हैं।

जब हड़तालों से भी कुछ नतीजा नहीं निकला तो बंगाल के कुछ नौजवानों ने तय किया कि जन मानस में अंग्रेजों के भय को कम करने के लिए उन पर कठोर प्रहार करना पड़ेगा। इन्होंने छोटे–छोटे गुट बनाकर हथियारों का इस्तेमाल सीखा। कुछ ने अंग्रेज अफसरों पर घातक हमले किए। सरकारी खजाने को लूटने की कोशिश की गई।

अतः बाध्य होकर के दिसम्बर 1911 ई. में दिल्ली में शाही दरबार का आयोजन करके उसमें बंगाल विभाजन को निरस्त करने की सरकार द्वारा घोषणा की गई। साथ ही यह भी कहा गया कि देश की राजधानी कलकत्ता से हटा कर दिल्ली में होगी।

प्रथम विश्व युद्ध से 1947 ई. तक राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न चरण

सन् 1914 ई. में यूरोप में प्रथम महायुद्ध शुरू हो गया। भारी मात्रा में हिन्दुस्तान के धन और सिपाहियों को इस युद्ध में झोंक दिया गया। हिन्दुस्तान की सभी रियासतों ने भी अंग्रेजों की मदद के लिए सैनिक एवं युद्ध सामग्री उपलब्ध कराई । अतः युद्ध समाप्त होने पर भारत में अधिकार प्राप्त होने की नई आशा का संचार होने लगा, किन्तु अंग्रेज सरकार ने 1919 ई. में एक कानून लागू किया।

इस कानून के अधीन सरकार का विरोध करने वाले किसी भी व्यक्ति को लंबे समय के लिए जेल भेजा जा सकता था। इस कानून को 'रोलेट एक्ट' का नाम दिया गया। रोलेट कानून के खिलाफ लोग अपना विरोध जाहिर कर रहे थे। एक विरोध सभा अमृतसर–पंजाब के जलियाँवाला बाग में भी हो रही थी। 13 अप्रेल 1919 ई. को होने वाली इस सभा को अमृतसर में नियुक्त अंग्रेज जनरल डायर ने सभा को विसर्जित होने का आदेश दिया। सभा विसर्जित हो, इसके पहले ही सेना ने सभा पर गोलीबारी शुरू कर दी। हजारों बेकसूर लोग मारे गए। अंग्रेज जनरल को इंग्लैंड में उसकी इस हरकत के लिए सम्मानित भी किया गया। बाद में जनरल डायर को क्रान्तिकारी उधम सिंह ने लंदन जाकर मारा था। सरकार को यह लगने लगा कि जनता के असंतोष को कम करना आवश्यक है । अतः 1919 ई. का अधिनियम पारित किया, जिसके अन्तर्गत प्रान्तों में द्वैध शासन स्थापित किया । इस अधिनियम से जनता की नाराजगी कम होने के स्थान पर बढ़ गई। इन सभी अनुभवों से अब हिन्दुस्तान के लोगों को अहसास होने लगा था कि उनके और अंग्रेजों के बीच कोई तारतम्य बनने की गुंजाइश नहीं है। तब जाकर मोहन दास करमचंद गाँधी की सलाह पर कांग्रेस ने तय किया कि सारा देश ही सरकार से असहयोग करेगा। यदि लोग सरकार से असहयोग करेंगे तो सरकार कैसे चलेगी ? यदि लोग अंग्रेजी वस्तुओं का इस्तेमाल न करें तो अंग्रेजों की अर्थव्यवस्था ही डगमगा जाएगी।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड

औपनिवेशिक शासन का विरोध करने वाले प्रमुख नेता

1920 ई. में असहयोग आन्दोलन शुरू किया गया। गाँधीजी इसके नेता बने। गाँधीजी ने एक शर्त रखी कि आन्दोलन पूर्णरूपेण शान्तिपूर्ण रहेगा। अधिकांश समय तो लोग शान्तिपूर्ण तरीके से ही सरकार का विरोध करते, पर कभी–कभी असहयोग आन्दोलन हिंसक रूप भी ले लेता था। कई शहरों में सरकार के विरोध में दंगे हुए। गाँधीजी और अन्य नेता लोगों को समझाते कि

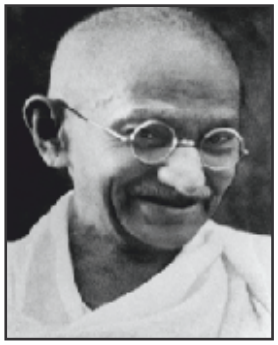

महात्मा गाँधी

आन्दोलन बगैर हिंसा के होना चाहिए। आन्दोलन ज्यादा से ज्यादा विस्तृत होने लगा। पर जब 1922 ई. में गोरखपुर जिले के चौरा–चौरी इलाके में एक पुलिस चौकी पर हमला करके आन्दोलनकारियों ने कई पुलिस वाले मार डाले तो गाँधीजी ने आन्दोलन खत्म करने की घोषणा कर दी।

साइमन कमीशन छः सदस्यों के साथ 3 फरवरी 1928 को बम्बई पहुंचा। इस कमीशन का एक भी भारतीय सदस्य नहीं था । अतः उसके विरूद्ध जनता में रोष उत्पन्न हुआ। परिणाम स्वरूप इस कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया। विरोध को दबाने के लिये पुलिस ने दमन नीति अपनाई । इसलिये जब लाहोर में विरोध का नेतृत्व लाला लाजपत राय कर रहे थे, तब पुलिस पदाधिकारी साण्डर्स ने उन पर लाठियाँ बरसाई, जिससे लाला लाजपत राय के सिर पर गंभीर चोटें आई। कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। लोगों ने लालाजी की मौत के लिए सरकार को जिम्मेदार ठहराया। भगतसिंह व उसके साथियों को यह बात बर्दाश्त नहीं हुई। भगतसिंह अपने साथियों के साथ वैसे भी सरकार द्वारा हिन्दुस्तानियों पर की जा रही ज्यादतियों का विरोध करते थे। भगतसिंह एवं उनके साथियों ने अंग्रेज पुलिस अधिकारी साण्डर्स की गोली मार कर हत्या कर दी। कुछ समय बाद इन लोगों ने योजना बनाकर केन्द्रीय विधान सभा के अन्दर एक बम विस्फोट किया।

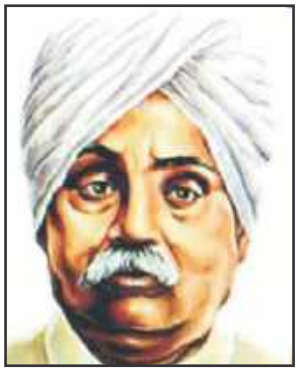
लाला राजपत राय

भगतसिंह और साथियों ने कहा कि यह बम सरकार के बहरे कानों को जगाने के लिए फोड़ा गया है, किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं। भगत सिंह और उसके साथियों को गिरफ्तार कर उन्हें फाँसी की सजा दी गई । 23 मार्च, 1931 ई. के दिन भारतीय स्वतंत्रता के इस महान् सेनानी को उनके दो अन्य साथियों सुखदेव एवं राजगुरू के साथ 24 वर्ष की आयु में फाँसी दे दी गई। 27 फरवरी, 1931 ई. को चन्द्रशेखर आजाद भी अंग्रेजो से लड़ते हुए शहीद हो चुके थे।

भगतसिंह

1930 ई. में ही देशभर में आन्दोलन हुआ तब उसका नेतृत्व गाँधीजी ने किया। उन्होंने कहा कि अवज्ञा तो हो पर सविनय अवज्ञा हो। इसमें कहीं हिंसा और द्वेष ना हो। अतः इस आन्दोलन को 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' नाम दिया। सरकार ने असहयोग आन्दोलन से भी ज्यादा दमन इस आन्दोलन में भाग ले रहे लोगों पर किया। पर लोग अहिंसक तरीके से सरकार के नियमों की अवहेलना करते रहे।

बगैर सरकार की इजाजत के हिन्दुस्तानी नमक भी नहीं बना सकते थे। अतः गाँधीजी के नेतृत्व में लोगों ने नमक बनाने की ठानी। नमक बनाने के लिए विशाल संख्या में लोग गुजरात से दाण्डी नामक स्थान पर पहुँचे । पुलिस ने लोगों पर लाठियों से वार किया। लोग लाठी खाकर गिरते रहे परंतु न तो उन्होंने पुलिस पर वार किया, न पीछे हटे। बस 'भारत माता की जय' बोलते हुए आगे बढ़ते रहे।

अब तक बाकी दुनिया के लोगों में भी जिज्ञासा जाग चुकी थी कि आखिर हिन्दुस्तान में हो क्या रहा है ? दुनिया के कई फिल्मकार व पत्रकार भारत आए। उन सबने दुनिया को बताया कि हिन्दुस्तान में किस

तरह से सरकार लोगों पर ज्यादती कर रही है। अब दुनिया भर के लोगों को आभास हुआ कि वास्तव में हिन्दुस्तानियों की लड़ाई तो इस बात की है कि अंग्रेज भारत छोड़ दे।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1942 ई. में देश ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया। सरकार ने सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। वे लोग जो अब तक विरोध में शामिल नहीं होते थे वे भी मैदान में आ गए। यह सब अगस्त 1942 में हुआ। अतः इसे अगस्त क्रान्ति या भारत छोड़ो आन्दोलन कहते हैं। यह राष्ट्रीय स्वाधीनता का जन आन्दोलन था। इसका प्रभाव सम्पूर्ण भारत में देखा गया। युवाओं ने इस आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

हेमू कालाणी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के युवा शहीद हेमू कालाणी का जन्म 23 मार्च 1923 ई. को सिंध के सख्खर में हुआ था। महात्मा गाँधी के आन्दोलन से प्रभावित हेमू ने प्रभात फेरियों में जाना शुरू कर दिया। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने के लिए लोगों को प्रेरित किया। 1942 ई. में हेमू को गुप्त जानकारी मिली कि अंग्रेजी सेना की हथियारों से भरी रेलगाड़ी रोहडी शहर (सिंध) से होकर गुजरेगी। हेमू ने रेल पटरी को अस्त व्यस्त करने की योजना बनाई। दुर्भाग्य से वहाँ तैनात सुरक्षाकर्मियों की नजर उस पर पड़ गई। हेमू को गिरफ्तार कर लिया गया। अदालत ने उन्हें फाँसी की सजा सुनाई। फाँसी से पहले हेमू को उनकी आखिरी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने फिर से पवित्र भूमि भारतवर्ष में जन्म लेने की इच्छा जाहिर की।

'इन्कलाब जिन्दाबाद' और 'भारत माता की जय' के उद्घोष के साथ यह युवा स्वतन्त्रता सेनानी 21 जनवरी 1943 ई. को सख्खर में हँसते –हँसते फाँसी के फँदे पर झूल गया।

वीर सावरकर

महाराष्ट्र के नासिक जिले के भगूर गाँव में 28 मई 1883 ई. को विनायक दामोदर सावरकर का जन्म हुआ। पिता दामोदर पंत सावरकर एक राष्ट्रभक्त थे तथा माता राधा बाई धर्मनिष्ठ महिला थी। मैट्रिक की पढ़ाई के लिए विनायक पूना गए और तिलक के संपर्क में आए। विनायक इन्हें अपना गुरू मानते थे। कानून की पढ़ाई के लिए विनायक बंबई आए। उस समय इंग्लैण्ड में रह रहे प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विनायक के लिए लंदन में उच्च अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की और वे पढ़ाई के लिए लंदन रवाना हो गए।

लन्दन में विनायक ने श्यामजी कृष्ण वर्मा के 'इण्डिया हाउस' को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया। यहीं उन्होंने '1857 का स्वातन्त्र्य समर' नामक क्रान्तिकारी पुस्तक लिखी जो बाद में अंग्रेजों ने प्रतिबन्धित कर दी। उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और कुछ दिन ब्रिटिश जेल में रखने के बाद मारिया नामक जलयान से उन्हें बम्बई भेज दिया।

रास्ते में विनायक सुरक्षाकर्मियों को चकमा देकर जहाज से निकल गए और तैर कर फ्रांस की सीमा

तक पहुँच गए पर पकडे गए और फ्रान्स की सरकार ने उन्हें अंग्रेजों को सौंप दिया। भारत में सावरकर पर मुकदमा चलाया गया। देशभक्ति प्रेरित योजनाओं, गतिविधियों तथा उसकी दुर्दम्यता से भयभीत अंग्रेज सरकार ने विनायक सावरकर को एक नहीं बल्कि दो आजन्म कारावास की सजा देकर, अंडमान निकोबार भेज दिया। 11 वर्ष तक अण्डमान की सेलूलर जेल में काले पानी की कठोर यातनापूर्ण सजा काटी । लौटने पर विनायक को रत्नागिरि (महाराष्ट्र) में नजरबन्द कर दिया गया। जहाँ से 1937 ई. में उन्हें मुक्ति मिली।

विनायक ने भारत विभाजन का प्रबल विरोध किया। 26 फरवरी 1966 ई. को इस स्वातन्त्र्य वीर ने अन्तिम सांस ली।

23 जनवरी 1897 ई. को सुभाषचन्द्र बोस का जन्म हुआ था। बड़े होकर आई.सी.एस.की परीक्षा पास की, पर नौकरी नहीं की। बाद में भारत की आजादी के लिए सक्रिय रूप से आन्दोलनों में भाग लिया और दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। 1943 ई. में आजाद हिन्द फौज की कमान संभाली और आजादी के लिये प्रत्यक्ष लड़ाई लड़ी। 1944 ई. के सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज के अभियान एवं 1946 ई. में नौ सैनिकों के विद्रोह से अंग्रेजी सरकार को पता चल गया कि अब हिन्दुस्तान के सैनिक भी इस सरकार के साथ नहीं रहना चाहते। कहा जाता है कि 18 अगस्त 1945 ई. को एक विमान दुर्घटना में रहस्यमय तरीके से सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हो गई जो आज भी विवादित है। दो वर्ष बाद 14 अगस्त 1947 ई. को अंग्रेजों ने देश का विभाजन कर 15 अगस्त 1947 ई. को देश को स्वतंत्र कर दिया।

सुभाषचंद्र बोस

राष्ट्रीय आन्दोलन और राजस्थान

राजस्थान में किसान वर्ग ठिकानेदारों और जागीदारों के अत्याचारों से तंग आ चुका था। इसका पहला आभास तब हुआ जब बिजौलिया में जागीरदारों के खिलाफ किसान आन्दोलन शुरू हुआ। बिजौलिया में किसानों को 84 किस्म के कर देने पड़ते थे। 1913 ई. में साधु सीताराम दास के नेतृत्व में किसानों ने इस तरह की अत्याचारी कर व्यवस्था का विरोध किया। 1916 ई. में विजयसिंह पथिक और माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व में किसानों ने बेगार करने से मना किया और कर भी नहीं दिए। आने वाले समय में अन्य रियासतों और ठिकानों के किसानों ने भी बिजौलिया किसान आन्दोलन से सीख लेकर बेगार और कर बंद कर दिए।

विजयसिंह पथिक

साधु सीताराम दास

पहले तो हर रियासत का किसान आंदोलन अलग–अलग चलता रहा। फिर वे हिन्दुस्तान के स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ने लगे। लगभग सभी रियासतों में प्रजा मण्डल का गठन हुआ।

प्रजा मण्डल किसानों की समस्याओं के अलावा रियासतों में मौजूद बदहाली के खिलाफ भी आवाज उठा रही थी। हर रियासत में माँग उठी कि रियासत में उत्तरदायी शासन स्थापित हो। कहीं–कहीं प्रजा

मण्डल के ही नेताओं को स्थानीय मंत्रिमंडल में शामिल भी कर लिया गया। जब देश में 1942 ई. में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ तो प्रजा मण्डल ने माँग रखी कि रियासतें भी अंग्रेजों से नाता तोड़ें।

इस पर कई नेताओं को जेल में डाल दिया गया। नेताओं के बंदीकरण से लगभग हर रियासत में लोग भड़क उठे और लोगों ने आंदोलन किया। डूँगरपुर में आदिवासियों की समस्याएँ भी प्रजा मण्डल ने उठाई। प्रतापगढ़ में अमृतलाल के नेतृत्व में हरिजन सेवा समिति का गठन किया गया।

गतिविधि–

अपने क्षेत्र में प्रजामंडल में शामिल लोगों के नाम पता करो और जानो कि यहाँ प्रजामंडल किस तरह से काम कर रहा था।

राजस्थान के क्रान्तिकारी नेता

अर्जुन लाल सेठी–अर्जुनलाल सेठी का जन्म 1880 ई. में जयपुर में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. उत्तीर्ण किया। जब सेठी को जयपुर के प्रधानमंत्री का पद प्रस्तावित किया गया तो उन्होंने कहा– "श्रीमान् ! अर्जुनलाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को कौन निकालेगा ?"

अर्जुन लाल सेठी

वे देश सेवा का व्रत ले चुके थे । सेठी जी ने केसरीसिंह बारहठ,गोपाल सिंह खरवा आदि के सहयोग से राजस्थान में एक क्रांतिकारी संस्था का निर्माण किया। अल्प समय में ही जयपुर में स्थापित वर्द्धमान विद्यालय देशभर के क्रांतिकारियों के प्रशिक्षण का मुख्य केन्द्र बन गया । निमाज हत्याकाण्ड तथा दिल्ली षड्यंत्र में हाथ होने के सन्देह में आप पकड़े गये और बन्दीगृह में डाल दिये गये । सेठी जी के विरूद्ध कोई ठोस प्रमाण न मिलने के उपरान्त भी जयपुर में उन्हें नज़र बन्द रखा गया तथा पाँच वर्ष पश्चात् वेलूर जेल में भेज दिया गया। वहाँ जेल अधिकारियों के दुर्व्यवहार के कारण कई दिनों तक अनशन किया।

1920 ई. में रिहा होने पर सेठी कांग्रेस में शामिल हो गए पर नीति संबंधी मतभेदों के चलते कांग्रेस से अलग हो गए और जीवनयापन के लिए उन्होंने अजमेर की दरगाह में मुसलमान बच्चों को अरबी–फारसी पढ़ाना शुरू कर दिया। 22 सितम्बर, 1941 ई. को अजमेर में सेठी का देहांत हो गया।

राव गोपाल सिंह खरवा–अजमेर–मेरवाड़ा में खरवा ठिकाने के राव गोपाल सिंह राजस्थान के क्रान्तिकारी आंदोलन के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित रहे। वे आरंभ से ही आर्य समाज से प्रभावित थे।

राव गोपाल सिंह खरवा

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान रास बिहारी बोस व सचिन्द्रनाथ सान्याल ने उत्तरी भारत में सशस्त्र क्रांति की एक योजना तैयार की। राव गोपाल सिंह इस योजना से जुड़ गए, लेकिन क्रान्तिकारियों के एक सहयोगी ने योजना की सूचना पुलिस को दे दी। फलतः योजना विफल हो गई। जून, 1915 ई. में ब्रिटिश सरकार ने राव गोपाल सिंह को आदेश दिया कि वह 24 घंटे में खरवा छोड़कर

टाडगढ़ चला जाए। टाडगढ़ में राव पुलिस निगरानी में रहे। 10 जुलाई 1915 ई. को वह टाडगढ़ से भाग निकले और सलेमाबाद में पकड़े गये और उन्हें दिल्ली के तिहाड़ जेल में भेज दिया गया। यहाँ से वे 1920ई. में रिहा हो गये । बाद में वे रचनात्मक कार्यो में लग गये । मार्च 1956ई. में उनका स्वर्गवास हो गया ।

केसरी सिंह बारहठ–केसरीसिंह का जन्म 1872 ई. में शाहपुरा (भीलवाड़ा) के समीप गाँव देवपुरा में हुआ। बाद में वे उदयपुर के महाराणा के पास चले आए। इस दौरान श्यामजी कृष्ण वर्मा, रास बिहारी बोस व अन्य क्रांतिकारियों से उनका सम्पर्क हुआ। 1903 ई. में होने वाले दिल्ली दरबार में मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह के सम्मिलित होने के समाचार मिले तो क्रांतिकारियों को महाराणा का यह कदम अनुचित लगा । महाराणा फतहसिंह जब दिल्ली दरबार में भाग लेने के लिए जाने लगे तो केसरीसिंह ने महाराणा को 13 सोरठें 'चेतावणी रा चुंगट्या' भेजे। इन्हें पढ़कर महाराणा दिल्ली पहुँचकर भी दरबार में शामिल नहीं हुए।

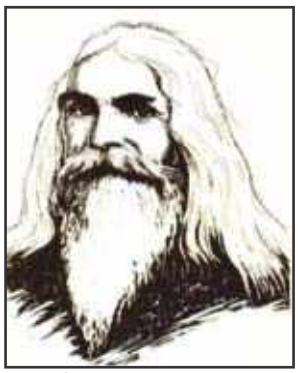
केसरीसिंह बारहठ

सरकारी गोपनीय रिपोर्ट के अनुसार उन पर राजद्रोह, बगावत, ब्रिटिश फौज के भारतीय सैनिकों को शासन के विरूद्ध भड़काने व षड्यंत्र में शामिल होने के साथ–साथ प्यारेराम नामक साधु की हत्या का आरोप भी लगाया गया।

उन्हें 20 वर्षों की सजा देकर हजारीबाग सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया, जहाँ से 1920 ई. में रिहा किया गया। केसरी सिंह का शेष जीवन कोटा में बीता। 1941 ई. में इस स्वातंत्र्य वीर का निधन हो गया।

प्रताप सिंह बारहठ–केसरी सिंह बारहठ के पुत्र प्रताप सिंह बारहठ का जन्म 24 मई, 1893 ई. को उदयपुर में हुआ। प्रतापसिंह बारहठ ने उस परिवार में जन्म लिया, जिसमें देशभक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी थी। केसरीसिंह ने प्रताप को अर्जुनलाल सेठी के वर्द्धमान स्कूल में पढ़ने भेजा। शीघ्र ही प्रतापसिंह भी क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गये। हैदराबाद (सिंध) से बीकानेर लौटते हुए जोधपुर के पास 'आशानाड़ा' स्टेशन पर स्टेशन मास्टर ने धोखा देकर प्रतापसिंह को पकड़वा दिया। प्रतापसिंह को बरेली जेल में रखा गया।

प्रताप सिंह बारहठ

अंग्रेज अधिकारी चार्ल्स क्लीवलैंड प्रताप पर रास बिहारी बोस व अन्य क्रान्तिकारियों की जानकारी देने के लिए दबाव डालता रहा, पर प्रताप टस से मस न हुआ। इस पर क्लीवलैंड ने कहा, "तुम्हारी माँ तुम्हारे बिना दुःखी है, वह आँसू बहाती रहती है।" तो प्रताप सिंह ने कहा– "तुम कहते हो कि मेरी माँ मेरे लिए रात–दिन रोती है और बहुत दुःखी है, किन्तु मैं अन्य सैंकड़ों माताओं के रोने का कारण नहीं बन सकता।" इस पर उसे तरह–तरह की घोर यातनाएँ दी जाने लगी, जिसके कारण 27 मई 1918 ई. को जेल में उनका देहांत हो गया।

जोरावर सिंह बारहठ–यह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी केसरीसिंह बारहठ के छोटे भाई थे। 1912 ई. को क्रान्तिकारी जोरावर सिंह बारहठ ने दिल्ली में वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज के जुलूस में वायसराय पर बम फेंका। वायसराय बच गया, परन्तु महावत मारा गया। जोरावर सिंह भूमिगत हो गए। बाद में उनका अधिकांश समय

मालवा और वागड़ क्षेत्र में साधु वेश में अमरदास वैरागी के रूप में व्यतीत किया। जोरावर सिंह पर आरा मर्डर केस के मुकद्दमें में वारंट जारी था। परन्तु जोरावर सिंह आजीवन अंग्रेजों के पकड़ में नहीं आए।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रान्तिकारी

सुखदेव

राजगुरू

रामप्रसाद बिस्मिल

चन्द्रशेखर आजाद

चापेकर बन्धु

आओ करके देखे–

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में इन क्रान्तिकारियों के योगदान के बारे में जानकारी संकलित कीजिए।

शब्दावली

वैधानिक	–	कानून सम्मत
विसर्जित	–	बिखरना
सविनय अवज्ञा	–	विनम्रता पूर्वक बात मानने से इन्कार करना

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखें–

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई ?
   (अ) 1885 (ब) 1919
   (स) 1942 (द) 1905 ( )
2. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कब हुआ ?
   (अ) 1897 (ब) 1857
   (स) 1947 (द) 1950 ( )
3. 'चेतावणी रा चुंगट्या' किसकी रचना हैं ?
4. राजस्थान के क्रान्तिकारियों के नाम लिखिए ।
5. रोलट एक्ट क्या था ?
6. लाल, बाल, पाल के नाम से कौन प्रसिद्ध हुए ? नाम लिखे ।
7. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड का वर्णन कीजिए ।
8. सविनय अवज्ञा आन्दोलन का वर्णन कीजिए ।
9. भारत छोड़ो आन्दोलन का वर्णन कीजिए ।
10. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिए ।

गतिविधि–

1. **संकलन करें –**
   (1) स्वतंत्रता संग्राम पर साहित्यकारों द्वारा लिखे गये लोकगीत एवं कविताएँ ।
   (2) स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र ।
2. राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रमुख घटनाओं की तिथि वर्षवार तालिका बनाएँ ।

अध्याय 23

आजादी के बाद का भारत

15 अगस्त 1947 ई. को भारत अंग्रेजी शासन से मुक्त हुआ। उस समय आजाद भारत के सामने कई चुनौतियाँ थी। भारतीय जनता ने काफी लम्बे संघर्ष के बाद आजादी पाई थी, इसलिए लोगों को भारतीय शासन से काफी उम्मीदें भी थी। देश के विभाजन के कारण लगभग 70–80 लाख शरणार्थी भारत आए थे। इनके रहने, खाने–पीने व रोजी–रोटी का इंतजाम भी नई सरकार को करना था।

आजादी से पूर्व भारत में 562 देशी रियासतें थी। इनके शासकों को भारत में विलय के लिए तैयार करके भारत का एकीकरण पूरा करना एक बड़ी चुनौती थी। भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ सीमाओं का निर्धारण कर उनसे अच्छे संबंध भी बनाने थे।

अंग्रेजों ने भारत को आर्थिक दृष्टि से बहुत कमजोर कर दिया था। अतः भारत को पुनः मजबूत देश बनाना था। भारत में भाषागत, जातिगत एवं क्षेत्रीय विविधताएँ रही हैं। इनमें उपस्थित राष्ट्रीय एकता के तत्वों को पहचानकर सभी के मन में अपने राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव भरना था। इस तरह उस समय देश के सामने कई चुनौतियाँ थी, उनमें से कुछ का अध्ययन हम इस पाठ में करेंगे।

संविधान सभा का गठन एवं भारत के नवीन संविधान की रचना–

1947 से पूर्व भारत में अंग्रेजों का राज्य था तथा उस समय भारत में शासन चलाने के लिए आवश्यक नियम ब्रिटिश संसद बनाती थी। अंग्रेज (ब्रिटिश) सरकार कानूनों का निर्माण करते समय मात्र ब्रिटिश हितों को ध्यान में रखती थी। उसमें भारतीयों की कोई भागीदारी नहीं थी। यदा–कदा भारतीयों को प्रसन्न करने के लिए भारतीय जनता की कुछ मांगे स्वीकार कर ली जाती। अतः भारतीय जनता लम्बे समय से संविधान निर्माण में अपनी भागीदारी की मांग कर रही थी।

संविधान सभा का गठन

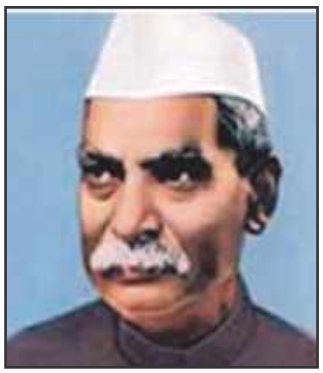
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् भारत में अंग्रेजों का विरोध काफी बढ़ गया था। बंबई–नौसेना विद्रोह एवं आजाद हिन्द फौज के संघर्ष आदि से अंग्रेजी शासकों को लगने लगा कि अब उन्हें भारत को स्वतन्त्र करना पड़ेगा। तब उन्होंने एक मंत्रिमण्डलीय समिति भेजी, जिसमें भारतीयों द्वारा संविधान निर्माण की मांग स्वीकार की गई एवं इस आधार पर 1946 ई. में भारतीय संविधान सभा का गठन किया गया। इस संविधान सभा में ब्रिटिश गर्वनर द्वारा शासित प्रांतों एवं देशी रियासतों के प्रतिनिधि सम्मिलित किए गए। इसका ढाँचा लोकतंत्रात्मक था। प्रान्तों से प्रतिनिधि सीमित मताधिकार के आधार पर निर्वाचित किए गए तथा रियासतों के प्रतिनिधि शासकों द्वारा मनोनीत किए गए। दस लाख की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया गया। इस संविधान सभा में कुल 389 सदस्य रखे गए, जिनमें से 292 सदस्य ब्रिटिश शासित प्रांतों से, चार सदस्य चीफ कमिश्नर शासित प्रांतों से व शेष 93 सदस्य देशी रियासतों से चुने जाने थे।

कुछ शासकों ने प्रारम्भ में इस संविधान सभा में अपने राज्यों से प्रतिनिधि भेजने में आना–कानी की,

किन्तु बीकानेर महाराजा शार्दुल सिंह ने सर्व प्रथम अपने प्रतिनिधि संविधान सभा में भेजे एवं अन्य शासकों को भी इसके लिए प्रेरित किया। इस संविधान सभा का अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को बनाया गया। अंग्रेजों ने जाने से पूर्व भारत को दो हिस्सों क्रमशः भारत एवं पाकिस्तान में बाँट दिया। परिणाम स्वरूप संविधान सभा दो भागों में बँट गई। पाकिस्तान की संविधान सभा के अलग होने एवं हैदराबाद के प्रतिनिधियों के शामिल नहीं होने से भारतीय संविधान सभा में 299 सदस्य ही रह गए।

इसके अतिरिक्त संविधान सभा के सदस्य उच्च शिक्षित एवं विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि थे। लगभग तीन वर्षों तक काफी चर्चा की तथा विभिन्न विकल्पों पर विचार किया और इस प्रकार एक संविधान का निर्माण किया, जिसमें भारतीय समाज के सभी वर्गों के हितों का ध्यान रखा गया। शासन प्रणाली में लोकतंत्रात्मक संसदीय प्रणाली को अपनाया गया ताकि शासन में आम लोगों की भागीदारी हो सकें व योग्य व्यक्ति राष्ट्र को नेतृत्व दे सकें। इस प्रकार इस संविधान सभा ने भारतीयों के लिए एक नवीन संविधान का निर्माण किया तथा आज भी भारत विश्व का एक प्रमुख लोकतंत्रात्मक गणराज्य है। इस संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे, जो बाद में भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने।

गतिविधि–

ऐसा भी करें–संविधान सभा में शामिल कुछ प्रमुख सदस्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए एवं उनके चित्रों को एकत्र कीजिए।

संविधान सभा के बारे में कुछ तथ्य :

- पहली बार संविधान सभा 9 दिसम्बर 1946 ई. को बैठी, जिस सभागार में पहली बैठक हुई, उसे वर्तमान में लोकसभा का सेन्ट्रल हॉल कहते हैं।
- संविधान सभा में कुल 389 सदस्य थे।
- 3 जून 1947 ई.की योजना के अनुसार पाकिस्तान जाने वाले सदस्यों ने स्वयं को हिन्दुस्तान की संविधान सभा से अलग कर लिया। इसके बाद संविधान सभा में कुल 299 लोग रह गए।
- संविधान सभा ने अपना काम 17 समितियों में बाँट लिया था। संविधान की प्रारुप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर थे।
- 26 नवम्बर, 1949 ई. को संविधान को अधिनियमित, आत्मार्पित एवं अंगीकृत किया गया।
- 26 जनवरी, 1950 ई. को संविधान को लागू किया गया।

संविधान सभा में राजस्थान से आने वाले सदस्य :

- पंडित मुकुट बिहारीलाल
- श्री माणिक्यलाल वर्मा
- श्री जयनारायण व्यास
- श्री बलवंत सिंह मेहता
- श्री रामचन्द्र उपाध्याय
- लेफ्टिनेंट कर्नल दलेल सिंह
- श्री गोकुल लाल असावा
- कँवर जसवंतसिंह
- श्री राज बहादुर
- सर वी. टी. कृष्णामाचारी
- श्री हीरालाल शास्त्री
- श्री सी. एस. वेंकटाचारी
- सरदार के. एम. पन्निकर
- सर टी विजयराघवाचार्या

देशी रियासतों का भारत में विलय

अंग्रेजों द्वारा शासित भारतीय साम्राज्य में दो प्रकार के राज्य थे। प्रथम वे प्रान्त जो ब्रिटिश गवर्नर द्वारा शासित थे। द्वितीय वे देशी रियासतें थी, जिन पर राजाओं का शासन था तथा वे अंग्रेजी आधिपत्य में शासन करते थे। ये रियासतें भारत के समस्त भागों में स्थित थी। इनमें से कुछ का क्षेत्रफल काफी अधिक था तो कुछ बहुत छोटी थी। ये रियासतें संधियों तथा समझोतों द्वारा भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन थी।

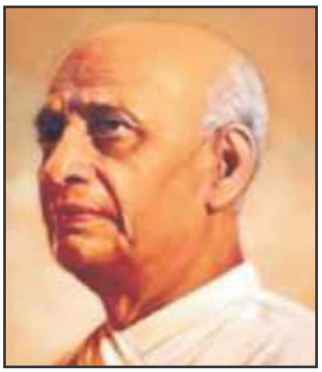

सरदार वल्लभ भाई पटेल

अंग्रेजों ने भारत को मुक्त करते समय विभाजित कर दिया और समस्त प्रांतों को भारत व पाकिस्तान नामक दो अधिराज्यों में बाँट दिया । अंग्रेजों ने देशी रियासतों के साथ पूर्व में की गई संन्धियाँ रद्द कर दी तथा उन पर से अपनी सर्वोच्चता त्याग दी तथा उन्हें यह अधिकार दिया कि वे भारत अथवा पाकिस्तान में से किसी भी देश में शामिल हों अथवा चाहें तो स्वतंत्र रहे। इससे स्थिति संकटपूर्ण हो गई, क्योंकि कुछ रियासतों के शासक स्वतंत्र रहना चाह रहे थे तो कुछ पाकिस्तान के नेताओं के बहकावे में आकर पाकिस्तान में मिलने की सोच रहे थे। जबकि ये रियासतें भारतीय भू भाग के मध्य में स्थित थी तथा यहाँ की प्रजा भी भारत में मिलना चाहती थी। इन शासकों के ऐसे कदमों से भारत की एकता को खतरा उपस्थित हो सकता था, इसलिए इस समस्या के निराकरण के लिए भारत की अन्तरिम सरकार ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता मे रियासती विभाग की स्थापना की। सरदार पटेल ने देशी रियासतों के शासकों को भारत में विलय के लिए प्रेरित किया और उन्हें भौगोलिक,आर्थिक तथा जनता की इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए कार्य करने का सुझाव दिया। इस समय में बडौदा व बीकानेर के शासकों ने भारतीय संघ में सम्मिलित होने की सर्वप्रथम सहमति प्रदान की। भोपाल के नवाब ने जिन्ना के प्रोत्साहन पर राजस्थान के कुछ राजाओं को अपनी ओर मिलाकर पाकिस्तान में मिलने की योजना बनाई। किन्तु उनके राज्य एवं पाकिस्तान के मध्य मेवाड़ की रियासत स्थित थी।

भारत आजादी से पहले

अतः उन्होंने अपने प्रतिनिधि को मेवाड़ महाराणा भूपाल सिंह से सम्पर्क करने को कहा। किन्तु मेवाड़ महाराणा ने कहा कि मेवाड़ भारत में रहेगा या बाहर इसका निर्णय मेरे पुरखे कर गए हैं। यदि देशद्रोह करना होता तो मेरे पास हैदराबाद से भी बड़ी रियासत होती।इस प्रकार मेवाड़ के महाराणा ने देशभक्ति का परिचय

देते हुए भारत में विलय होने का निश्चय किया एवं देशी रियासतों को पाकिस्तान में मिलाने की जिन्ना की योजना को असफल कर दिया ।

गतिविधि–

ऐसा भी करें–भारत के प्राचीन मानचित्र में विभिन्न रियासतों जैसे हैदराबाद, भोपाल, मेवाड़ आदि को पहचानिए।

15 अगस्त 1947 ई. से पूर्व मात्र जूनागढ़, हैदराबाद व कश्मीर को छोड़कर लगभग सभी रियासतों ने भारतीय संघ में सम्मिलित होने पर सहमति दे दी। बाद में जूनागढ की प्रजा ने अपने नवाब के विरुद्व विद्रोह कर अपना विलय भारत में कर दिया।

हैदराबाद का निज़ाम जनभावनाओं की अनदेखी कर भारत से अलग रहना चाहता था, किन्तु सरदार पटेल ने सेनिक कार्यवाही कर उसे भारत में मिला लिया। पाकिस्तान ने कश्मीर को हड़पने के लिए उस पर आक्रमण किया किन्तु वहाँ के महाराजा हरिसिंह व राजनीतिक दलों ने भारत में विलय पर सहमति दे दी।

अतः उसका भी भारत में विलय हो गया। इस प्रकार सरदार पटेल के अथक प्रयासों से देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय हुआ तथा शेष भारत खण्डित होने से बच गया। सरदार पटेल ने जिस प्रकार का दृढ निश्चय इस सम्पूर्ण घटनाक्रम के दौरान दिखाया उसके कारण उन्हें 'लौह पुरूष' कहा गया।

विस्थापितों को फिर से बसाना

आजादी के समय भारत–पाक विभाजन के परिणामस्वरूप लगभग 70–80 लाख लोग पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत आए थे। ये विस्थापित अपना घर–बार संपत्ति सब कुछ पाकिस्तान में छोड़कर कई त्रासदियाँ झेलते हुए भारत पहुँचे थे। इनमें से कईयों ने तो अपने परिजनों को भी खो दिया था। अतः इन्हें मानसिक व आर्थिक संबल की आवश्यकता थी। इनका पुनर्वास ज़रूरी था, ताकि ये फिर से अपना घर–बार बसा सकें। काम धंधे मे लग जाएँ, बच्चों की पढ़ाई करा सकें और देश को आगे बढ़ाने में भी योगदान दे सकें।

स्वतन्त्र भारत की पहली सबसे बड़ी चुनौती इन लोगों को फिर से बसाने में थी। पश्चिम भारत में ज्यादातर सिंधी आये थे। उत्तर भारत में सिख और पूर्वी भारत में बंगाली। पहले छः महीने तो विस्थापितों को स्कूल–कालेजों में रखा गया, फिर अजमेर, कच्छ,गांधीधाम व आदिपुर, कल्याण, दिल्ली, करनाल, दण्डकारण्य आदि स्थानों पर विस्थापितों के लिए कैम्प स्थापित किये गए। चूंकि कई लोग दिन में काम पर जाते थे तो उनके लिए स्कूल–कॉलेज शाम को भी चलाने की व्यवस्था की गई। नए तकनीकी शिक्षा संस्थान बनाए गए, ताकि विस्थापित लोग ऐसे हुनर सीख सकें जिनकी उनके नए निवास–स्थान पर ज़रूरत थी।

आने वाले सालों में विस्थापितों ने देश और समाज को आगे बढ़ाने में बहुत योगदान दिया। लोगों ने नए माहौल में रहने के लिए नए हुनर सीखे। कुछ ही समय में उन्होंने नए शहर आबाद कर लिए। उल्हासनगर (महाराष्ट्र), गांधीधाम (गुजरात), आदिपुर(गुजरात) जैसे शहरों में सिंधी विस्थापितों ने अपने व्यापार और उद्योग चलाने शुरू कर दिए।

पीलीभीत (उत्तरप्रदेश), शिवपुरी (मध्यप्रदेश), श्रीगंगानगर (राजस्थान) जैसे इलाकों में पंजाबी विस्थापितों ने खाली पड़ी हुई जमीन को खेती योग्य बनाया। थोड़े ही समय में ये इलाके फसलों से लहलहा उठे।

बँटवारे की त्रासदी

हमें शरणर्थियों का एक लम्बा कारवाँ मिला जो शेखुपुरा से हो कर भारत आ रहा था। हमने इन लोगों से बातें की और इनमें से कई उत्तर अत्यन्त मर्मस्पर्शी थे। एक वृद्ध किसान ने कहा – "इस देश में कई शासक बदले। वे आये और चले गये। लेकिन यह पहला अवसर है जब शासक के साथ रिआया (जनता) को भी बदलने पर विवश किया जा रहा है"। एक वृद्ध स्त्री ने कहा– "बँटवारे हर परिवार में होते हैं, लेकिन सब कुछ शान्ति से होता है। यहाँ लूट–मार व रक्तपात क्यों ?".....दुर्घटना के परिणामों का पूरा ज्ञान मुझे उस समय हुआ जब मैं दिल्ली से कुछ दूर कुरूक्षेत्र के एक कैम्प में गया जहाँ दो लाख सत्तर हजार शरणार्थी तम्बुओं और झोंपड़ियों में बसाये गये थे और मैंने विस्थापितों का 15 मील लम्बा कारवाँ मॉन्टगोमरी जिले से भारत की तरफ आते हुए देखा।

(पत्रकार श्री दुर्गादास की पुस्तक 'भारत कर्जन से नेहरू और उनके पश्चात्' से उद्धरित)

दिल्ली, करनाल (हरियाणा), पानीपत (हरियाणा), कानपुर (उत्तरप्रदेश) जैसे शहरों में छोटे–बड़े उद्योगों की स्थापना भी विस्थापितों ने ही की। घरों की कमी को दूर करने के लिए कई शहरों के साथ नए 'मॉडल टाउन' बनाए गए।

विस्थापितों की त्रासदी

विस्थापितों में से अनेक महान् राजनीतिक नेता बने, अनेक ने व्यापार और उद्योगों में नाम कमाया। अनुसंधान, पत्रकारिता, फ़िल्में, गायन आदि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था, जहाँ 1947 में आए विस्थापितों ने यह न साबित कर दिया कि कितनी भी विपरीत परिस्थिति क्यों न हो, स्वतन्त्र भारत में लोग काफी कुछ करने की क्षमता रखते हैं और उन्होंने ऐसा किया भी।

गतिविधि–

कुछ ऐसे लोगों के बारे में पता करने की कोशिश कीजिए जो पाकिस्तान से विस्थापित होकर आए और उनसे यह जानने की कोशिश कीजिए कि यहाँ आने में उन्हें किस तरह के अनुभव हुए ? किस तरह उन्होंने अपनी ज़िन्दगी की नई शुरुआत की ?

पड़ोसी राष्ट्रों से संबंध

भारत व पाकिस्तान जब अलग हुए तो इनमें सीमा निर्धारण करने के लिए एक अंग्रेज अधिकारी रेडक्लिफ की अध्यक्षता में एक आयोग गठित हुआ। जिसने इन दोनो राष्ट्रों के मध्य सीमा का निर्धारण

किया। इस सीमारेखा को आज 'रेडक्लिफ' रेखा के नाम से जाना जाता है। देशी रियासतों को भारत व पाकिस्तान में से किसी भी राष्ट्र में मिलने की स्वतंत्रता थी। सरदार वल्लभभाई पटेल के कुशल निर्देशन में व रियासती सचिवालय के प्रयासों से अधिकांश रियासतों के शासकों ने भारत में विलय पर अपनी सहमति दे दी।कश्मीर के शासक महाराजा हरिसिंह ने भी भारत में विलय पर सहमति प्रदान कर दी किन्तु पाकिस्तान ने उस पर जबरन अधिकार करना चाहा एवं कबायलियों की आड़ में उस पर आक्रमण किया। भारतीय सेना ने हालांकि पाक सेना व कबायलियों को कश्मीर से खदेड़ दिया किन्तु आज कश्मीर के बड़े क्षेत्र पर पाक ने अनधिकृत कब्जा किया हुआ हैं। 1948 ई. के बाद भी 1965 ई. ,1971 ई. व 1999 ई. में पाक के साथ हुए युद्ध में यद्यपि पाकिस्तान पराजित हुआ है किन्तु आज भी इस क्षेत्र में तनाव बना रहता है।

क्या आप जानते हैं कि 1971 के युद्ध में पाकिस्तान के लगभग 90,000 सैनिकों ने भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और पूर्वी पाकिस्तान के स्थान पर एक नए देश 'बांग्लादेश' का निर्माण हुआ।

उत्तर दिशा में चीन से हमारा कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों को लेकर विवाद चल रहा है। चीन ने भी भारत के बड़े भाग पर अनधिकृत कब्जा किया हुआ है।

पाकिस्तान सेना प्रमुख नियाजी का भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण 1971 में

अन्य पड़ोसी राष्ट्रों जैसे– नेपाल, म्यांमार, भूटान, श्रीलंका, मालदीव से हमारे संबंध सौहार्दपूर्ण रहे हैं। भारत इन राष्ट्रों के साथ बड़े भाई की भूमिका निभाता है। नेपाल व भूटान के साथ हमारी सीमाएँ खुली हुई है तथा इन राष्ट्रों के निवासियों को भारत में कई स्थानों पर कार्य करते हुए देखा जा सकता है। विगत कुछ वर्षों से दक्षिण–पूर्व एशिया के राज्यों में जिनमें कभी भारतीय सभ्यता व संस्कृति का प्रचार–प्रसार था, उससे भी भारत ने अपने संबंध मधुर बनाए हैं।

आर्थिक विकास

औपनिवेशिक काल के दौरान अंग्रेजों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को ब्रिटिश हितों के अनुकूल ढाला। भारत के प्राचीन कुटीर उद्योगों को नष्ट कर दिया एवं भारत को कृषिगत कच्चे माल का उत्पादक राष्ट्र बना दिया ताकि इंग्लैण्ड के उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त हो सके। आजादी के बाद कुछ उपजाऊ क्षेत्र पाकिस्तान में चले गए। भारत के आर्थिक पुनर्निर्माण हेतु एवं भारत को सक्षम बनाने तथा इसे गरीबी से मुक्त कराने हेतु एक सुव्यवस्थित योजना की आवश्यकता थी। अतः 1950 ई. में भारत में 'योजना आयोग' नामक संस्था का गठन किया गया और उसी के तहत पाँच–पाँच वर्ष के कार्यों के लक्ष्य निर्धारित कर योजनाएँ बनाई गई, जिन्हें पंचवर्षीय योजनाएँ कहा गया। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भारी उद्योगों पर बल दिया गया । भारी उद्योगों व विशाल बांधों के निर्माण पर कार्य किया गया। बाद की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि व सामुदायिक विकास जैसे लक्ष्यों को महत्त्व दिया गया। अभी वर्तमान में 12वीं पंचवर्षीय योजना 2012 से प्रारम्भ हुई है।

राज्य सरकारों द्वारा योजना आयोग में उनको प्रतिनिधित्व नहीं दिये जाने की प्रायः शिकायत की जाती थी। अतः सभी राज्यों को प्रतिनिधित्व देने एवं उन्हें आर्थिक विकास की गति में भागीदार बनाने की दृष्टि से 2015 में योजना आयोग के स्थान पर एक नवीन संस्था 'नीति आयोग' का गठन किया गया है। इसके पदेन अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं तथा सभी राज्यों के मुख्यमंत्री व केन्द्रशासित प्रदेशों के उप–राज्यपाल इसके सदस्य होते हैं। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अरविन्द पनगड़िया इसके प्रथम उपाध्यक्ष बनाए गए हैं।

नीति आयोग के प्रथम अध्यक्ष अरविन्द पनगड़िया का संबंध राजस्थान के भीलवाड़ा जिले से है।

राज्यों का पुनर्गठन

स्वतन्त्र भारत में यह मांग उठी कि राज्यों की सीमाएँ भी फिर से तय की जाएँ, ताकि लोगों को राज्य प्रशासन के साथ व्यवहार करने में आसानी हो। स्वतंत्रता के पहले कई राज्यों का आकार बहुत बड़ा था। जैसे– एक राज्य था बंबई। इस राज्य में वर्तमान का महाराष्ट्र और गुजरात आते थे। मद्रास राज्य में वर्तमान तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश और कर्नाटक के कुछ हिस्से आते थे। 'सेंट्रल प्रोविन्सेज़ एंड बरार' नाम के राज्य में मध्यवर्ती हिन्दुस्तान के अनेक इलाके शामिल थे। इनमें कई राज्य तो क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से दुनिया के अनेक देशों से भी ज्यादा बड़े थे। इसके अलावा 500 से ऊपर रियासतें थी, जिनको किसी न किसी प्रशासनिक इकाई में शामिल करना था। राज्यों की सीमाएँ तय करने के लिए एक 'राज्य पुनर्गठन आयोग' का गठन किया गया। इसने कई विकल्पों को ध्यान में रखते हुए यह सलाह दी कि राज्यों को भाषा के आधार पर बनाना चाहिए। अतः मद्रास को मैसूर, आन्ध्र प्रदेश और मद्रास राज्यों में विभाजित किया गया। बाद में मद्रास को नया नाम दिया गया– 'तमिलनाडु'। मैसूर का नाम बदल कर रखा गया–कर्नाटक। बंबई राज्य को गुजरात और महाराष्ट्र में बाँटा गया। मध्यवर्ती भारत में मध्य प्रदेश बनाया गया। राजस्थान, जिसके बनने की प्रक्रिया कई साल पहले ही प्रारम्भ हो चुकी थी, उसको भी एक स्थाई रूप दिया गया।

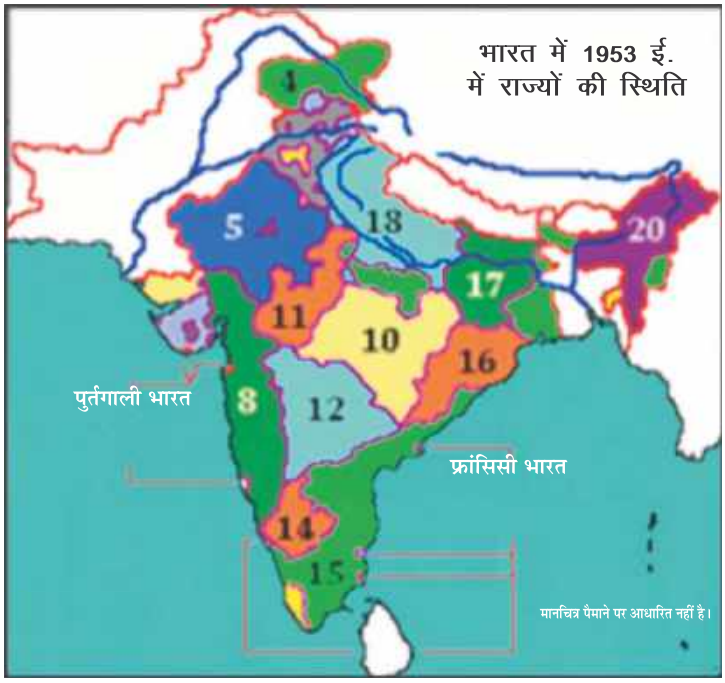

जैसा पहले कहा गया कि हिन्दुस्तान में राज्यों की सीमाएँ लोगों की सुविधा को ध्यान में रखकर बनायी गयी थी। अतः जब–जब ज़रूरत पड़ी, एवं लोगों ने यह दर्शाया कि उन्हें एक अलग राज्य की आवश्यकता है, तब–तब राज्यों का पुनर्गठन किया गया। इस तरह 1966 ई. में पंजाब और हरियाणा राज्य बने। नवम्बर 2000 ई. में उत्तरप्रदेश से अलग कर के उत्तराँचल बना। उत्तराँचल को ही बाद में उत्तराखंड

का नाम दिया गया। साथ ही साथ मध्य प्रदेश को विभाजित कर के छत्तीसगढ़ बना और बिहार से झारखंड को अलग किया गया। हाल ही में आंध्र प्रदेश को विभाजित कर तेलंगाना बनाया गया। आज भी रह–रह कर नए राज्य बनाने की मांग होती रहती है। इस तरह की मांग बुंदेलखंड प्रदेश, विदर्भ प्रदेश के लिए भी उठी है, परन्तु अभी इन राज्यों का गठन नहीं हुआ है।

गतिविधि–

सन् 1953 ई. के भारत के मानचित्र की तुलना वर्तमान भारत के मानचित्र से कीजिए और राज्यों की स्थिति में आए बदलावों को लिखिए ।

राजस्थान का एकीकरण

आज जिस प्रदेश को राजस्थान के नाम से जाना जाता है वह स्वतन्त्रता के पहले राजपूताना के नाम से जाना जाता था। राजपूताना यानी राजपूतों की भूमि। राजपूताना में अनेक रियासतें थी। जिन पर यहाँ के शासक, अंग्रेज सरकार की देखरेख में शासन चलाते थे। अजमेर–मेरवाड़ा का इलाका सीधे अंग्रेजों के अधीन था। स्वतंत्रता के बाद इन सब इलाकों को इकट्ठा करके वर्तमान राजस्थान राज्य बना।

हालांकि देशी रियासतों ने भारत में विलय पर सहमति दे दी। परन्तु उनमें कई रियासतें जनसंख्या व क्षेत्रफल की दृष्टि से इतनी छोटी थी कि उनका अलग राज्य के रूप में रहना प्रशासनिक दृष्टि से सम्भव नहीं था। इससे उनका विकास भी नहीं हो पाता। इसलिए रियासती विभाग ने तय किया कि जिन रियासतों की जनसंख्या 10 लाख से कम है या आय एक करोड रूपए से कम है उन्हें पास की बड़ी रियासतों में मिला दिया जाए। इसलिए प्रारम्भ में राजस्थान के राजाओं ने स्वयं प्रयास करके अपने संघ बनाने के प्रयास किये। जैसे मेवाड़ महाराणा ने राजस्थान के राजाओं को एकत्रित कर 'राजस्थान यूनियन' बनाने का प्रस्ताव रखा। डूँगरपुर महारावल ने वागड़ के राज्यों को मिलाकर 'वागड़ संघ' बनाने का प्रस्ताव दिया। कोटा महाराव ने 'हाडौती संघ' बनाने का प्रयास किया, किन्तु शासकों द्वारा किए गए ये प्रयास सफल नहीं हुए ।

बहरहाल, सबसे पहले मेवात के इलाके से अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली ने मार्च 1948 में इकट्ठा रहने का फैसला किया। इस संगठन को के.एम.मुंशी की सलाह पर इसके प्राचीन नाम के आधार पर 'मत्स्य संघ' नाम दिया गया। अलवर को मत्स्य संघ की राजधानी बनाया गया।

कुछ ही दिन बाद दक्षिण–पूर्वी और दक्षिण की नौ रियासतों ने मिल कर 'संयुक्त राजस्थान' नाम के संघ का गठन किया। इसमें बाँसवाड़ा, कोटा, बूँदी, टोंक, झालावाड़, प्रतापगढ़, शाहपुरा, किशनगढ़ और डूँगरपुर नामक रियासतें व दो चीफशीप कुशलगढ़ व लावा शामिल थे। कोटा को 'संयुक्त राजस्थान' की राजधानी बनाया गया।

तीन हफ्ते बाद मेवाड़ यानि उदयपुर रियासत भी इस संघ में शामिल हो गया 'संयुक्त राजस्थान' नाम के इस संघ की राजधानी उदयपुर को बनाया गया। राजप्रमुख मेवाड़ के महाराणा भूपालसिंह बने तथा माणिक्यलाल वर्मा को 'प्रधानमंत्री' बनाया ।

अगले साल, यानी 30 मार्च, 1949 ई.में बची हुई चार रियासतें भी इस संघ में शामिल हो गयी। अतः अब संयुक्त राजस्थान संघ में जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर भी शामिल हो चुके थे। संघ का नाम बदलकर ''वृहत राजस्थान'' रख दिया गया। वृहत राजस्थान की राजधानी बना जयपुर और इसके महाराजप्रमुख बने मेवाड़ के महाराणा भूपालसिंह, राजप्रमुख बने जयपुर के मानसिंह तथा पंडित हीरालाल शास्त्री को 'प्रधानमंत्री' बनाया गया। भारतीय संविधान के लागू होने के बाद सारे देश में राज्यों के 'प्रधानमंत्री' को 'मुख्यमंत्री' कहा जाने लगा।

15 मई 1949 ई. को मत्स्य संघ भी वृहत राजस्थान में शामिल हो गया।

अब तक केवल सिरोही ही एक ऐसी रियासत थी, जिसका राजस्थान में विलय नहीं हुआ था। अतः 26 जनवरी 1950 ई. को, जब भारत का पहला गणतंत्र दिवस मनाया जा रहा था, इस समय देलवाड़ा एवं आबू क्षेत्र के अलावा बाकी सिरोही रियासत भी राजस्थान का हिस्सा बन गयी।

भारत सरकार द्वारा गठित राज्य पुनर्गठन कमीशन के कहने पर 1956 ई. में अजमेर–मेरवाड़ा के इलाके को भी राजस्थान मे मिला दिया गया। साथ ही साथ मध्यप्रदेश के सुनेल टप्पा और सिरोही की देलवाड़ा एवं आबू

तहसील को भी राजस्थान का हिस्सा बना दिया गया तथा राजस्थान का सिरोज मध्यप्रदेश में मिला दिया गया।

इस तरह वर्तमान राजस्थान का 01 नवंबर, 1956 ई. को एकीकरण हुआ। किन्तु राजस्थान दिवस वृहत राजस्थान के आधार पर 30 मार्च को ही मनाया जाता है। वर्तमान राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है और इसकी आबादी 2011 की जनगणना के आधार पर 6 करोड़ से भी ज्यादा है।

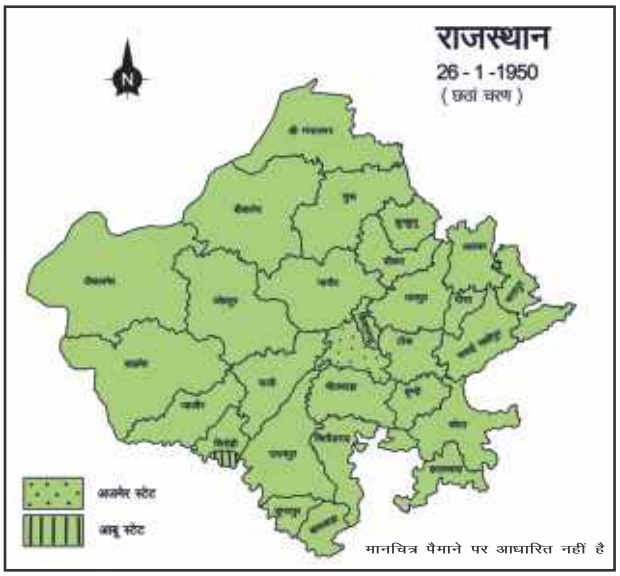

राजस्थान के एकीकरण के चरण एक नजर में

एकीकरण के चरण	राज्य का नाम	गठन की तारीख	विलीन रियासतें	प्र.म./मु. मं.	राजप्रमुख	उद्घाटनकर्ता
प्रथम	मत्स्य संघ	17.03.1948	अलवर,भरतपुर, धौलपुर,करौली	शोभाराम कुमावत	उदयभान सिंह धौलपुर	एन.वी. गाड़गिल
द्वितीय	संयुक्त राजस्थान	25.03.1948	बाँसवाड़ा,कोटा,बूँदी,टोंक, झालावाड़, प्रतापगढ़,शाहपुरा,किशन गढ,डूँगरपुर	गोकुल लाल असावा	भीमसिंह कोटा	एन.वी. गाड़गिल
तृतीय	संयुक्त राजस्थान	18.04.1948	संयुक्त राजस्थान, उदयपुर	माणिक्य लाल वर्मा	भूपालसिंह मेवाड़	जवाहर लाल नेहरु
चतुर्थ	वृहत राजस्थान	30.03.1949	संयुक्त राजस्थान,जयपुर, जोधपुर जैसलमेर, बीकानेर	हीरालाल शास्त्री	मानसिंह जयपुर	सरदार वल्लभ भाई पटेल
पंचम्	वृहत राजस्थान	15.05.1949	वृहत राजस्थान , मत्स्य संघ	–	–	–
षष्ठम्	वृहत राजस्थान	26.01.1950	वृहत राजस्थान (पांचवा चरण), देलवाड़ा एवं आबू क्षेत्र के अलावा सिरोही	–	–	–
सप्तम्	राजस्थान	01.11.1956	राजस्थान, देलवाड़ा आबू क्षेत्र, अजमेर–मेरवाड़ा		–	–

क्या आप को मालूम है कि :–

1. राजपूताना में जोधपुर रियासत सबसे बड़ी थी।
2. राजपूताना में कुल 19 रियासतें, 3 चीफशीप व एक केन्द्र शासित प्रदेश अजमेर मेरवाड़ा शामिल थे।
3. संविधान लागू होने से पूर्व राज्यों के मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री कहा जाता था।

गतिविधि–

राजस्थान के एकीकरण में योगदान देने वाले कुछ प्रमुख व्यक्तियों नाम यहाँ दिये जा रहे है:–

1. सरदार वल्लभ भाई पटेल 2. श्री वी. पी. मेनन 3. श्री जयनारायण व्यास
4. पंडित हीरालाल शास्त्री 5. श्री माणिक्यलाल वर्मा 6. श्री गोकुल भाई भट्ट

खोज कर के बताएँ कि:–

1. ऊपर जिन लोगों के नाम दिए गए हैं, उनका राजस्थान के इतिहास में और क्या योगदान रहा है?
2. ऊपर दिए गए नामों के अलावा और किन लोगों ने राजस्थान के एकीकरण में योगदान दिया है? नाम ढूँढ़कर लाएं और बताएं।

शब्दावली

विस्थापित	–	जिसे अपने स्थान से हटा दिया गया हो अथवा विवश होकर हटना पड़ा हो।
स्वशासन	–	स्वयं का शासन
पुनर्वास	–	पुनः बसाना

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखें–

1. निम्नलिखित में से भारत का पड़ोसी देश नहीं है।

   (अ) पाकिस्तान (ब) इंग्लैण्ड (स) चीन (द) नेपाल ( )

2. निम्नलिखित में से भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे ।

   (अ) डॉ. राधाकृष्ण (ब) भीम राव अम्बेडकर

   (स) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (द) वल्लभ भाई पटेल ( )

3. राज्यों की सीमाएँ तय करने के लिये कौनसा आयोग बनाया गया ?
4. वर्तमान में भारत के नीति आयोग के अध्यक्ष कौन है ?
5. संयुक्त राजस्थान में कौन–कौन सी रियासतें शामिल थी ?
6. सिन्धी विस्थापितों ने समाज के लिये क्या योगदान किया है ?
7. भारत के अपने पड़ोसी राष्ट्रों से संबंधों पर टिप्पणी लिखिए ?
8. भारत के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान बताइए ?
9. स्वतंत्रता के बाद भारत के सम्मुख प्रमुख चुनौतियाँ क्या थी ?
10. स्वतंत्रता के बाद राज्यों के पुनर्गठन की घटनाओं का वर्णन कीजिए ?
11. राजस्थान के एकीकरण के विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए ?
12. देशी रियासतों के भारत विलय में क्या कठिनाइयाँ थी बताइए ?

गतिविधि–

1. अपने आस पास अगर कोई विस्थापित परिवार है, तो उनके विभाजन के बाद के अनुभवों को पूछ कर लिखिए।
2. राजस्थान राज्य के वर्तमान मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची बनाइए।
3. राजनीति, कला, साहित्य या अन्य किसी भी क्षेत्र में ख्याति प्राप्त उन व्यक्तियों के नाम की सूची बनाइए जिनका संबंध पाकिस्तान से विस्थापित होकर आए परिवारों से हो।
4 वर्तमान राजस्थान राज्य का मानचित्र लेकर उसमें वर्तमान जिलों के स्थानों को चिन्हित कीजिए।

अध्याय 24

हमारे गौरव

भारत का इतिहास अत्यधिक गौरवशाली रहा है। इस गौरव को प्राप्त करने के लिए यहाँ के वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, कलाकारों आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनमें से कतिपय प्रेरक महापुरुषों के कार्य की यहाँ जानकारी दी जा रही है।

चन्दबरदाई

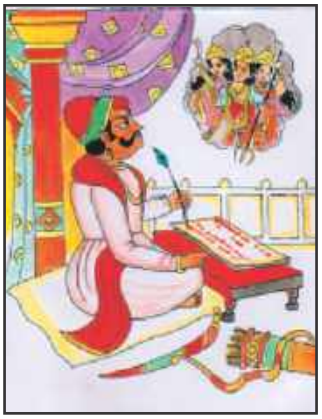

चन्दबरदाई

चन्द बरदाई का जन्म सन् 1148 को लाहोर में हुआ। इनके पिता का नाम राव वैण था। राव वैण अजमेर के चौहानों के पुरोहित थे। इसी से चन्द को अपने पिता के साथ राजकुल के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। बाल्यकाल से ही ये प्रतिभाशाली सिद्ध हुए और शीघ्र ही इन्होंने भाषा, साहित्य, व्याकरण, छन्द, पुराण, ज्योतिष आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया। दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान के न केवल राज्य–कवि घोषित हुए बल्कि उनके सलाहकार व मित्र भी बन गए। चन्दबरदाई केवल कवि ही नहीं थे, अस्त्र–शस्त्र की विधिवत् शिक्षा भी इन्होने प्राप्त की थी और युद्ध के समय वे सदैव सेना के साथ रहकर अपने रण–कौशल का भी परिचय देते थे। 'पृथ्वीराज रासो' चन्दबरदाई की प्रसिद्ध रचना है। 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी का प्रथम महाकाव्य कहलाता है। इस ग्रन्थ से चन्दबरदाई की विद्वता, वीरता, सहृदयता और मित्र भक्ति का परिचय प्रचुर मात्रा में मिलता है।

गतिविधि– पढें व बताएं :

1. चन्दबरदाई के पिता का नाम क्या था?
2. चन्दबरदाई का जन्म कहाँ हुआ?
3. चन्दबरदाई में कवि के अतिरिक्त कौन–कौन से गुण थे?
4. चन्दबरदाई की प्रसिद्ध रचना कौन–सी है?

महान् गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त

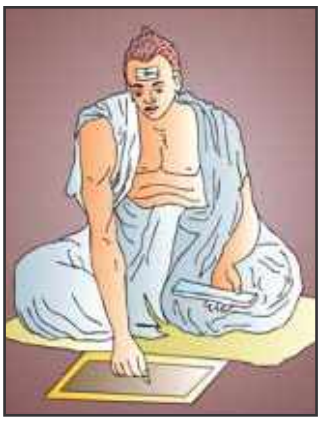

महान् गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त

ब्रह्मगुप्त का जन्म 598 ई. में हुआ था। इनका जन्म स्थान भीनमाल (जालोर) राजस्थान में माना जाता है। ब्रह्मगुप्त गुप्तकाल के प्रमुख खगोल शास्त्री थे। उन्होने तीस वर्ष की आयु में 628 ई. में 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ भारतीय खगोल शास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के अलावा इन्होनें 'खण्डखाद्यकम्' नामक ग्रन्थ की रचना भी की है। इसमें विशेषकर अन्तर्वेशन (interopolation) तथा समतल त्रिकोणमिति एवं गोलीय त्रिकोणमिति दोनों में sine (ज्या) और cosine (कोटिज्या) के नियम उपलब्ध है। ब्रह्मगुप्त के इन ग्रन्थों के अरबी और फारसी भाषा में अनुवाद के

माध्यम से भारत का यह गणित एवं खगोल विज्ञान का ज्ञान अरब तथा बाद में पश्चिम के देशों को प्राप्त हुआ। ब्रह्मगुप्त ने अपने ग्रन्थों में वर्गमूल व घनमूल लिखने की सरल विधियाँ दी है। शून्य के गुणधर्म की व्याख्या भी इन ग्रन्थो में की गई है। ब्रह्मगुप्त का ज्यामिति के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है।

गतिविधि–

आओ जानकारी प्राप्त करें–

1. ब्रह्मगुप्त ने तीस वर्ष की आयु में 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ की रचना की।
2. यह ग्रन्थ भारतीय खगोल शास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ है।
3. इसके अलावा ब्रह्मगुप्त ने 'खण्डखाद्यकम्' नामक ग्रन्थ की भी रचना की।
4. ब्रह्मगुप्त के इन ग्रन्थों का अनुवाद अरबी व फारसी भाषा में हुआ।

भारत का यह गणित एवं खगोल विज्ञान का ज्ञान अरब एवं बाद में पश्चिम देशों को प्राप्त हुआ।

विश्व के प्रथम शल्य चिकित्सक–महर्षि सुश्रुत

सामान्यतः यह भ्रम है कि शल्य क्रिया का प्रारम्भ यूरोप में हुआ। पर हमारे देश में यह प्राचीन काल से ही अत्यन्त विकसित अवस्था में थी। शल्य क्रिया के क्षेत्र में सबसे प्रमुख नाम महर्षि सुश्रुत का है। ये एक कुशल एवं प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक थे। सुश्रुत ही वे प्रथम चिकित्सक थे जिन्होने शल्य क्रिया को एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया। उन्होने इसे परिष्कृत ही नहीं किया बल्कि इसके द्वारा अनेक मनुष्यों को शल्य क्रिया द्वारा स्वास्थ्य लाभ पहुँचाया। सुश्रुत महान् ऋषि विश्वामित्र के वंशज थे। सुश्रुत द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुत संहिता' है। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में 'सुश्रुत संहिता' को आज भी प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। प्लास्टिक सर्जरी को आजकल चिकित्सा विज्ञान की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। यद्यपि अमेरिका के विद्वान् इसका श्रेय लेते हैं, किन्तु सुश्रुत ने

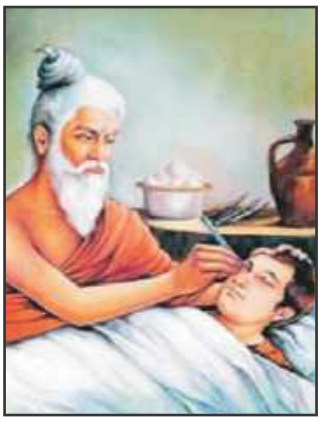

महर्षि सुश्रुत

सुश्रुत द्वारा वर्णित शल्य चिकित्सा के कुछ उपकरण तथा यंत्र

अपने इस ग्रन्थ में प्लास्टिक सर्जरी का उल्लेख सैकड़ों साल पहले ही कर दिया था। सुश्रुत की इस पद्धति का अनुसरण यूरोप ने किया। आज यह विश्वभर में प्रचलित हो गई है। यह भारत की विश्व को बड़ी देन है।

शल्य चिकित्सा के लिए सुश्रुत ने सौ से अधिक औजारों तथा यन्त्रों का आविष्कार किया। इनमें से अधिकांश यन्त्रों का प्रयोग आज भी किया जाता है।

गतिविधि–

आओ उत्तर खोजें–

1. शल्य क्रिया के क्षेत्र में सबसे प्रमुख नाम किसका है?
2. शल्य क्रिया के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय ग्रन्थ का नाम बताइये?
3. सुश्रुत संहिता ग्रन्थ किसके द्वारा लिखा गया है?
4. सुश्रुत ने ऐसी कौनसी वस्तुओं का आविष्कार किया जिनका प्रयोग आज भी हो रहा है?

महान् गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन्

महान् गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन् का जन्म 22 दिसम्बर सन् 1887 को तमिलनाडू के इरोड नगर में हुआ। इनका पैतृक स्थान तंजोर जिले में कुम्बकोणम् हैं। इनके पिता का नाम श्रीनिवास आयंगर था। इनकी माता का नाम कोमलताम्मल था। रामानुजन की माँ धार्मिक प्रवृत्ति की थी। प्रारम्भ से ही रामानुजन् जिज्ञासुवृत्ति एवं कुशाग्र बुद्धि के थे। इनकी गणित में विशेष रूचि थी। हाई स्कूल तक वे अपनी कक्षा में सदैव प्रथम आते थे। हाई स्कूल की परीक्षा सन् 1904 ई. में उत्तीर्ण की और अच्छा स्थान प्राप्त करने पर उन्हे छात्रवृति मिली।16 जनवरी 1913 ई. को रामानुजन् ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध गणितज्ञ प्रोफेसर जी.एच. हार्डी को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होने लगभग 120 प्रमेय भी भेजे। रामानुजन् की प्रतिभा को देखकर प्रो. हार्डी ने उन्हे इंगलैंड बुला लिया। उनके बुलावे पर 14 अप्रेल 1914 ई. को रामानुजन् लन्दन पहुंचे। इंगलैंड में उन्होने प्रो. हार्डी के साथ अनुसंधान कार्य किया। केवल एक वर्ष में (1915 ई. में) रामानुजन् और प्रो. हार्डी ने सम्मिलित रूप से 9 शोध प्रकाशित किए । रामानुजन् को उनके शोध–पत्र के आधार पर बिना परीक्षा दिए मार्च 1916 ई. में स्नातक उपाधि प्रदान कर दी। 27 मार्च 1919 ई. को वे इंगलैंड से भारत पहुँचे तथा 26 अप्रेल 1920 ई. को 33 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। वे इतने मितव्ययी थे कि गणितीय समस्याओं का हल करने के लिए स्लेट का प्रयोग करते थे और अंतिम परिणाम अपनी नोट बुक में लिखते थे। श्री रामानुजन् भारतीय सभ्यता व संस्कृति के सच्चे पुजारी थे। इंगलैंड जाते समय उन्होने अपने पिताजी को वचन दिया था कि मै इंगलैंड में भी हिन्दुस्तानी रहूँगा और ऐसा कोई कार्य नहीं करूँगा, जिससे भारतीयता को चोट पहुँचे। विदेश में शोध कार्य करते हुए भी अपना निजी कार्य यथा भोजन बनाना आदि स्वयं अपने हाथ से करते थे। इतना होते हुए भी वे अभावों में ही

श्रीनिवास रामानुजन्

बताइएं कब–क्या हुआ ?

22 दिसम्बर 1887 ई.
16 जनवरी 1913 ई.
14 अप्रेल 1914. ई.
27 मार्च 1919 ई.
20 अप्रेल 1920 ई.

रहे किन्तु अभावों की परवाह न करते हुए भी अध्ययन, अनुसंधान व लेखन का कार्य जीवन के अंतिम क्षण तक करते रहे।

गतिविधि–

भारत के अन्य वैज्ञानिक कौन–कौन रहे है? अपने गुरूजी से जानकारी प्राप्त करें और सूची बनाएँ।

महाकवि माघ

महाकवि माघ

संस्कृत के महाकवि माघ का जन्म श्रीमालनगर (भीनमाल, राजस्थान) में हुआ था। माघ का समय सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं आठवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में माना जाता है। महाकवि माघ बड़े उदार, सहृदय एवं दानी व्यक्ति थे। उनका विवाह एक कुलीन घर की कन्या माल्हण देवी के साथ हुआ था। माघ ने 'शिशुपालवधम्' नामक काव्य की रचना की। माघ के कुछ समालोचक मानते है कि यदि भगवान् कृष्ण की आराधना करनी हो तो माघ–काव्य का अध्ययन करें। संभवतः श्री कृष्ण की आराधना करने के लिये ही माघ ने 'शिशुपालवधम्' की रचना की थी। इनके पिता का नाम दत्तक था। माघ दानवीर थे। अत्यन्त दानशीलता के कारण जीवन के अंतिम दिनों में वे दरिद्र भी हो गए थे। उनकी पत्नी भी उनके समान दानशील थी। कहते हैं, विपिन्न अवस्था में एक ब्राह्मण अपनी पुत्री के विवाह के लिए याचक बनकर आया। रात्रि का प्रथम प्रहर बीत रहा था माघ अपनी सोई पत्नी के कक्ष में गए, उनके हाथ का एक कंगन उतार कर लाए और ब्राह्मण को दे दिया। इतने में उनकी पत्नी जग गई और दूसरे हाथ का भी कंगन लाकर याचक को दे दिया और कहा कि तुम्हारी पुत्री को दोनों हाथों में कंगन पहनने चाहिए। यह दृश्य देखकर – महाकवि माघ की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

एक दन्त कथा

माघ जब रचना करते थे तब अपना ही रचित श्लोक अथवा पद उन्हें दूसरे दिन उपयुक्त नहीं लगता था, तो वे उसे काट देते थे। जिससे कोई भी रचना पूर्ण नहीं होती थी। एक रात उनकी पत्नी के स्वप्न में विद्या की देवी सरस्वती प्रकट हुई। माघ की पत्नी ने देखा कि विद्या की देवी के शरीर पर घाव लगे हैं और उससे रक्त बह रहा है। माघ–पत्नी माल्हण ने जब पूछा कि माँ ! आपकी यह दशा किसने की ? तो माँ ने कहा – 'माघ प्रतिदिन पूर्व रचित पद्यों को दूसरे दिन काटता जायेगा तो ये घाव सदा रिसते ही रहेंगे।' माघ की पत्नी ने उपाय पूछा तो माँ ने कहा कि इसे जमीकन्द की सब्जियाँ खिलाओ। माघ पत्नी ने एक दिन माघ को जमीकन्द की सब्जी परोस दी। माघ ने उसे खा लिया। बाद में वे अपनी एक मात्र कृति 'शिशुपालवधम्' को पूर्ण कर सके।

यद्यपि इस दन्त कथा का कोई प्रामाणिक आधार तो नहीं है, किन्तु यह अनुमान लगाया जा सकता है कि काव्य–लेखन में उनकी पत्नी का भी अप्रत्यक्ष रूप से योगदान रहा है।

माध ने साहित्य, व्याकरण शास्त्र, नीतिशास्त्र, पुराण, आर्युवेद, न्याय, ज्योतिष, प्राकृतिक–सौन्दर्य, ग्राम्य–जीवन, पशु–पक्षी जीवन, सौन्दर्य, काव्य, पदलालित्य एवं राजनीति शास्त्र के सिद्धान्तों का समावेश एक ही ग्रन्थ 'शिशुपालवध' में कर दिया, जिससे अन्य ग्रन्थ रचने की आवश्यकता ही नहीं रही।

गतिविधि–

पढें, जानें एवं बताएँ–

1. माघ के माता–पिता का नाम क्या था?
2. माघ द्वारा लिखी गई काव्य रचना कौन सी है ?

सूत्रधार मण्डन

सूत्रधार मण्डन

सूत्रधार मण्डन ने अपने ग्रन्थों से भारतीय स्थापत्य शास्त्र परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में बड़ा योगदान दिया है। मण्डन उस काल में हुए जबकि मन्दिर, मूर्ति और चित्रकला आदि संकट में थे। ऐसे में मण्डन ने अपने ग्रन्थों से स्थापत्य शास्त्रियों के लिए नियम देकर महल, घर, निवास, जलाशय, मन्दिर, प्रतिमा आदि के निर्माण में सहयोग किया। भारतीय वास्तुशास्त्र में मण्डन का योगदान सर्वाधिक माना जाता है। कुम्भलगढ जैसा अभेद्य दुर्ग मण्डन के मार्गदर्शन और योजना के अनुसार ही बना है। उसकी कुम्भलगढ में वट वृक्ष के नीचे प्रतिमा–गृह बनाने की योजना थी, जो पूरी नहीं हुई। किन्तु वे प्रतिमाएँ अभी उदयपुर के राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित है।

भारतीय वास्तुशास्त्र के सैद्धान्तिक और व्याहारिक पक्षों के ख्यातनाम् जानकारों में सूत्रधार मण्डन का नाम महत्त्वपूर्ण है। वास्तुशास्त्र में कला पक्ष, गणित व ज्योतिष के क्षेत्र में उसके मत विगत साढे पाँच सौ सालों से हमारे यहाँ माने जाते रहे हैं।

देवप्रासाद, वापी, जलाशय, प्रतिमा सम्बन्धी स्थापत्य कार्य का उसे काफी अनुभव था। मण्डन मेवाड़ के महाराणा कुम्भा का प्रिय वास्तुशिल्पी रहा है।

मण्डन गुजरात के सोमपुरा शिल्पज्ञ कुल से सम्बन्धित था। उसके परिजन सम्भवतः सोमनाथ, जिसे पुराणों में सोमपुर कहा गया है, से सम्बन्धित थे। मण्डन के पिता का नाम क्षेत्रार्क (खेता) था। मण्डन के लिखे गए ग्रन्थों में देवतामूर्ति प्रकरण, प्रासादमण्डनम्, वास्तुराजवल्लभं वास्तुशास्त्रम्, वास्तुमण्डनम्, वास्तुसार, वास्तुमंजरी प्रमुख है।

महर्षि पाराशर

अन्नं हि धान्यासंजातं धान्यं कृष्या बिना न च।
तस्मात सर्व परित्यज्य कृषि यत्नेन कारयेत।।

अर्थात् अन्न धान्य (फसल) से उत्पन्न होता है और धान्य बिना कृषि के नहीं होता। इस कारण सब कुछ छोड़कर प्रयत्नपूर्वक कृषि कार्य करना चाहिए।

महर्षि पाराशर

प्रमुख रचनाकार महर्षि पाराशर का जन्म स्थल वर्तमान पुष्कर (अजमेर) था। इन्होंने 'कृषि पाराशर' नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में गौ–धन पूजा का प्राचीन सन्दर्भ, दीपावली के बाद पड़वा को करने का वर्णन है।

महर्षि पाराशर ने कृषि को कितना ऊँचा स्थान दिया है, उक्त श्लोक से ही स्पष्ट हो रहा है। वस्तुतः मनुष्य का जीवन अन्न में ही है और उसका उत्पादन कृषि के अतिरिक्त किसी अन्य साधन द्वारा सम्भव नहीं है। भारत चिरकाल से कृषि प्रधान देश रहा है। इस कारण भारतीय ऋषियों ने कृषि विषयक कई बातें कही और लिखी है। विभिन्न शास्त्रों में पाराशर ऋषि को 'कृषिशास्त्र' के प्रवर्तक के रुप में स्मरण किया गया है।

'कृषि पाराशर' ग्रन्थ में पाराशर ऋषि ने वर्षा सम्बन्धी भविष्यवाणी की है, जिनका आज भी कृषक प्रयोग करते हैं। इस ग्रन्थ का दसवीं सदी में पुनर्लेखन किया गया। यह ग्रन्थ कृषि पचांग का कार्य करता है। कृषि कार्य कब शुरु करना चाहिए ? कौनसी फसल कब खेत में उगाई जाए ? खेती के काम में आने वाले पशुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए ?अतिवृष्टि–अनावृष्टि की जानकारी, गौशाला तथा उसके रख–रखाव की जानकारी के साथ ही पशु–पक्षियों के व्यवहार, हवा की दिशा आदि से मौसम के पूर्वानुमान के बारे में इस ग्रन्थ में बताया गया है।

कृषि पाराशर के विषय

यह भी जानें

1. कौनसी फसल कब उगाई जाए ?
2. खेती के काम आने वाले पशुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाए ?
3. गौशाला व उसके रख–रखाव कैसे किया जाय ?
4. मौसम का पूर्वानुमान कैसे लगाया जाए ?
5. कृषि कार्य कब प्रारम्भ करना चाहिए ?

चक्रपाणि मिश्र

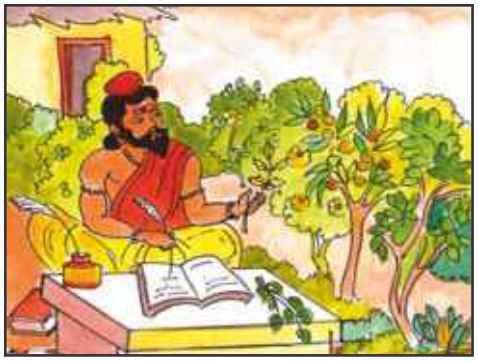
चक्रपाणि मिश्र

महाराणा प्रताप के दरबारी पण्डित चक्रपाणि मिश्र ने चार ग्रन्थों की रचना की। यह थे– विश्ववल्लभ, मूहूर्तमाला, व्यवहारादर्श और राज्याभिषेक पद्धति। 'विश्ववल्लभ' की रचना में पण्डित चक्रपाणि मिश्र ने जिस स्रोत–सामग्री का सहारा लिया है, उसमें वराहमिहिर कृत 'वृहत्संहिता' मुख्य है। चक्रपाणि मिश्र वराहमिहिर से बड़ा प्रभावित था।

अपनी द्वितीय रचना 'राज्याभिषेक पद्धति' में उसने वराहमिहिर की सामग्री का उपयोग किया है। चक्रपाणि मिश्र ने

भूमिगत जलज्ञान बताने वाले 'हरवा' का उल्लेख किया है। गाँवों में आज भी 'हरवों' की बड़ी पूछ है। 'हरवा' विभिन्न संकेतों के आधार पर पानी की उपलब्धता की दिशा और गहराई बताता है।

चक्रपाणि, उग्र मिश्र का पुत्र था। चित्तौड़ की तलहटी में बसा गाँव पीपली इस परिवार को मिला हुआ था। चक्रपाणि ने विष्णु धर्मोत्तर पुराण से लेकर वराहमिहिर की वृहत्संहिता में एकत्रित सामग्री का उपयोग करते हुए 'विश्ववल्लभ' की रचना की। इस कृति में रोगोपचार विधियों में पेड़ की सिंचाई, पौध स्नान (फव्वारा), धूपन, छिड़काव–बुरकाव और मंत्र–पाठ मुख्य है। इनका उपयोग आज भीकिया जा रहा है। चक्रपाणि ने जल संसाधनों के विकास पर पर्याप्त बल देने को कहा है। चक्रपाणि को विभिन्न पेड़ों की प्रकृति, उनके औषधिय गुण–धर्मों की जानकारी थी। वह अच्छा वनस्पतिशास्त्री तो था ही, वास्तुविज्ञान के अन्तर्गत उसे जलाशय तथा जलस्रोतों के निर्माण का विशद् ज्ञान भी था।

महाराणा प्रताप के दरबारी पण्डित चक्रपाणि मिश्र ने 'राज्याभिषेक पद्धति' में राजवल्लभ के श्लोकों को उद्धत किया और 'विश्ववल्लभ–वृक्षायुर्वेद' में जलाशय वर्णन के सन्दर्भ में राजवल्लभ के श्लोकों को विस्तार दिया। शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के सृजनकर्ताओं में चक्रपाणि मिश्र का स्थान ऋषि तुल्य है।

शारंगधर

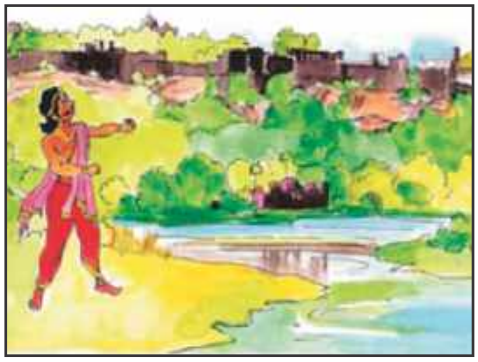
शारंगधर

शारंगधर हम्मीर (रणथम्भौर का शासक) के गुरू राघव देव का पौत्र व दामोदर का पुत्र था इसने हम्मीर रासो तथा शारंगधर संहिता ग्रन्थों की रचना की थी। शारंगधर का योगदान उसके द्वारा तैयार संगीत पद्धति से है। इसको उसके नाम पर ही सारंगधर पद्धति कहा जाता है। इसमें संगीत के लुप्त ग्रन्थ 'गान्धर्वशास्त्र' का संक्षिप्त पाठ सुरक्षित है, जो मध्यकालीन भारतीय संगीत कला को जानने के लिए मुख्य आधार है। इसी पद्धति में 'वृक्षायुर्वेद ग्रन्थ' का संक्षिप्त रुप है। जिनके आधार पर अनेक राजाओं और प्रजाजनों ने वाटिकाओं का विकास कर पर्यावरण की सुरक्षा में अपना योगदान किया।

शारंगधर की पद्धति योग जैसे विषय को भी समाहित किए है। अष्टांग योग का वैज्ञानिक स्वरुप इस ग्रन्थ में स्वास्थ्य और निरापद जीवन के साथ जोड़ा गया है। वैज्ञानिक तरीके से ज्ञान के उपयोग को प्रस्तुत करने के दृष्टिकोण शारंगधर का योगदान उसकी अनेक सूक्तियों के लिए है। इसीलिए अनेक विदेशी विद्वानों ने शारंगधर के योगदान की प्रशंसा की है।

गतिविधि–पढें व बताएँ:

1. सूत्रधार मण्डन का योगदान सबसे अधिक किस क्षेत्र में माना जाता है ?
2. वास्तुशास्त्र का मुख्य विषय क्या होता है ?
3. महर्षि पराशर ने किस ग्रन्थ की रचना की ?
4. चक्रपाणि मिश्र ने कौन–कौन से ग्रन्थों की रचना की ?
5. 'वृक्षायुर्वेद' ग्रन्थ की रचना किसने की ?

शब्दावली

परिष्कृत	–	उन्नत
वापी	–	बावड़ी
शिल्पज्ञ	–	शिल्प कला का ज्ञाता

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक का सही उत्तर कोष्ठक में लिखें–

1. 'वृक्षायुर्वेद' ग्रन्थ की रचना की थी –
(अ) सूत्रधार मण्डन ने (ब) चक्रपाणि मिश्र ने
(स) महर्षि सुश्रुत ने (द) शारंगधर ने ( )

2. निम्नलिखित को सुम्मेलित किजिए:–

	लेखक	नाम पुस्तक
(1)	चन्दबरदाई	शिशुपालवधम्
(2)	ब्रह्मगुप्त	वास्तुमंजरी
(3)	महर्षि सुश्रुत	कृषि पराशर
(4)	महाकवि माघ	विश्ववल्लभ
(5)	सूत्रधार मण्डन	ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त
(6)	महर्षि पराशर	सुश्रुत संहिता
(7)	चक्रपाणि मिश्र	पृथ्वीराज रासो

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:–
(1) ..... का जन्म भीनमाल में माना जाता है।
(2) भारत का यह गणित तथा खगोल विज्ञान का ज्ञान अरब तथा बाद में ..... को प्राप्त हुआ।
(3) ..... ही वे प्रथम चिकित्सक माने जाते हैं, जिन्होंने शल्य चिकित्सा को एक व्यवस्थित स्वरुप प्रदान किया।
(4) ..... को उनके शोधपत्रों के आधार पर बिना परीक्षा दिये स्नातक की उपाधि प्रदान की गई।
(5) ..... अत्यन्त दानशीलता के कारण दरिद्र हो गए।
(6) महाराणा प्रताप के दरबारी पण्डित श्री ..... थे।
(7) महर्षि ..... का जन्म स्थल पुष्कर था।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

1. पृथ्वीराज चौहान के राज कवि का नाम बताइये ?
2. चिकित्सा के क्षेत्र में प्लास्टिक सर्जरी का प्रयोग सबसे पहले किसने किया ?
3. ब्रह्मगुप्त का गणित व खगोल के क्षेत्र में क्या योगदान रहा ?
4. प्रसिद्ध गणितज्ञ रामानुजन के बारे में आप क्या जानते हैं ?
5. सूत्रधार मण्डन ने कौन–कौन से शास्त्रों की रचना की ?
6. कृषि के क्षेत्र में महर्षि पराशर का क्या योगदान रहा है ?

आओ करके देखें :–

1. एक पन्ने पर महापुरुषों के चित्र बनायें अथवा चित्रों की कटिंग चिपकायें एवं चित्र के सामने उनके योगदान का वर्णन करें।
2. महर्षि सुश्रुत द्वारा वर्णित उपकरण के चित्र यहाँ दिये गये हैं। अन्य उपकरणों के चित्र खोजकर उनके चित्र अपनी नोट बुक में बनायें।
3. कला, साहित्य, संगीत, विज्ञान, ज्योतिष आदि के क्षेत्र में योगदान देने वाले अन्य महापुरूषों की जानकारी अपने शिक्षकों से प्राप्त करें। इसमें पुस्तकालय का भी उपयोग किया जाना चाहिए।